



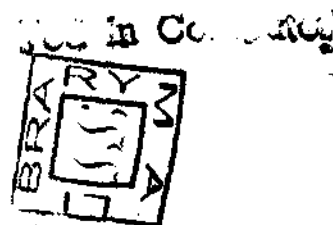
छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की सामाजिक पृष्ठभूमि

(अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की एम० फिल्० उपाधि के लिए
प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध)

प्रस्तुतकर्ता :
उमेशकिशोर सिंह
एम० ए०

निर्देशक :
डा० गिरधारीलाल शास्त्री
एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत) पी-एच० डी०
रीडर
हिन्दी विभाग

7 OCT 1985



DS740

CHECKED-2002

प्रस्तावना

साहित्यकार समाज में रहता है। इसलिए साहित्य सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। लेकिन साहित्यकार इतिहासकार नहीं कि वह प्रत्येक घटना का प्रमाण प्रस्तुत करे, बल्कि वह समाज की घटनाओं से प्रेरणा लेकर साहित्य का निर्माण करता है। इसलिए साहित्यकार की अपनी सीमा होती है।

काव्य के अध्ययन में उपर्युक्त तथ्य को भुलाकर केवल शास्त्रीय प्रणालियों के बाधों पर उसका मुख्यत्व करना साहित्य के वास्तविक सत्य को भुला देना है। अतः आधुनिक काल की साहित्यिक समीक्षा रस, अलंकार एवं ध्वनि आदि शास्त्रीय परम्परा के अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि पर भी दृष्टि डालनी चाहिए, जिससे आधुनिक युग के कवियों एवं उनके साहित्य के साथ पूर्ण व्यापक किया जा सके।

हायावादीवर हिन्दी काव्य की सामाजिक पृष्ठभूमि नामक सद्यः प्रबन्ध में हायावाद के बाद के कवियों की रचनाओं का मुख्यत्व किया गया है। हायावाद के बाद साहित्य एवं समाज में व्याप्त परिवर्तन बाये, जिससे तत्कालीन कवि प्रभावित हुए। हायावाद के बाद काव्य के क्षेत्र में काफी आन्दोलन हुए, जिससे साहित्य भी प्रभावित हुआ।

प्रस्तुत सद्यः प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में हायावादीवर काव्य की सामाजिक, दार्शनिक एवं राजनीतिक

परिस्थितियों का विवेचन किया गया है, जिससे उनके परिप्रेक्ष्य में विवेच्य काव्य की समीक्षा सही ढंग से प्रस्तुत की जा सके ।

द्वितीय अध्याय में प्रगतिवादी काव्य का विवेचन प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन समाज की प्रमुख घटनाओं में स्त्री श्रान्ति, द्वितीय विश्व युद्ध जैसी अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के साथ साथ भारतीय राजनीति के क्षेत्र में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं में स्वतन्त्रता के प्रयास के साथ साथ श्रान्ति और विद्रोह का चित्रण हुआ है। प्रगतिवादी काव्य में समाज की आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के साथ साथ नारी के विभिन्न स्वरूपों एवं शोषण की अभिव्यक्ति भी देखी जा सकती है। इस युग की प्रमुख केतना मार्क्सवादी है, इसके अनुरूप ही समाज का विश्लेषण काव्य में प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्याय में प्रगतिवाद को नये ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रगतिवादी काव्य में साम्यवादी केतना को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है।

तीसरे अध्याय में प्रयोगवादी काव्य में अभिव्यक्त समाज का सर्वोच्च चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्रयोगवादी काव्य को व्यक्तिवादी काव्य कहकर समाज की उपेक्षा कर दी जाती है। लेकिन प्रस्तुत सधु- प्रबन्ध में तत्कालीन समाज की महत्वपूर्ण घटनाओं में देश का विभाजन, शरणार्थी समस्या और गांधी हत्याकाण्ड जैसी महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं के साथ आधुनिक समाज के वैयक्तिक जीवन में उत्पन्न कृण्टा , निराशा, संक्रास आदि के साथ महानगरों में रहने वाले मध्यवर्गीय समाज के व्यक्तियों का चित्रण है।

चौथे अध्याय में 'नई कविता में चित्रित समाज' में स्वतन्त्रता के बाद भारतीय समाज में होने वाले सामाजिक परिवर्तनों का चित्रण है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सैनिक गुट बन्दी का व्युत्पन्न हुआ, जिससे स्वतन्त्रता के लिए संकट उत्पन्न हो गया। नई कविता में युद्ध और शान्ति, विज्ञान और युद्ध जैसे विषय पर नई कविता के कवियों ने विचार किया है। नई कविता में युद्ध का विरोध, मानव के अस्तित्व बोध पर भी विचार किया गया है। नई कविता के कवियों ने दाण के महत्व, अर्थ की अभिव्यक्ति पर भी ध्यान दिया है।

भारतीय समाज में स्वतन्त्रता के बाद राजनीतिक परिवर्तन, वार्षिक परिवर्तनों आदि की अभिव्यक्ति नई कविता में हुई है। नई कविता का समाज स्वतन्त्रता के बाद का समाज है। इसलिए इसमें भ्रष्टाचार, बेकारी, नेताओं पर व्यंग्य किया गया है।

'नवगीत में चित्रित समाज' नामक पंचम अध्याय में नवगीत से सम्बद्ध सामाजिक परिस्थितियों पर विचार करते हुए इस युग के काव्य से सम्बन्ध स्थापित किया है। प्रस्तुत संदर्भ में नवगीत और नई कविता को पृथक् पृथक् रूप से रेखांकित करने का प्रयत्न किया गया है। नवगीत की प्रतुभियों को इस युग की परिस्थितियों एवं उन पर पड़े प्रभावों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकित किया गया है।

अन्त में उपर्युक्त विश्लेषणों के आधार पर स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस संदर्भ में धेरी यह धारणा रही है कि भिन्न भिन्न काव्यधाराओं, काव्यान्दोलनों पर

तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों का ही प्रभाव होता है और रचनाकार पर भी वस्तुगत स्थितियों का प्रभाव अधिक होता है। सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ ही साथ काव्य की प्र^{त्}थितियों में भी मूलभूत परिवर्तन आते हैं। भेरा यह निष्कर्ष हायावादीचर काव्य के संदर्भ में भी सही उतरता है।

अतः हायावादीचर काव्य की सामाजिक पृष्ठभूमि के विवेचन की यही उपयोगिता है और इसी आधार पर इस युग के काव्य की समुचित रूप से समीक्षा भी की जा सकती है।

इस दिशा में जब तक कुछ हट पट कार्य हुए हैं, लेकिन उनके अध्ययन से यह स्पष्ट है कि उनमें सामाजिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि को गौण करके परखा गया है। अधिकतर शोध प्रबन्धों में सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों की पूर्ण अवहेलना करके समीक्षा प्रस्तुत की गई। अतः इन प्रबन्धों में समाज एवं इतिहास की पूर्ण उपेक्षा होने के कारण आधुनिक युग की सही स्थिति का आभास नहीं होता। इसलिए मैंने वस्तुगत परिस्थितियों के संदर्भ में आधुनिक कवियों की प्रसृत रचनाओं का अध्ययन करने का प्रयास किया है। इस दृष्टि से यह लघु प्रबन्ध पूर्णतया मौलिक है।

इस लघु प्रबन्ध को प्रस्तुत रूप देने का श्रेय डा० गिरिधारी लाल शास्त्री एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष को ही है जिन्होंने मेरी रचना को पहचाना। प्रस्तुत लघु प्रबन्ध में लीक से हटकर नये ढंग से विचार किया गया है तथा पुराने और नए कवियों - बालीचर्की, पत्र-पत्रिकाओं और दुर्लभ पुस्तकों की सामग्री का उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत लघु प्रबन्ध में गुरुजी , विद्वानों एवं मित्रों का व पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ । मैं डा० रमेश कुन्तल मेघ, विभागाध्यक्ष, गुरु नानक विश्वविद्यालय, अमृतसर , डा० कैसरी कुमार, विभागाध्यक्ष पटना विश्वविद्यालय का आभारी हूँ जिन्होंने बहुमुखी सुझावों द्वारा मुझे सहायता दी ।

मैं डा० कुँवर पाल सिंह, रीठर, हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, डा० कुदसैन शर्मा नीहार, डा० अजय सिंह, डा० रामेश्वर दयाल, डा० गोपाल कृष्ण शर्मा, श्री मीनर भादानी आदि का व आभारी हूँ जिनका सक्रिय सहयोग सदैव स्मरणीय रहेगा ।

मैं अपने निर्देशक डा० गिरिधारी लाल शास्त्री जी का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने मुझको विषय के स्पष्टीकरण से लेकर लघु प्रबन्ध के पूर्ण होने तक कुशल निर्देशन दिया । डा० शास्त्री जी की प्रेरणा, लगन और परिश्रम से ही यह कार्य सम्पन्न हो सका । मैं उनके प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूँ।

मैं मौलाना आजाद पुस्तकालय, अलीगढ़ मुस्लिम वि० वि० , मालवीय पुस्तकालय, अलीगढ़, सिन्हा पुस्तकालय पटना, राष्ट्रमाणा परिषद्, पटना के अधिकारियों का भी आभारी हूँ जिन्होंने मेरे कार्य में सहयोग दिया ।

उमेश किशोर सिंह

हायाबादीपर हिन्दी काव्य की सामाजिक पृष्ठभूमि

पुष्पिका

अध्याय १ विषय प्रसंग

१-४०

- (क) राजनीतिक परिस्थितियाँ
- (ख) सामाजिक एवं वार्षिक परिस्थितियाँ
- (ग) साहित्यिक विवेक (सामान्य)

अध्याय २

४१-१०४

हायाबादी काव्य में चित्रित समाज : पृष्ठभूमि

- (क) राजनीतिक (राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय)
परिस्थितियों की अभिव्यक्ति

१- स्त्री श्रान्ति

२- द्वितीय विश्व युद्ध की अभिव्यक्ति

भारत की स्वतन्त्रता का प्रयास

(१) विद्रोही एवं बन्दी जीवन की अभिव्यक्ति

(२) सामाजिक श्रान्ति

(३) नाविक विद्रोह

- (ख) सामाजिक एवं वार्षिक परिस्थितियों का चित्रण

(१) ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति

अध्याय ४

१३० - १४०

नई कविता में चित्रित समाज

(क) राजनीतिक (अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय)

परिस्थितियों की अभिव्यक्ति

१- स्वातन्त्र्योपर भारतीय समाज : उपनिवेशवाद का विरोध

२- द्वितीय महायुद्ध के बाद सैनिक प्रभाव : अन्तर्राष्ट्रीय भावना

३- भारतीय संविधान पर व्यंग्य , नई कविता के समाज पर चीन और पाकिस्तान युद्ध की अभिव्यक्ति

(ख) सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ

१- साम्प्रदायिकता, स्वातन्त्र्योपर भारत की आर्थिक स्थितियाँ की अभिव्यक्ति

२- नयी कविता पर विज्ञान का प्रभाव

३- नयी कविता में विज्ञान और युद्ध की अभिव्यक्ति

४- नयी कविता और अस्तित्ववाद

अध्याय ५

१६० - १८३

नवगीत में चित्रित समाज

(क) नवगीत में व्यक्तिवादी चेतना

(ख) सामाजिक चेतना

उपसंहार

१८४ - १८८

संदर्भ ग्रन्थ

परिशिष्ट

- २- सहरी जीवन की अभिव्यक्ति
- ३- प्रातिवादी काव्य में शोचण का स्वरूप
- ४- प्रातिवादीकाव्य में धार्मिक ऊँ रुढ़ियों का विरोध
- ५- प्रातिवादी काव्य में वर्ग भेदना एवं संघर्ष की अभिव्यक्ति
- ६- प्रातिवादी काव्य में नारी का स्वरूप
- ७- प्रातिवादी काव्य में नारी का धार्मिक शोचण
(देशीय जीवन की अभिव्यक्ति)

अध्याय ३

१०५ - १२ ✓

प्रयोगवादी काव्य में चित्रित समाज

(क) राजनीतिक (अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय) परिस्थितियों की अभिव्यक्ति

- १- देश का विभाजन
- २- तरुणार्थी समस्या
- ३- गांधी हत्या काण्ड
- ४- द्वितीय महायुद्ध का प्रभाव

(ख) प्रयोगवादी काव्य में व्यक्ति और समाज की अभिव्यक्ति

- १- प्रयोगवादी काव्य में चित्रित व्यक्तिवाद
- २- प्रयोगवादी काव्य में अनास्था एवं संशय की अभिव्यक्ति
- ३- प्रयोगवादी काव्य में चित्रित अस्तित्व बोध
- ४- प्रयोगवादी काव्य में चित्रित मध्य वर्ग
- ५- प्रयोगवादी काव्य में चित्रित सहरी समाज

प्रथम अध्याय

बायीबायीचर हिन्दी काव्य की सामाजिक पृष्ठभूमि

राजनीतिक परिस्थितियाँ

भारत के सामाजिक जीवन में हुए शान्तिकारी बान्धोतनों ने भारतीय राजनीति को भी प्रभावित किया है। भारतीय स्वतन्त्रता एवं गांधी के नेतृत्व में होने वाले बान्धोतन भारत की राजनीति के संघर्ष की कहानी है, जिसका प्रभाव तत्कालीन साहित्य और समकाल पर पड़ा है।

सन् १९३६ से १९४७ का युग भारतीय राजनीतिक संघर्ष का काल है। देश में ब्रिटिश राज्य के सिक्का स्वदेशी शासन स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा था। महात्मा गांधी और कांग्रेस के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध कई सत्याग्रह और अहिंसक बान्धोतन किये गये परन्तु सफलता नहीं मिल पा रही थी। अतः जनता में निराशा और चोप की भावना व्याप्त थी। इस समय कई दल भारत की स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न कर रहे थे।

जी राहुल सांकृत्यायन के अनुसार इस समय तीन प्रकार के वर्ग थे, " एक तो सफल वैशि पुराने ढर्रे के कांग्रेसी नेता थे जिनका काम था सरकार से प्रार्थना करना और स्वतन्त्रता की पिछा मारना। इस वर्ग के नेता किसी प्रकार का नीतिम उठाने के लिए तैयार नहीं थे। दूसरी

वीर कुछ नौकान थे, जो कम वीर हिस्तीस से दो बार सत्कारी नौकरी को मार कर हिन्दुस्तान काजाद कराना चाहते थे। इस तरह के नेता क्रान्तिकारी कहलाते थे। तीसरे वर्ग इन लोगों का जो केवल ब्रिटिश सरकार के विरोध में भाषण देते थे और केल जाकर नेता बन जाते थे।^१ "

सन् १९३६ में ही कांग्रेस में वैचारिक स्तर पर दो दल बन गये, जिन्हें नरम दल और गरम दल का नाम दिया गया। इन दोनों दलों के रास्ते और सिद्धान्त भी भिन्न थे। नरम दल का नेतृत्व महात्मा गांधी के हाथ में रहा। नरम दल का सिद्धान्त अब भी सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह ही था। गरम दल का सिद्धान्त क्रान्तिकारी हो गया, उनकी दृष्टि में अहिंसा और सत्याग्रह से स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती थी। अतः गरम दल के नेताओं ने हथियार उठाकर क्रान्ति करने एवं अपनी सेनाओं का गठन करके आजादी प्राप्त करना ही अपना उद्देश्य बनाया। इस दल के नेताओं में सुभाषचन्द्र बोस, रास बिहारी बोस आदि क्रान्तिकारी व्यक्ति थे।

ये दोनों ही दल भारत की स्वतन्त्रता के लिए प्रयास कर रहे थे। भारतीय जनता पर अब भी गांधीवादीयों का अधिक प्रभाव था। अतः भारत की जनता और कांग्रेस अब भी अहिंसा, सत्याग्रह और अ-आन्दोलनों के माध्यम से देश भर में राजनीतिक गतिविधि जारी

१- राहुल सकित्याका- भागी कहीं दुनिया की बदली - पृ० ११६

२- The cleavage between the right and left wings of the Congress was deepening especially during the period of Congress ministries Subhas Chandra Bose stood for the Congress presidential election, in 1939.
-A.R.Desai, Social Background of Indian Nationalism p 377

रहे हुए थी, सन् १९४२ में देश भर में वीजाई के विद्रोह का आन्दोलन हुआ, लेकिन स्वतन्त्रता न मिलने के कारण महात्मा गांधी के सिद्धान्तों पर गहरी नोट फाँसी और जनता में निराशा का भाव उत्पन्न हो गया। कूटनीतिक वीजाई सरकार अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए गांधीवादी लोगों को स्वतन्त्रता का प्रतीक बनाकर अपना काम चला रही थी। गांधीवादी लोग वीजाई स्वतन्त्रता पर विश्वास किया करते थे। भारतीय जनता स्वतन्त्रता का स्वप्न पूरा करने के लिए पीड़ित थी। इस स्थिति में भारत के नवयुवकों स्वतन्त्रकारी विचारधारा वाले व्यक्तियों में गांधी के प्रति आकर्षण था। लेकिन जनताप्रभाव कांग्रेस में तीव्र न होने के कारण इन लोगों ने कांग्रेस छोड़ कर क्रान्तिकारी संगठनों का गठन किया और स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए गम्भीरतापूर्वक प्रयत्न प्रारंभ कर दिए।

भारत में साम्यवादी विचारधारा का प्रभाव

इस समय एक अन्य तथ्य भी महत्वपूर्ण था। भारत के पड़ोसी देश इस में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो चुकने के कारण इस की साम्यवादी विचारधारा का प्रभाव धीरे धीरे विश्व में फैलने लगा था। हमारे देश में भी इसका प्रभाव किसान और मजदूरों के आन्दोलनों के रूप में सन् १९२१ से दिखायी देने लगा। सन् १९२६-२७ में पं० जवाहर लाल नेहरू योरोप यात्रा के समय मार्क्सवादी विचारधारा के सम्पर्क में आए। सन् १९२७ में उन्होंने लुबेक में शोधित राष्ट्रीय की कांग्रेस में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। यहाँ पर कम्युनिस्ट दल भी काफी मजबूत था। पद-वर्धित लोगों में वापस में रहता था। कम्युनिस्ट दल और उग्र दल दोनों ही मिलकर साम्राज्यवादी शक्ति के प्रति विद्रोह कर रहे थे और आजादी के लिए प्रयास कर रहे थे।

भारत में धीरे धीरे कम्युनिस्ट विचारधारा का प्रभाव पड़ने लगा था। सन् १९२५ में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई और सन् १९३४ से इस दल का काफी प्रसार होने के कारण इसमें सदस्यों की संख्या १५० तक हो गई थी। अतः सन् १९३४ में यह पार्टी राजनीति के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण पार्टी बन चुकी थी। भारत ने मजदूरों और किसानों के इस दल में आ जाने के कारण इसका राजनीतिक महत्व बढ़ गया। सन् १९३६ से इसका प्रचार और प्रसार साहित्यिक क्षेत्र में भी परिलक्षित हुआ, जिसकी 'प्रगतिवाद' नाम की संज्ञा दी गई।

द्वितीय विश्व युद्ध

जिस समय देश में स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष चल रहा था, उसी समय विश्व में १ सितम्बर सन् १९३९ ई० में द्वितीय विश्व युद्ध की घोषणा की गई^२। ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि (वायसराय) ने बिना भारतीय नेताओं से सलाह किये ही भारत को इस युद्ध में फँके दिया। दिसम्बर सन् १९३९ को भारत की कांग्रेस सरकार ने विरोध स्वयं त्यागफन दे दिया। सन् १९४० में कांग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन में युद्ध के विरोध में एक प्रस्ताव भी पास किया गया।

पी० जवाहर लाल नेहरू ने अँग्रेजों की इस नीति की कालोचना करते हुए लिखा है, " युद्ध और हिन्दुस्तान अब हमें क्या

१- बीवरफ्रीट एण्ड विन्डमिलर - कम्युनिज्म इन इण्डिया पृ० ४७

२- डा० बी० पट्टाभिषीतारमैया - कांग्रेस का इतिहास (भाग २) पृ० १२७

करना चाहिए, वरन्, वे हम इसके बारे में सोचते जा रहे थे और अपनी नीति की घोषणा कर चुके मगर वह सब होते हुए भी केन्द्रीय धारा सभा या प्रान्तीय सरकारों की राय बिना हिन्दुस्तान को छद्म में तरीक़ मुक्त करार कर दिया ।^१ भारतीय नेताओं के विरोध करने पर यानी उनकी इच्छा के विरुद्ध भारतीयों को युद्ध में शामिल कर दिया गया । इसका विरोध भारतीय जनता और कांग्रेस ने किया । ब्रिटिश सरकार ने भारतीय जनता का सम्पर्क प्राप्त करने के उद्देश्य से क्रिश्च मिसन की घोषणा की । इस मिसन ने देशी रियासतों को अधिक सुविधा और भारतीय जनता को अधिक सुविधा-
~~जन्य~~ राजनीतिक अधिकार देने की बात कही गयी ।

उसी समय कांग्रेस के साथ साथ मुस्लिम लीग ने भी नयी राजनीति शुरू कर दी । मुस्लिम लीग ने मुहम्मदगानों के सिर अलग स्थान की माँग की जिसका नाम "पाकिस्तान" दिया । यद्यपि भारतीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग में सम्मति कराने का काफी प्रयास किया, लेकिन सम्मति न होने के कारण क्रिश्च मिसन असफल होकर लौट गया । गांधी जी ने क्रिश्च मिसन को ऐसा बैंक कहा कि जो किसी ऐसी बैंक के नाम है जिसका दिवाला निकल चुका है।

१- जवाहर लाल नेहरू : मेरी कहानी पृ० ८५०

२- " भारत को कबानक उसमें धोस दिया गया और कहाँ तक कि उसे यह भी महसूस न हुआ कि वह इसमें शामिल हो रहा है। "

- बी० पट्टाभि सीतारामय्या : कांग्रेस का इतिहास भाग २ पृ० १७६

३- " गांधी जीने ती फसली बार में ही सारी योजना को दिवा लिया होने वाले बैंक के नाम मुक्ती हुई कह कर ठुकरा दिया । "

- सीताधर शर्मा पंतीय : स्वतन्त्रता की पूर्व सन्ध्या पृ० ३४

गई है कार्यकर्तागण पीछे रह गये हैं।

जतः यह भारत की प्रथम जन क्रान्ति थी जिसका नेतृत्व स्वयं जनता ने किया। भारतीय बान्धोस्तन को बेल कर क़ैरों के मस्तिष्क में फसली बार यह विचार आया कि अब भारत को बहुत दिनों तक पराधीन नहीं रखा जा सकता। इसलिए अब भारत को स्वतन्त्र कर देना चाहिए। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का नारा “ दिस्ली बली ”। सुभाषचन्द्र बोस के इस क्रान्तिकारी कथमों क़ैरों के होश उद गये और वे मनोवैज्ञानिक रूप से अत्यधिक कुण्ठित हो गये थे। बाग़े बल्लर जो देश को आजादी प्राप्त हूँ, उसमें श्री सुभाषचन्द्र बोस की कड़ी ही गहरी प्रेरणा थी।

जिस समय महात्मा गांधी के नेतृत्व में “ करो या मरो ” का नारा गूँज रहा था, उन्हीं दिनों नेताजी के नेतृत्व में जुलाई १९४३ में पूर्वी चीन में युद्ध शुरू हो गया। सबसे क़ैरों में निराशा की भावना फैलने लगी। नेताजीके कारण आई० ए० ए० में नवीन जेतना आयी, जिसके फलस्वरूप “ दिस्ली बली ” का नारा और “ तुम मुझकी हूँ दो, मैं तुम्हीं आजादी दूँगा ” का नारा गूँज उठा। २१ अक्टूबर सन् १९४३ को स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार की घोषणा हुई। आजाद हिन्द फौज की सम्बोधित करते हुए नेताजी ने कहा - “ भारत के सिपाहियों वहाँ दूर नदियों और जंगलों और फाड़ों के पार हमारा देश है, वहाँ की मिट्टी से हम सब बने हैं, वहाँ हम अब जा रहे हैं। सुनी हिन्दुस्तान फुलार रहा है। हमारे रू करीब देशवासी फुलार रहे हैं हथियार उठाओ दिस्ली का रास्ता आजादी का रास्ता है, दिस्ली बली । ”

भारत पर ब्रिटिश सत्ता के परिवर्तन का प्रभाव

जिस समय विश्व में द्वितीय युद्ध चल रहा था उसी समय ब्रिटिश में क्लाइव्स की सरकार थी तथा प्रधान मंत्री के रूप में चर्चिल कार्य कर रहे थे। क्लाइव्स ने युद्ध के दौरान अपनी लोकप्रियता खो दी, चर्चिल की युद्ध नीतियाँ का विरोध होने लगा था। यद्यपि उस समय विश्व में राजनीतिक उत्थल पुनः होने के कारण जनता अपनी बात स्पष्ट नहीं कर पा रही थी। जब १० जुलाई १९४५ को ब्रिटेन में आम चुनाव हुए तो क्लाइव्स की पराजय का मुँह देखना पड़ा और मक्लूर दल की सरकार बनी। नयी सरकार ने भारत की राजनीतिक स्थिति का अध्ययन करने के उद्देश्य से फरवरी सन् १९४६ को ब्रिटिश पार्लियामेंट का प्रतिनिधि भारत आया। मार्च १९४६ को ब्रिटिश, मंत्रिमण्डल का प्रतिनिधि आया, जिसमें भारत मंत्री लार्ड पैकिंग हाउस, मीडिंग्स और मीडिंग्स आदि थे। इस प्रतिनिधि मण्डल ने अविलम्ब सत्ता देने के उद्देश्य से भारतीय नेताओं से बात की और अन्तरिम सरकार की स्थापना १० अक्टूबर तक नेहरू की अध्यक्षता में जून सन् १९४६ में की गई। मुस्लिम लीग ने अन्तरिम सरकार का विरोध किया। उस समय मुस्लिम लीग राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण पार्टी बनती जा रही थी। लेकिन मुस्लिम लीग केवल मुसलमानों पर केन्द्रित थी। उसकी दृष्टि में भारत और काँग्रेस हिन्दुओं की संस्था थी। इसलिए मुसलमानों की रक्षा केवल ब्रिटिश राज्य ही कर सकता था। इसलिए वह बीजेपी के भारत छोड़ो से पूर्व अपने लिए अलग स्थान की माँग कर रहे थे। देश में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिक भावों में हुए, दूसरी ओर कुछ मुसलमान काँग्रेस के साथ

१- The years of the movement were the years of the forging of the Unity and even large scale united action of the Hindi and Muslim Communities.

-A.R.Desai : Social Background of Indian Nationalism p 355

थे और अनुसूच नष्कार ताँ, मौ० बाबाद बादि ।

जिस समय भारत में असहयोग आन्दोलन चल रहा था उस समय मुस्लिम लीग भारतीय कांग्रेस का साथ न देकर अपने अलग अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही थी जिसके फलस्वरूप हिन्दू और मुसलमानों के बीच तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई । अन्ततः पाकिस्तान का निर्माण हुआ ।

मुस्लिम लीग में मिस्टर एम० ए० जिन्ना बादि थे । इन लोगों के नेतृत्व में मुसलमानों का एक वर्ग काम कर रहा था । इस वर्ग की मान थी कि मुसलमानों को धार्मिक एवं सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाये । भारतीय स्वतन्त्रता के साथ ही मुसलमानों का अस्तित्व ही संकट ग्रस्त हो जायेगा । इसलिए अनुपात के आधार पर अलग देश की मान की जाने लगी । भारतीय कांग्रेस ने अलग राष्ट्र के सिद्धान्त का विरोध किया । अतः मुस्लिम लीग और कांग्रेस के बीच मतभेद उत्पन्न हो जाने के कारण भारतीय स्वतन्त्रता बीच में ही टूट गयी ।

नाविक विद्रोह

सन् १९४६ में भारत की समुद्री सेना के विद्रोह ने भारतीय राजनीति को प्रभावित किया । इनके समर्थन में बम्बई के मजदूर और जनता ने भी ब्रिटिश सरकार के प्रति विद्रोह कर दिया । विद्रोही नाविकों का केन्द्र बम्बई था, उसका प्रभाव तेजी से देश के अन्य भागों पर पड़ने लगा । दूसरी ओर नाविकों का साथ भारतीय जनता द्वारा दिया जा रहा था । नाविकों को साना दिया गया उसके ब्रिटिश अधिकारी

परतान होकर जैसी जहाज औद्योगिक सामान को बम्बई से कराची से जाने लगे। इसी बीच भारतीय सेना ने भी नाकिर्वाँ पर गोली चलाने से इन्कार कर देने पर भारतीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रयास से नाकिर विद्रोह शान्त हो गया।

भारत विभाजन और स्वतन्त्रता

३ जून सन् १९४७ को लार्ड माउण्टबेटन ने सम्मेलन की एक नई योजना प्रस्तुत की जिससे भारत का विभाजन तथा भारत और पाकिस्तान की औपनिवेशिक स्वराज्य देने की बात थी। इस योजना को कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने स्वीकार किया, जिसके फलस्वरूप भारत का विभाजन दो पूर्ण देशों के रूप में हो गया। भारत और पाकिस्तान को अलग अलग स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। १५ अगस्त सन् १९४७ को भारत राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र हो गया और दूसरी ओर पाकिस्तान का भी अन्वय हो गया।

१- डा० कृष्ण बिहारी मिश्र : आधुनिक सामाजिक आन्दोलन और
आधुनिक साहित्य पृ० २२५

स्वातंत्र्योपर राजनीतिक परिस्थितियाँ (१९४७-१९६४)

भारत की स्वतन्त्रता के साथ ही बहुत सी नयी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याएँ ने जन्म लिया, जिन्होंने स्वतन्त्रता के उत्साह और हर्ष की कल्पना और निराशा में बदल दिया। स्वतन्त्रता के साथ देश का विभाजन और जन संस्था के परिवर्तन ने अनेक सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याएँ को जन्म दिया।

साम्प्रदायिक दंगे

मुस्लिम लीग के हठधर्मों के कारण देश का विभाजन हुआ जिसने न केवल समाज में अस्थिरता को जन्म दिया, अपितु देश के विकास एवं देश की सुरक्षा के लिए गतिरोध भी उत्पन्न कर दिया। इसी समय देश के पूर्वी एवं पश्चिमी भाग में जाति और धर्म के नाम पर अनेक साम्प्रदायिक दंगे हुए, जिसमें हजारों नर नारियाँ की गई हत्या हुईं, छूट पाट, जगजगी और कत्तस बाम से अनेकों नारियाँ विधवा हुईं, बच्चे कत्तस हुए, लोग घर से बेघर हुए। इस परिस्थिति ने भारतीय समाज को बहुत प्रभावित किया। भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा का सही विभाजन न होने के कारण युद्ध और तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। इसी समय विस्थापितों की समस्याएँ भी भारतीय समाज को प्रभावित करने लगी।

कश्मीर विवाद और युद्ध

भारत की स्वतन्त्रता की प्राप्ति होने के कुछ ही महीनों के पश्चात् पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। कश्मीर के महाराजा द्वारा भारत से सैनिक सहायता प्राप्त करके कश्मीर से पाकिस्तानी सैनिकों को हटाया गया, फिर भी कुछ भाग पर पाकिस्तान का अधिकार बना रहा। आज भी भारत और पाकिस्तान के मध्य यह तनाव बना हुआ है। उसी समय देशी रियासतों का विषय का प्रश्न था, जिसका समाधान सरदार पटेल ने अपने विवेक से किया और देशी रियासतों को भारत में मिलाकर भारत संघ को एक नया रूप दिया। सरदार पटेल का यह कार्य ऐतिहासिक महत्व का है।

तेलंगाना

भारत में सन् १९४६-४७ के आस पास ही तेलंगाना के भूतलकश वर्गों - किसानों और मजदूरों ने भारतीय सामान्तरवाद और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ कर दिया। तेलंगाना भूतपूर्व हैदराबाद राज्य का एक हिस्सा है, जहाँ पर आन्दोलन रूढ़िवादी है। यहाँ का नबाब मुखसमान था। नबाब की अपनी फौज और सशस्त्र रजाकार सैनिक संगठन था। इन लोगों की सहायता से नबाब किसानों को छूट, आगजनी, हत्या और बलात्कार किया करता था। तेलंगाना की जनता ने संगठित होकर नबाब के विरोध करना शुरू कर दिया। सन् १९४६ में किसानों ने कम कीमतों पर खरबस्ती काज लेने का विरोध हैदराबाद कम्युनिस्ट पार्टी और आन्ध्र महासभा के नेतृत्व में किया गया और १९४८ में निजाम

का शासन नष्ट कर दिया गया, १२ लाख एकड़ जमीन जमींदारों के हाथों से मुक्त करवाकर किसानों को बाँट दी गई। सितम्बर १९४८ के बाद हैदराबाद भी भारतीय संघ का एक हिस्सा बन गया। अतः वहाँ पर भी जमींदारी प्रथा का अन्त कर दिया गया।

गांधी जी की हत्या

३० जनवरी १९४८ को महात्मा गांधी की हत्या नाथूराम विनायक गोडसे ने कर दी। इस प्रकार भारतीय राजनीति का एक महत्वाकांक्षी समाप्त हो गया। गांधी की हत्या के साथ ही भारतीय राजनीति का सूत्र भी बिखर गया।

चीन में क्रान्ति

२१ सितम्बर १९४९ के दिन साम्यवादियों के सत्त्व संघर्ष के परिणामस्वरूप चीन में जनवादी गणराज्य की स्थापना हुई। चीनी क्रान्ति का प्रभाव एशिया और अफ्रीका के जनवादी आन्दोलनों पर भी पड़ा है।

गणतन्त्र की स्थापना

२६ जनवरी सन् १९५० में नये संविधान की घोषणा हुई। नये संविधान के अनुसार भारत एक प्रमुखता संघीय स्वतन्त्र गणराज्य घोषित किया गया, इसके अनुसार भारत में नवीन शासन प्रणाली का उदय हुआ।

भारत में प्रजातंत्र की स्थापना की गई। नयी सरकार का चुनाव करने के लिए भारतीय जनता को वोट देने का अधिकार दिया गया।

चुनाव

सन् १९५२ में देश में पहली बार चुनाव हुआ। देश के सभी राजनीतिक पक्ष जैसे- राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, संसद सदस्य और विधान सभाओं के सदस्यों का निर्वाचन चुनाव के आधार पर किये जाने लगे। देश की राजनीति में नयी चेतना का विकास हुआ। भारतीय जनता का ध्यान चुनाव की ओर गया। देश का शासन चुनाव के आधार पर चलने लगा। अतः चुनाव में जन साधारण का महत्त्व बढ़ने लगा। इसी समय में भाषा, धर्म और क्षेत्र के आधार पर नए राजनीतिक दलों का गठन होने लगा।

कांग्रेस की भूमिका

स्वतन्त्रता से पूर्व कांग्रेस एक राष्ट्रीय पार्टी के रूप में कार्य कर रही थी। सन् १९५१ में कांग्रेस सत्ता के लिए संघर्ष करने लगी। कांग्रेस में नेहरू गुट और पटेल गुट का जन्म हुआ। सन् १९५१ के लिए कांग्रेस अव्यक्त के निर्वाचन में यह संघर्ष शुरू हो गया, जब पं० नेहरू द्वारा समर्थित आचार्य बे० बी० कृपलानी को पटेल समर्थित प्रत्यासी बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन ने पराजित कर दिया। परन्तु कांग्रेस में विभाजन की वार्ता से टण्डन जी ने अपनी पक्ष से त्याग पत्र दे दिया।

१- Durga Das : India curzon to Nehru and after p 304

कंग्रेस की सत्ता के तिर सँवर्ण चस्तता रहा । कंग्रेस के बन्दर बन्दरहीन होटे होटे गुट बन गये थे । समीगुट अपना अधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से लड़ रहे थे , लेकिन कंग्रेस दल में पैठित ज्वाहर लाल नेहरू का प्रभाव होने के कारण कंग्रेस का भारतीय राजनीति पर गहरा प्रभाव रहा । जब कंग्रेस की शक्ति धीरे धीरे लीण होती गयी । सन् १९५७ के दूसरे निर्वाचन में साम्यवादी दल की केरल विधानसभा में बहुत मत मिठा और उनके संसदीय और विधान सभाओं के मतों के प्रतिष्ठत में भी वृद्धि हुई । दूसरी ओर अन्य राजनीतिक दल जैसे- जनसंघ, समाजवादी दल, प्रजा समाजवादी दल, वादि का अन्वुदय हुआ । सन् १९५६ में स्वतन्त्र दल का जन्म हुआ । सन् १९६२ में कंग्रेस की लोकप्रियता कम होने लगी । सन् १९६७ में उसका बहुमत भी कम होने लगा ।

भारत चीन सम्बन्ध

भारत और चीन ने सन् १९५४ में पंचशील के सिद्धान्तों की स्थापना की और पारस्परिक मैत्री की घोषणा की थी । सन् १९५६ में चीन ने तिब्बत के धार्मिक नेता दलाई लामा की तिब्बत से निकास दिया जिसके फलस्वरूप कुछ तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई । सन् १९६२ में भारत और चीन में सीमा की लेकर युद्ध हुआ ।

-
- १- They won power in Kerala counted twelve million voters on their side in the country as a whole doubled their popular votes in parliament elections from five percent to ten percent and more than doubled it in the state elections from just four and half percent to ten and half percent, increased their seats from 16 to 27 in Lok Sabha and from 106 to 176 in state assemblies.

गीता- दम- दीव तथा अन्य राज्यों की स्वतन्त्रता

सन् १९६५ में भारत ने सैनिक कार्रवाई करते फुंगाली साम्राज्यवादी इन चीजों को भी कुत्त किया। सन् १९६९ में प्रांतीयीकरण समाप्त होने पर पाण्डेरी को भी भारतीय संघ में मिलाया गया।

स्वतन्त्रता के बाद भारत में रेडियो, समाचार पत्र एवं चल चित्रों का विकास बहुत तीव्र गति से हुआ। भारतीय समाज अपनी रुढ़िगत भावना को छोड़कर तेजी से विकास पथ पर बढ़ने लगा।

सामाजिक क्षेत्र में कार्य की विशेष महत्व दिया जाने लगा। अतः वाधुनिक युग का मुख्य प्राचीन मान्यताओं को छोड़कर वाधुनिक विचारधारा से जुड़ गया। भारत में प्राचीन विचार, धर्म कथ्यात्मक एवं नैतिकता के स्थान पर तर्क विश्लेषण तथा प्रयोग की अधिक महत्व मिला। वाधुनिक युग में विज्ञान और यांत्रिकसम्पत्ता का विकास तीव्र गति से हुआ। जिसने मुख्य के सम्बन्ध को बदल दिया। वाधुनिक युग में प्रतियोगिता और विज्ञापन का प्रभाव तीव्र गति से बढ़ा। समाज से नैतिकता, धार्मिकता एवं वाध्यात्मिकता के स्थान पर यथार्थ और नवीन मान्यताओं की स्थापना हुई।

अतः स्वतन्त्रता के बाद भारतीय समाज का औद्योगिकरण तीव्र होने के साथ साथ नवीन सामाजिक एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया के शुरु होने से भारत का समाज तीव्र गति से पार्श्वस्थ समाज की ओर उन्मुख हो रहा है। भारतीय समाज में जाने वाले परिवर्तन इस बात के प्रतीक हैं कि भारत किस गति के साथ दुनिया के अन्य देशों के साथ चल रहा है तथा विकास के किस चरण पर कितनी तेजी के साथ पहुँच रहा है। निःसन्देह यह एक महत्व-

पूर्ण उपलब्धि हुई। वही कारण कि इतने वर्षों समय में अत्यधिक जनसंख्या वाला देश जो प्राकृतिक और वास्तविक कठिनाइयों के बावजूद भी अपनी विकास पर यात्रा कर रहा है।

स्वतन्त्रता के बाद यद्यपि कृषि पूरी तरह सना में रही, किन्तु देश में जैसी प्रजापति प्रणाली की स्थापना मिली। इसके साथ ही विकास के बहुत अधिक कार्य हुए, जो कि बात को भी स्वीकार करना चाहिए।

झायावादीय हिन्दी काव्य : सामान्य परिचय

इस सतावदी के आरम्भ से लेकर अब तक हिन्दी कविता में कई महत्वपूर्ण मोड़ आए हैं। कविता का यह विकास यह प्रमाणित करता है कि हिन्दी साहित्य कितना जीवन्त, प्राणवान् और विकासशील है। दूसरा यह भी सार्वभौम सत्य है कि हिन्दी कविता का एक ऐसी गति-शील विधा है जो सामाजिक परिवर्तन द्वारा बदलते हुए मूल्यों की वात्सल्यपूर्वक होती हुई विकास के अनेक सीपानों को पार करती जा रही है।

भास्वीय समाज में इस युग में बहुत से महत्वपूर्ण सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन हुए, जिनका प्रभाव काव्य के भिन्न युगों में परिलक्षित हुआ है। झायावादी युग का आदर्शान्मुख विद्रोह और कटु यथार्थ से कतराने की प्रवृत्ति और उसके बाद प्रातिवादी और प्रयोगवादी वान्दोसनों की यथार्थ दृष्टि - इन सबका उदय अपने युग की राजनीतिक एवं सामाजिक उत्थान पुस्त के परिवेश का परिचायक ही है।

झायावादी कविता व्यक्तिवादी चेतना से प्रभावित काव्य धारा है। इस युग में राजनीति के क्षेत्र में महात्मा गांधी का स्थान महत्वपूर्ण था। उनके व्यक्तित्व से सम्पूर्ण समाज एवं राजनीति प्रभावित थे। इस युग में राष्ट्रीय चेतना का विशेष महत्व होने के कारण इस युग के साहित्य में व्यक्तिवादी दृष्टिकोण विशेष रूप से उभर कर आया। इस युग की निराशा, कृष्ठा और विद्रोह की भावना उभर झायावादी कवियों

की कविताओं में भी आयी हैं। हायावादी कविता एवं उन्नीसवीं शताब्दी की कविता समान के दो युद्धों के बीच की कविता है अर्थात् प्रथम महायुद्ध के अन्त और द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ की बीच- बार्स वर्षों की कविता है।

हायावादी कविता में कल्पना की अधिक प्रधानता है। इन कवियों ने अपनी युग के यथार्थ और समस्याओं की अधिक गंभीरता से नहीं लिया है। हायावाद के कवियों की कविता स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विपरीत है, क्योंकि उनकी दृष्टि बहिर्मुखी थी। इस युग के कवियों ने अपनी भावनाओं और विश्वासों के अनुरूप ही बाह्य जगत् को देखने का प्रयास किया है। हायावादी युग में जीवन के दो प्रकार के वादों देखे जा सकते हैं।

१- हस्त्यात्मक अनुभूतिओं तथा जिज्ञासा और आश्चर्य की भावना ।

२- यथार्थ जीवन की समस्याओं से हटकर काल्पनिक चिन्तन सौंदर्य तथा कला और भविष्य के सुख स्वप्नों की दृष्टि के रूप में ।

अतः हायावादी कविता को यथार्थ जीवन से अलग काल्पनिक जीवन की कविता का नाम दिया गया है। इस युग के कवि तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों से अलग हटकर कल्पना लोक में विचरण कर रहे थे। इसलिए इस युग की कविता को यथार्थ जीवन से अलग की ही कविता का नाम दिया गया। लेकिन इस युग की कविताओं में गांधी के व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है। हायावादी कविता में गांधी की अहिंसा और सुवर्देश की प्रधानता थी। इसलिए यह काव्य

यथार्थ जीवन से कट गया था। साथ ही साथ उस युग के कवियों ने पुरातन मूल्यों और सत्यों की प्रति विद्रोह भी किया और नयी सामाजिक चेतना से उद्भूत काव्य की सर्जा प्रारम्भ कर दी।

सन् १९३४ के बाद समाज में एक क्रान्तिकारी मोड़ आया। समाज पर मार्क्सवादी चेतना का प्रभाव पड़ने लगा। सन् १९३५ में प्रातिशील लेखक संघ के रूप में पेरिस में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ, जिसमें मैक्सिम गीर्की, रोमां रोला, जॉर्ज मातरोटासमान, वाल्टे फ्रैंक जैसे प्रसिद्ध चिन्तकों, दार्शनिकों तथा कवियों ने भाग लिया, जिसकी अध्यक्षता अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यासकार हं. एम. फास्टर ने की। इस सम्मेलन में फासिज्म के विरोध और वैचारिक स्वातंत्र्य तथा शोषित, दलित वर्गों के साथ लेखकों के घनिष्ठ सम्बन्धों के पक्ष में जोरदार आवाज उठाई। सन् १९३५ में ही तत्काल स्थित कुछ भारतीय विचारियों ने इण्डियन प्रोग्रेसिव राइटर्स सोसिएशन नामक संस्था का गठन किया। सन् १९३६ में तत्काल में प्रेमचन्द जी की अध्यक्षता में सम्मेलन हुआ, जिसमें सुमित्रानन्दन पन्ना, यशपाल केज्र, जहमद केज्र, सज्जाद जहीर और हरिन्द्र नाथ मुत्सोध्याय आदि ने भाग लिया। इसका प्रधान कार्यालय प्रयाग में खोला गया और शेष भारत में इसकी शाखाओं प्रशाखाओं की स्थापना की गयी।

सन् १९३६ में भारत की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थिति में काफी परिवर्तन आ चुके थे। देश में साम्यवादी विचारधारा

१- डा० शिवकुमार मिश्र : नया हिन्दी काव्य पृ० १४७

२- सज्जाद जहीर : हंस - वे दिन बीत चुके हैं " पृ० २६१ जन० ४८

३- डा० राम प्रसाद बिस्मिल : प्रातिवादी समीक्षा पृ० १०२

का प्रभाव बढ़ चुका था। राजनीति के क्षेत्र में फैजपुर अधिवेशन के बाद साम्यवादी विचारधारा का प्रभाव बढ़ने लगा था। इस युग की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का प्रभाव साहित्य में इस रूप में पड़ने लगा था- “तुम लोग मेरी हँसी उड़ाते हो मानों कास्तकार कुछ कहीं होता ही नहीं वह जमींदार की बेगार भरने के लिए ही बनाया गया है। लेकिन मेरे पास जो फाँव बाया है, उसमें सिता है कि सब देश में कास्तकारों ही का राज है, वह जो चाहते हैं, करते हैं, वहाँ जमी हात ही की बात है, कास्तकारों ने राजा की गद्दी से उतार दिया है, अब किसानों और मजदूरों की पैदावत राज करती है।”

सन् १९३६ के सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव हिन्दी के कवि सुमित्रानन्दन पन्त पर जिस रूप में पड़ा है, उसे उन्होंने स्वयं अपनी शब्दों में व्यक्त किया है :

“इस युग में जीवन की वास्तविकता ने जैसा उग्र आकार, धारणा कर लिया है, उससे प्राचीन विश्वासों में प्रतिष्ठित हमारे भाव और कल्पना के मूल हिल गए हैं। इस युग की कविता स्वप्नों में नहीं

१- “फैजपुर के सारे वातावरण में समाजवाद की लहरें दौड़ रही थीं। एक तरफ मजदूरों और किसानों के अधिकारों पर जोर दिया जा रहा था, दूसरी तरफ पश्चिस्टवाद और साम्राज्यवाद का विरोध था।”

- डा० बी० सीतारामय्या : कश्मिर का इतिहास भाग २ पृ० ३२

२- प्रेमचन्द : प्रेमाग्रम पृ० ६६

फल सकती उसकी कठों में अपनी पोषण सामग्री ग्रहण करने के लिए कठोर धरती का वाक्य लेना पड़ रहा है।^१ ”

अतः हिन्दी कविता की पुरानी परम्परा आज के युग में जाकर कमजोर पड़ने लगी। युग की बदलती हुई परिस्थिति और राजनीतिक प्रभाव ने इस युग के समाज एवं कवियों को अधिक प्रभावित किया, जिसके फलस्वरूप जायावादी युग के प्रसृत कवियोंने जायावादी शैली को छोड़कर समाजवादी चेतना के आधार पर काव्य रचना शुरू कर दी।^२

डा० नाम्बर सिंह के अनुसार “ जायावाद के बाद उसकी प्रतिक्रिया में जो काव्य प्रवृत्ति उत्पन्न हुई वह प्रातिवाद कहलायी। ” प्रातिवादी साहित्य मार्क्स की साम्यवादी विचारधारा को लेकर सिला गया काव्य है जिसमें नीतिकवाद को महत्व दिया गया है। प्रातिवादी काव्य में समाज का विश्लेषण आर्थिक आधार पर किया गया। प्रातिवादी वान्दोस्तन एक क्रान्तिकारी चेतना है जिसमें मनुष्य समाज के आर्थिक शोषण के विरुद्ध संगठित होकर विरोध करता है।

डा० नगेन्द्र ने प्रातिवाद का सम्बन्ध साम्यवाद से

१- स्मरण - मासिक प्रथम की जुलाई १९३८ (सम्पादकीय)

२- “ युगान्तर में मैं निश्चय रूप से इस परिणाम पर पहुँच गया था कि मानव सभ्यता का पिछला युग अब समाप्त होने को है और नवीन युगका प्रादुर्भाव अवश्यभावी है। ”

- युगान्त प्रसिद्धा ५. २

३- आधुनिक हिन्दी कविता की प्रसृत प्रवृत्तियाँ पृ० ६६

डा० लक्ष्मीकान्त वर्मा के अनुसार " निराशा उनमें सर्वप्रथम थे जिन्होंने इस नये भाव बोध के साथ 'कुटुरमुखा' की रचना की थी। इसी परम्परा में आगे बढ़कर सन् १९४३ में ज्ञेय के सम्पादन में 'तार सप्तक' का प्रकाशन हुआ।

तार सप्तक के प्रकाशन से हिन्दी साहित्य में एक नया आन्दोलन उत्पन्न हुआ, जिसे 'प्रयोगवाद' नाम दिया गया। प्रयोगवाद की जहाँ 'स्वाम' 'उच्चैस्त' वैसी वक्तव्यपूर्ण एवं 'हंस', 'विशास' भारत' वैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में होने लगी।

सन् १९३७ में ज्ञेय ने निर्णय दिया कि 'साहित्यिक सक्ति के रूप में निराशा पर डुबे हैं। लेकिन ज्ञेय ने इन युग की दो प्रसृतियों को स्वीकार किया।"

विकृत यौन और कुण्ठाओंकी अभिव्यक्ति ज्ञेय की प्रयोगवादी कविताओं में हुई।

जब वासीकरण ने ज्ञेय की प्रयोगवादी कविता को खोज निकाला और उनकी रचना 'तार सप्तक' को प्रयोगवादी युग की प्रथम कृति के रूप में स्वीकार किया जाने लगा तो इसका विरोध स्वयं ज्ञेय ने किया, " प्रयोगवाद का कोई वाद नहीं है। सम्वाद नहीं है, नहीं है। न प्रयोगवाद अपनी वाप में रुष्ट या साध्य है।"

यदि तार सप्तक का गम्भीरता से अध्ययन करें तो उसमें दो प्रकार की कविताएँ थीं। प्रथम वर्ग समाजवादी कविताओं का वर्ग

१-स्त्री कविता के नये प्रतिमान पृ० ५६

२- डा० नामवर सिंह - कविता के नये प्रतिमान पृ० ८८

३- ज्ञेय : कुटुरा सप्तक की भूमिका पृ० ६

हैं जिसमें डा० राम विलास शर्मा, आकर माधव, गजानन माधव मुक्तिबोध आदि आते हैं। दूसरा वर्ग व्यक्तिवादी कवियों का है जिनमें ज्ञेय, गिरिजा-कुमार माथुर और भारती आदि हैं।

हिन्दी साहित्य में जिस समय प्रयोगवादी आन्दोलन शुरू हुआ, उसी समय बिहार से 'प्रपञ्चाद' के नाम से नया साहित्यिक आन्दोलन उत्पन्न पड़ा। इस आन्दोलन में भाग लेने वाले कवियों को 'न के न' नाम दिया गया। इस साहित्यिक आन्दोलन में भाग लेने वालों में नत्तिन विलोचन शर्मा, केशरी कुमार और नरेश आदि हैं। इन कवियों ने तारसप्तक का विरोध किया। नूतनवादी प्रयोग को साधन न मानकर साध्य के रूप में स्वीकार करते हैं। उनकी दृष्टि में तारसप्तक के कवि प्रयोगवादी नहीं हैं, क्योंकि प्रयोग को साधन मानकर उसकी प्रकृति गरिमा पर कुठाराघात किया है। इसलिए प्रपञ्चाद के कवियों ने प्रयोग को काव्य दर्शन के रूप में स्वीकार किया है।

इस बिन्दु पर प्रपञ्चाद के कवि ज्ञेय के साथ है कि प्रयोगवादी सभी काव्य के कवियों ने किया है, यद्यपि किसी एक काव्य में किसी विशेष दिशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति होना स्वाभाविक है।

नतः प्रयोगवादी कवियों के विरोध के बाद भी इस युग का नाम प्रयोगवाद ही पड़ा। प्रयोगवाद के जन्मदाता के रूप में ज्ञेय और प्रथम रचना के रूप में 'तारसप्तक' को स्वीकार किया गया।

१- नरेश्वर देव वर्मा- प्रयोगवाद पृ० ४६

२- ज्ञेय - तारसप्तक पृ० २७६

हिन्दी काव्य क्षेत्र में प्रयोगवादी कविता का विकास 'नई कविता' के रूप में हुआ। दूसरे सप्ताह के प्रकाशन के बाद ही नयी धारा का विकास शुरू हो गया। सन् १९५४ में डा० जगदीश गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में नयी कविता नामक अर्ध-वार्षिक पत्रिका स्थापनावाद से प्रकाशित हुई, जिसके साथ नई कविता की धूम मच गई।

नयी कविता का समाज स्वतन्त्रता के बाद का समाज है। नयी कविता प्रातिवादी कविता के समान संकुचित दृष्टिकोण को न लेकर, व्यापक क्षेत्र को लिया है। इसमें व्यक्ति और समाज दोनों लिए गये हैं। नयी कविता में प्रातिवादी युग की सामाजिक एवं प्रयोगवादी कविता की व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों का मिश्रण है।

नयी कविता का समाज आधुनिक युग के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक युग से प्रभावित है। अतः नयी कविता के समाज पर महानगरीय जीवन की कृष्णता, निराशा, संक्रास आदि का प्रभाव है। डा० कन्द नाथ पटन के अनुसार, "नयी कविता में आधुनिकता का भाव बोध और इस भाव बोध की अभिव्यक्ति के लिए मानव की विचित्रताएँ और प्रतिक्रियाएँ का प्रयोग है, जो यथार्थ जीवन की उपज है।"

नयी कविता में समाज के टूटते, पुराने मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति है। आधुनिक युग की बदलती हुई मान्यताएँ ने प्राचीन युग की अस्वस्थ रुढ़ियों को तोड़ दिया है।

लेकिन नवीन मूल्यों के अभाव में मानव की स्थिति
 भ्रष्ट के समान हो गई। नयी कविता में प्रयोगवादी कविता के समान
 मानव जीवन की कुण्ठाओं एवं दमित वासनाओं की अभिव्यक्ति हुई है।
 और इसमें समाज के प्रति विद्रोह की भावना भी स्पष्टतः परिलक्षित है।
 नयी कविता बौद्धिकता एवं विज्ञान के प्रभाव के कारण बुद्धि वितास की
 वस्तु बन कर रह गई।

नयी कविता में साधारणीकरण का अभाव हो
 गया। इसलिए अतता का ध्यान नयी कविता से हटकर नवगीत की ओर
 भी गया। नवगीत ने लोक ध्वनियाँ एवं लोक संगीत पर बाधा न होने
 के कारण अतता की अपनी ओर अधिक आकृष्ट किया। इस प्रकार हिन्दी साहित्य
 के क्षेत्र में कविता का बहुमुखी विकास होता रहा। आज भी नई कविता और
 नवगीत का विविध स्तरों पर विकास हो रहा है। अत्याधुनिक जटिल और
 विचित्र परिस्थितियों में नई कविता अपनी अभिव्यक्ति और गतिशील धारा के
 समान विकसित हो रही है।

हायावादीपर : हिन्दी काव्य की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ

किसी भी देश के समाज एवं राजनीति का मुसाधार आर्थिक स्थिति ही होती है। अतः आर्थिक विकास के आधार पर उस देश के नागरिक एवं सामाजिक जीवन स्तर का मूल्यांकन किया जा सकता है। जिस प्रकार किसी समाज तथा व्यक्ति के स्थान का निर्धारण आर्थिक आधार पर होता है, उसी प्रकार अन्तरराष्ट्रीय स्तर में किसी राष्ट्र का मूल्यांकन उसके आर्थिक धरातल पर ही किया जाता है।

भारत में औद्योगी राज्य का अस्तित्व आर्थिक शोषण और छुट-पाट पर आधारित था। जेंट डेविया कम्पनी से लेकर औद्योगी सरकार तक की नीति शोषण और भारतीय सम्पदा का उपयोग अपनी हित में करना था। औद्योगी ने एक ओर तो भारत के औद्योगिक विकास की ओर ध्यान दिया तो दूसरी ओर भारत के प्राचीन कृषि पर आधारित उद्योग धर्मों को भी नष्ट कर दिया। भारत की कृषि की स्थिति दिन-प्रतिदिन खराब होती जाती गयी। औद्योगी भारत में दुर्गमि जात बसते रहे। एक ओर देश में विकास का नारा दिया, दूसरी ओर नागरिकों को सम्य और सुवस्कृत बनाने के नाम पर देश का शोषण करते रहे।

औद्योगी ने भारतीय साधनों का उपयोग भारत के विकास कार्यों में लगाकर अपनी स्वार्थी एवं युद्धों में किया, जिसके फलस्वरूप देश की आर्थिक स्थिति बिगड़ गयी। केन्द्रीय बसेम्पती का बजट अधिवेशन में दिया गया वक्तव्य, " पांच ब्रिटिश रेजिमेण्टों का २,१५,००,०००

₹० की लागत से यात्रीकरण होने का था और इस रूप में से ब्रिटिश सरकार सिर्फ ८०,००, ००० ₹ दे रही थी और शेष रूप यानि १, ३५, ००, ००० ₹ भारत के माथे मढ़ी जा रही थी।^१

इसके अतिरिक्त युद्ध के लिए धन संग्रह करने के उद्देश्य से देश के विभिन्न भागों में जमींदारों की नियुक्ति की गई, जिसका उद्देश्य सरकार के लिए धन संग्रह करना था। अतः देश में शोचण की प्रक्रिया तेज होगई। भारत के पूँजीपति भी ब्रिटिश सरकार से मिलकर काफी मुनाफा कमाने लगे। दूसरी ओर कृषि की वस्तुओं का मूल्य कम कर दिया गया, जिसके फलस्वरूप किसानों की वार्षिक स्थिति बिगड़ गयी। इसके फलस्वरूप ग्रामीण जनता अपने शेत और उथीलों को छोड़ कर शहर में मजदूरी करने के उद्देश्य से जाने लगी। ग्रामीणों में कर्ज और बेरोजगारी भी बढ़ने लगी। इसलिये ग्रामीण क्षेत्र की जनता कारखानों में मजदूरी करने लगी। देश में महानगरों एवं बड़ी बड़ी कस्त-कारखानों की संख्या बढ़ने लगी।

मध्य वर्ग का व्युत्पन्न

ग्रामीण समाज में जमींदारों एवं साहूकारों के शोचण एवं कृषि की बिगड़ती हुई दशा से परेशान होकर ग्रामीण जनता के अपने जीवन यापन करने के उद्देश्य से शहरों में जाना शुरू कर दिया।^२ ग्रामीण क्षेत्र से जाने वाले नवयुवक नयी शिक्षा ग्रहण कर नौकरी की वांछा में 'बाबू' वर्ग में जा मिलता। इससे शहरों के अपने शासन की मजबूत

१- डा० पी० फुट्टामि सीतारामय्या : इतिहास का हिस्सा भाग २ पृ० ६६

२- वार० पी० बन : इच्छिया दृ ६ पृ० २१८

करने के लिए छोटे एवं मध्यम वर्ग के लोग बहुतायत से मिलने लगे। अँग्रेजों ने भारतीय जनता को सेना और पुलिस में काफी संस्था में भरती करना शुरू कर दिया।

भारतीय समाज में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक विकास के फलस्वरूप मजदूरों की संस्था बढ़ती गयी। शहर में काफी लोगों के आ जाने के कारण शहर के जीवन में कष्ट उत्पन्न होने लगा। ग्रामीण क्षेत्र के समान शहरों में भी शोषण वृद्धि थी। समाज का निम्न वर्ग एवं मध्यवर्ग सबसे प्रभावित हुआ।

समान की सिद्धिती हुईं वर्ष व्यवस्था ने मध्यवर्गीय लोगों में प्रष्टाचार को जन्म दिया। इस युग में पूँजीपतियों एवं भारतीय उद्योगपतियों ने काफी मुनाफा कमाने के उद्देश्य से कृत्रिम अभाव की स्थिति उत्पन्न कर दी। मध्यवर्गीय जनता भी पूँजीवादी व्यवस्था से प्रभावित होने के कारण नैतिकता, धर्म और जावर्त के स्थान पर धन को अधिक महत्व देने लगी। मध्यवर्गीय जनता को वार्षिक एवं सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं थी। लेकिन उच्च वर्ग की नकल करने के कारण उनकी स्थिति ब्रिटेन के समान थी। आधुनिक समाज पर मध्यवर्ग का अधिक प्रभाव होने के कारण व्यक्तिव्यक्ति अज्ञान, अलौकिक, निराश एवं कुण्ठा से ग्रस्त व्यक्तिवादी हो जाया है।

१- १६ वीं शताब्दी के मध्यमें अँग्रेजों की शोषण नीति नये ढंग से प्रारंभ हुई। उन्होंने अपने स्वार्थ की दृष्टि से इस देश में औद्योगिक कार्य शुरू किया। यमपि उन्होंने वार्षिक शोषण की दृष्टि से ही औद्योगिकरण का कार्य प्रारम्भ किया। सामाजिक संघटन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और यहाँ भी एक नवीन मध्यवर्गीय जेतना उत्पन्न हुई।।

- डा० रामु नाथ सिंह - मुख्य और उपसूचि पृ० ७७

बीबीबीकरण

यह काल भारत में ब्रिटिश पूँजीवाद का विस्तार का युग है। इस युग में भारत में विदेशी पूँजी काफी मात्रा में लगाई जा चुकी थी, जिसका व्याप और जहाजी सर्ज के रूप में प्रतिवर्ष ब्रिटिश को १३ करोड़ ५० लाख पौण्ड के लगभग प्राप्त होता था। इस अवधि में भारतीय उद्योगों की स्थिति अच्छी नहीं थी। सन् १९३४ में भारत में लोहा भारत की आवश्यकता का केवल तीन बीयाई होता था। दूसरी ओर यूरोपियन देश से बहुत बड़ी मात्रा में वस्तुएं भारत में जाती थी। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार दोनों ही रूप में भारतीय जनता का शोषण कर रही थी।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय में भारतीय उद्योगों में उत्पादन बढ़ा, लेकिन उसका उपयोग भारतीय जनता के हित में न होकर युद्ध के लिए किया गया। देश की जनता की जन जीवन के उपयोग की वस्तु न उपलब्ध होकर युद्ध में प्रयुक्त की गई। जिसके फलस्वरूप देश के विभिन्न भागों में काल की स्थिति उत्पन्न हो गई। देश के व्यापारी और विदेशी पूँजीपतियों ने मिल कर जनता का व्यापक शोषण किया।

- १- The Volume of British capital holdings in India was estimated at £ 1000 million in 1933 estimate of the Indian chamber of Commerce or one fourth of the total of British over seas capital investment.
- R.P. Dutt- India to day p. 9.

- २- इसके लिए कोई प्राकृतिक कारण उपलब्ध नहीं था न यह स्थिति युद्ध वारम्भ हो जाने तथा शत्रु द्वारा नाकेबन्दी कर देने का ही परिणाम थी। निश्चय ही यह मनुष्यकृत काल था और यदि समय रूढ़ि प्रयत्न किया गया होता तो कभी यह स्थिति उत्पन्न न होती।

- बीबीबीकरण और भारतीय जनता की लड़ाई

बीमार का काम

युद्ध के दौरान सामान्य स्व जीवन की उपयोगी वस्तुएं जता की नहीं मिलीं। व्यापारी वर्ग ने मुनाफा कमाने के उद्देश्य से कृषि क्भाव उत्पन्न कर दिया। समाज में क्भाव स्व क्भाव की स्थिति में भूत से लड़ने वाली व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। दूसरी ओर समाज में कैलिकता का व्यापार शुरू हो गया। इसी समय देश के चन्द प्रीतिपतियों ने जता की कमबोरियों का काम उठाकर नारियों के बिस्मों का व्यापार किया तथा नवजात बच्चों की लरीफ करीत हुई। इस कमानवीय और क्भाव ग्रस्त का जीवन में मनुष्य की नैतिक और कैलिक प्रश्नों पर सोचने की मजबूर किया। लोगों का सतीत्व और परावि पर से विश्वास उठ जाता। यह परिवर्तन आधुनिक समाज की बहुत बड़ी देन है। इस परिवर्तन ने मनुष्य की नये ढंग से सोचने के लिए मजबूर कर दिया।

भारत में सोचण, क्भाव और मुनाफाकारी की यह प्रतिक्रिया सन् १९४७ तक चलती रही जिसे शहरी स्व ग्रामीण क्षेत्र को समाज रूप से प्रभावित किया।

- १- Estimates of the number of death by famine in Bengal 1943-54 vary greatly. The department of Anthropology of the Calcutta University carried out an extensive scientific survey of sample groups in the famine areas. They arrived at the figure of about 3400000 total death by famine in Bengal.

Pt- J.L.Nehru- The Discovery of India p 527

- २- हाँ जान पड़ता है, हज्जत भी जायमी तभी रहता है, जब पेट में दो बाना पड़ता है। जान लड़कियाँ जान बहुरे और बधिक औरतें एक वक्त के भोजन के लिए अपनी हज्जत देव रही थी। कलकत्ता की सड़कों पर हज्जत बेची जा रही थी, चटगाव, नवासासी, परीसास की गलियों में हज्जत बिक रही थी, बाजारों में नुकी, झांका हज्जत बिक रही थी। बन्ध हज्जत है

उधर भारत की स्वतन्त्रता एवं समाज सुधार का प्रयास चलता रहा। हरिकन उद्धार, जाति पाति के भेदभाव को कम करने का प्रयास चल ही रहा था। समाज सुधार के साथ साथ वार्षिक समस्या भी जतनी बढ़ित थी कि भारतीय जनता उससे परितान थी। समाज में प्रचलित शोचन एवं वार्षिक विचलताओं ने प्राचीन सामाजिक व्यवस्था को भी प्रभावित किया।

संयुक्त परिवार का विघटन औद्योगिकीकरण के कारण जाति पाति के बन्धनों में शिक्षिता, समाज एवं धार्मिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह, विज्ञान के प्रभाव एवं पारम्परिक सभ्यता से प्रभावित होने के कारण नए मान्यताओं के प्रति विद्रोह की भावना इस युग में देखी जा सकती। शिक्षा एवं पारम्परिक सभ्यता के प्रभाव से उत्पन्न मिश्रित सभ्यता ने जनसाधारण को अधिक प्रभावित किया। देश की स्वतन्त्रता, ब्रिटिश सरकार से भारतीय जनता को मुक्ति कराने के उद्देश्य से भारतीय किसान और मजदूर सरकार से विद्रोह कर रहे थे।

सन् १९४२ से उत्पन्न, राजनीतिक आन्दोलन का प्रभाव समाज पर कम तक था। नाकि विद्रोह, भारतीय जनता का दमन, शोचन आदि का अन्त १५ अगस्त सन् १९४७ को सत्ता परिवर्तन के साथ हुआ।

स्वतन्त्रता के बाद भारत की सामाजिक परिस्थिति

भारत की स्वतन्त्रता मिलने के साथ साथ ही सत्ता में परिवर्तन आया जिसका प्रभाव भारतीय समाज पर तत्काल ही पड़ा। भारत में नयी नयी व्यवस्था की योजना की गई। भारतीय संविधान में

महत्वपूर्ण घोषणा की गई, जिससे समाज में स्वतंत्रता एवं समानता स्थापित हो सके। अतः भारत को धर्म निरपेक्ष गणराज्य घोषित किया गया। सबको समानताका अधिकार दिया गया।

पंचवर्षीय योजनाएं

देश के विकास के लिए मार्च १९५० में प्रधानमंत्री पी० नेहरू की अध्यक्षता में योजना आयोग का गठन हुआ। सन् १९५१ में आयोग ने अस्सीवें पंचवर्षीय योजना प्रस्तुत की। कृषि और वन्य जीवों की कमी को पूरा करने के उद्देश्य से प्रथम योजना में जोर दिया गया। इसका परिणाम उत्पादन बढ़ रहा, वन्य उत्पादन में वृद्धि हुई। सन् १९५६ से १९६१ के बीच द्वितीय योजना लागू कर उद्योगों की स्थिति सुधारने पर बल दिया गया। उत्पादन और सीमेंट के उत्पादन में विशेष वृद्धि हुई, लेकिन बेकारी की समस्या बनी रही। सन् १९६२ में तृतीय पंचवर्षीय योजना लागू हुई जो आपात्कालीन स्थिति की घोषणा के कारण बीच में रुक गयी। इसी बीच देश में लगातार दो वर्षों तक वर्षा के अभाव में सूखा और अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गयी। स्वतन्त्रता के बाद भारत को विदेशी सहायता लेकर विकास करने का प्रयास किया गया। भारत की सहायता के रूप में अमेरिका से पी० स्ल० ४८० क्लॉज जो सन् १९६५ में पाकिस्तान युद्ध के दौरान उच्च सहायता बन्द हो गई। स्वतन्त्रता के बाद मिश्रित वर्ग व्यवस्था चलती रही जिसके फलस्वरूप देश में स्वतन्त्रता के बाद भी विदेशी पूँजी के द्वारा भारत का लोभण होता रहा।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद स्थापित होने के बाद ग्रामीण क्षेत्र में जमींदारों, भूमिहीन किसानों और भूस्वामियों का निर्माण हुआ तो दूसरी ओर कृषक, मजदूर और छोटे व्यापारियों के साथ साथ मजदूरों का निर्माण हुआ था। शहरी जीवन में प्रजीपति, उद्योगपति, व्यापारिक एवं मध्य विधीय वर्ग का निर्माण हुआ। इसी समय देश में मध्य वर्ग के लोगों जैसे- वकील, डाक्टर, छोटे व्यापारियों का निर्माण हुआ था। स्वतन्त्रता के बाद भूस्वामी भारतीय संविधान और शासन तन्त्र से जुड़ गये। इसी क्षेत्र में प्रजीपति, छोटे एवं बड़े उद्योगपति, व्यापारी वर्ग ने नयी शासन पद्धति एवं सरकार से जुड़ कर भारतीय समाज के निम्न और मध्यवर्ग का शोषण करना शुरू कर दिया। यद्यपि भारतीय स्वतन्त्रता के साथ ही जमींदारी प्रथा तोड़ दो गई, लेकिन भूमि स्वामी, ग्रामीण क्षेत्र के नेताओं एवं मजदूर एवं उद्योगपति वर्ग ने छोटे किसानों एवं मजदूरों का शोषण किया। सरकारी संस्थानों एवं सरकारी वस्तुओं का उपयोग अपने हित में करना शुरू कर दिया। भारत में मध्यवर्ग की स्थिति बिगड़ने लगी और नया प्रजीपति वर्ग उभरने लगा। स्वतन्त्रता के बाद नयी सरकार ने इसकी संरक्षण प्रदान किया। भारत में

1- In agrarian areas these were principally (1) Zamindars created by British government (2) Absentee Landlords (3) tenants under Zamindar's and absentee landlords (4) the class of peasant proprietors divided in to upper middle and lower states (5) agricultural labourers (6) the modern class of merchants and (7) the modern class of moneylenders.

-A.R. Desai- Social background of Indian Nationalism p.176

2- A.R.Desai- Social Background of Indian Nationalism p.176

3- 'कृषि परमाधारित भारत की वर्ग व्यवस्था प्रजीपदी वर्ग व्यवस्था का रूप धारण करने लगी।'

- डा० सुंदर पाठ सिंह- हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना पृ० ६२

जीविक विकास की कता की आवश्यकताओं के अनुक्रम न होकर इन उद्योग-पतियों के सामान्य के आधार पर हुआ जिससे इनकी अधिक लाभ हुआ । ग्रामीण क्षेत्र में भी विकास कार्य आवश्यकता के अनुक्रम न होकर राजनीतिक प्रभाव के आधार पर होने लगा । ग्रामीण वर्ग व्यवस्था पर भ्रष्टाचारों एवं नेताओं का अधिक प्रभाव पड़ने लगा, जिसके फलस्वरूप रेत मजदूर एवं छोटे किसानों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति बिगड़ने लगी ।

ग्रामीण क्षेत्र में वर्ग संघर्ष शुरू हो गया ।

नयी विचारधारा के लोगों ने प्राचीन समाज व्यवस्था के प्रति विद्रोह कर दिया । समाज में राजनीतिक संगठनों का निर्माण होने लगा । जातिवाद, धर्म और भाषा के नाम पर राजनीतिक भगड़ा हुआ हुआ । ग्रामीण क्षेत्र के आर्थिक राजनीतिक विकास न होने के कारण इस क्षेत्र से जनता भाग कर शहर में जाने लगी ।

शहरी वर्ग व्यवस्था में बड़े उद्योगों का प्रभुत्व होने के कारण छोटे उद्योग धर्मों की वित्तीय साधनों के अभाव में इनका अस्तित्व संकट ग्रस्त हो गया । सरकार ने बड़े उद्योगों को अधिक संरक्षण प्रदान किया । जिसने इन उद्योगपतियों ने गरीब लोगों, मजदूरों एवं समाज के कम-जोर वर्ग का अधिक शोचन किया । अतः समाज में एक और धन-कुबेरी, नव उद्योगपतियों, व्यापारी और साहूकारों का वर्ग राजनीति पर होने लगा तो दूसरी ओर मध्यमवर्गीय कुण्ठाओं एवं मानसिक संक्रांति, निराशाओं एवं अकाम्यता का शिकार हो गया । अतः स्वतन्त्रता के बाद के समाज में एक और विजापन, क्लेशों, से उत्पादन में प्रतियोगिता शुरू हुई जिसने मनुष्य को धन कमाने की भीषण प्रतियोगिता की ओर भाँके दिया । जहाँ

एक ही सिद्धान्त की प्रधानता रही वह थी वर्क-वैद्य की प्रधानता ने मानव मूल्य, नैतिक एवं मूल्य मान्यताओं को लुप्त कर दिया। इसलिए साहित्य में, प्रेम, नैतिक मान्यताओं के प्रति विद्रोही और महानगरी की सामाजिक परिस्थितियों का भाव आधुनिक व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रकट है।

आधुनिक समाज व्यवस्था ने समाज एवं साहित्य के साथ साथ आधुनिक पारिवारिक जीवन को भी प्रभावित किया है। आधुनिक संस्कृति ने नारी जीवन को भी प्रभावित किया है।

स्वतन्त्र भारत में नारी की स्थिति

भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ-साथ ही नारी का सामाजिक विकास हुआ। स्वतन्त्रता आन्दोलन में नारी भी राजनीति में भाग लेने लगी थी। स्वतन्त्रता के बाद भारतीय संविधान से नारी और पुरुष को समान अधिकार प्राप्त होने पर नारी तेजी से आगे बढ़ी। आधुनिक युग में नारी भी पुरुषों के समान अपनी सामाजिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व को समझने लगी। इसकी प्रतिक्रिया यह हुई कि समाज में पारिवारिक जीवन में तनाव का वातावरण उत्पन्न हो गया।

१-“ युवा पीढ़ी की दृष्टि में आज का संसार एक पागलताने की तरह है, जहाँ जातीय अभिमान, धार्मिक भेदभाव, राष्ट्रीय अहंकार आदि ने मानव जाति की मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से विभक्त कर रखा है। ”

- डा० लक्ष्मी सागर वाज्जिय : द्वितीय महायुद्ध और हिन्दी साहित्य

का इतिहास पृ० ३७

नारी ने आधुनिक युग की शिक्षा ग्रहण की और समाज में अपनी अधिकारों के लिए सर्व गृहस्थ जीवन की उपेक्षा करती शुरु कर दी। परिणामतः जहाँ परिवार में विघ्नमत्तारें जाँहें वहीं नारी की चेतना और उसके व्यक्तित्व में विकास की भावना भी उभरी।

आधुनिक युग की विद्रोही पीढ़ी

आज की बदलती हुई परिस्थिति का प्रभाव युवा वर्ग पर भी पड़ा। द्वितीय विश्व युद्ध के बादक संसार की युवा पीढ़ी वैचारिक बौद्धिक क्रान्ति, उत्थ-पुत्थ और विघटनकारी परिस्थितियों से गुजरी। इसलिए वह पुरानी मान्यताओं को स्वीकार नहीं करती है। आधुनिक युग का नवयुवक पुरानी परम्पराओं और राजनीति का विरोध करता है। युवा पीढ़ी की दृष्टि में सम्पूर्ण संसार एक जाँह और सम्पूर्ण मानव एक ही समुदाय है जिसमें भूत और यौन की भावना ही प्रमुख है।

युवा पीढ़ी यौन सम्बन्ध की परम्परागत दृष्टिकोण से नहीं देखती आज के ई युवक का जीवन सूत्र है, " जाँह एम यौन एण्ड जाँह साऊ दू लिख माँह एज " और आज के विज्ञान और टेक्नोलॉजी के युग में वह एक ऐसी दुनिया बनाने में संलग्न है जिससे पुरानी पीढ़ी अपरि-
क्षित है।^१

स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान भारत में राष्ट्रीय

१- डा० लक्ष्मी सागर वाज्जिय - द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य
का इतिहास पृ० ३६

भावना उत्पन्न हुई थी, वह धीरे धीरे खींचा जा रही थी। लेकिन स्वतन्त्रता के बाद अन्तरराष्ट्रीय भावना का विकास भी बहुत तेजी से हुआ। भारत का अन्तरराष्ट्रीय जगत् से व्यापारिक सम्पर्क बढ़ा, भारत में तीव्र गति से औद्योगिकीकरण हुआ।

भारत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो रहा था। उसी समय यूरोपियन देशों में लोग विज्ञान और औद्योगिकीकरण से दुःखी होकर शान्ति की तलाश में भटक रहे थे। पश्चात्त्य जगत् की उन्मुखित प्रेम एवं सामाजिक परम्पराओं के प्रति विद्रोह की भावनाओं का प्रभाव यहाँ पर भी पड़ा। भारत में स्वतन्त्रता के बाद नारी द्वारा घर की कारखानेवाली पार करके समाज में पुरुषों के साथ साथ कार्य शुरू कर देने के कारण दोनों में सम्पर्क बढ़ा बहुत सी सामाजिक बुराईयाँ दूर हुईं जैसे अन्तर्जातीय विवाह, उन्मुखित प्रेम और परस्पर एक दुसरे को सम्मान देने के भाव का विकास हुआ।

स्वतन्त्रता के बाद भारतीय समाज में तेजी से सामाजिक धार्मिक एवं राजनीतिक परिवर्तन आये। भारतीय समाज की रूढ़ मान्यताएँ तीव्र गति से बदल गईं। धार्मिक एवं नैतिक मान्यताओं के स्थान पर यथार्थवादी नीतिक मान्यताओं की स्थापना हुई। पश्चात्त्य जगत् से भारत का सीधा सम्पर्क हो जाने के कारण यहाँ का प्रभाव भारत के समाज पर पड़ा और भारतीय प्रभाव पश्चात्त्य समाज पर पड़ा। इस प्रकार से परस्पर सहयोग और मित्रता की भावना का अन्तराष्ट्रीय जगत् में विकास हुआ।

द्वितीय कथाय

प्रातिवादी काव्य में चित्रित समाज

साहित्य में वाद ऐतिहासिक आवश्यकता के प्रतीक होते हैं, ये राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न और विकसित होते हैं। तत्कालीन परिस्थिति के फलस्वरूप ये नवीन वान्दोलन जन्म लेते हैं, जिसका गहरा प्रभाव साहित्य पर पड़ता है।

प्रथम महायुद्ध के पश्चात् राष्ट्रीय वान्दोलन ने देश में जन-जाग्रति उत्पन्न की, इस जागृति की सफलता को देखकर दलित और शोषित वर्ग में वात्म विश्वास की भावना उत्पन्न हुई तथा देश में नवीन परिस्थितियों के जन्म और उदय-पुनरुदय के परिणामस्वरूप हमने देश और साहित्य में नयी चेतना का विकास हुआ, जिसे मार्क्सवादी चेतना कहते हैं। इस चेतना के अनुसार समाज के शोषित और दलित वर्ग का चित्रण किया जाने लगा। उक्त: "प्रातिवाद एक जीवन दर्शन और जीवन विज्ञान की प्राप्ति और गहराई को लेकर अवतीर्ण हुआ है।" इसलिए प्रातिवादी साहित्य का जीवन जीवदुर्लभ मार्क्स पर आधारित दृष्टात्मक भीतिवाद है। प्रातिवादी साहित्य पूँजीवाद और सामन्तवाद का विरोध करता है। इसलिए केवल

१- "जब से भारत में मार्क्सवाद का प्रभाव पड़ा है, तब से साहित्य में प्रातिशील साहित्य की पैदाइश हुई है।"

- डा० रणिय राय : प्रातिशील साहित्य के मानदण्ड पृ० ६०

२- केवल १ प्रातिवाद क्यों ? ईश १६४३ पृ० ५४७

३- "वाच प्रातिवाद का विरोध नये वादधियों, नई अवस्थाओं नये विचारों और नई वाक्यांशों से विरोध है। प्रातिवाद समाज में शोषण की व्यवस्था को समाप्त कर देणी रहित जन समाज की स्थापना पर विश्वास करता है।"

जी ने ^१ " प्रगतिवाद की मार्क्सवाद का साहित्यिक मोर्चा या क्रान्त कहा है। ^२ जबस कथवा प्रगतिवाद के अन्य लेखक और वाक्पथक काव्य में चित्रित व्यक्तिवादी चेतना का विरोध करते हैं। इनके अनुसार साहित्य कथवा काव्य व्यक्ति के सुख दुःख के स्थान पर समाज और देश के यथार्थ चित्रण पर विशेष बल देते हैं। इसलिए प्रगतिवाद का अर्थ है साहित्य का सामाजीकरण ^३। अतः प्रगतिवादी कवि समाज की प्रधानता को स्वीकार करता है। इसलिए प्रगतिवादी काव्य का विषय भी समाज है। प्रगतिवाद साहित्य (काव्य) मार्क्स द्वारा निर्धारित वर्ग व्यवस्था पर चित्रित समाज है। समाज की रचना उत्पादन और पूँजी पर आधारित है। इसलिए समाज में पूँजी का समान वितरण न होने के कारण समाज में शोचक और शोणित वर्ग बन गये हैं।

प्रगतिवाद की साहित्यिक मान्यताओं के अनुसार

" साहित्य और कला सर्वहारा (शोणित) वर्ग का पक्ष कहे उनके जीवनीस्थान के साधन शास्त्र बनें । फ्रान्सीसी पूँजीवाद संस्कृति का शत्रु है इसलिए उसे उसके समस्त परिवार साम्राज्यवाद और पाशववाद (फासिज्म) के साथ विशेष किया जाय । " अतः प्रगतिवादी साहित्य में व्यक्ति द्वारा व्यक्ति एवं वर्ग द्वारा वर्ग के शोषण को दूर करने के लिए किये जाने वाले वर्ग संघर्ष को चित्रित किया गया है। अतः प्रगतिवादी काव्य जन-साहित्य और जन-कला द्वारा जन-सम्पर्क और जन संस्कृति का निर्माण कहे समाज में क्रान्ति की पृष्ठभूमि तैयार करती है। इसलिए यह पद्धति साहित्य में मार्क्स-

१- जबस : प्रगतिवाद क्यों ? संस १९४३ पृ० ५४७

२- पृ० ५४७

३- डा० सुधीन्द्र : हिन्दी कविता का क्रान्ति युग पृ० ४४३-४४५

वाद की संतति के रूप में स्वीकार की जा सकती है।

डा० विश्वम्भर मानव के अनुसार " वाज की प्रातिवादी कविता के पीछे भी एक दार्शनिक वाद काम करता है, " राज-नीति में जो मार्क्सवाद है, साहित्य में वही प्रातिवाद है। प्रातिवाद मार्क्सवाद का साहित्यिक रूप है। " प्रातिवाद समाज के वैज्ञानिक विश्लेषण पद्धति पर आधारित होने के कारण इसमें दृढात्मक भौतिकवादी शक्तियाँ को उद्घाटित करता है। इसलिए प्रातिवादी कवि भी समाज की इस प्रक्रिया का चित्रण अपने काव्य में करते हैं। इसलिए प्रातिवादी काव्य में वर्ग संघर्ष वार्थिक विषमता और विद्रोह आदि की भावनाओं का चित्रण हुआ है।

मार्क्सवाद के अनुसार- इस भौतिक जीवन की प्रमुख संस्था समाज है, जिसका आधार है कार्य। ----- मार्क्स के अनुसार आधुनिक समाज व्यवस्था का मूल प्रोत्त कार्य है जिस पर सभी सामाजिक व्यवस्थाएँ केन्द्रित हैं। इसलिए मार्क्स ने इस व्यवस्था में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से वार्थिक शोषण, पूँजीवादी कार्य व्यवस्था से उत्पन्न सामाजिक असमानताओं और वर्ग संघर्ष पर अधिक बल दिया है। इन सभी का प्रभाव प्रातिवादी काव्य में देखा जा सकता है। अतः प्रातिवादी काव्य में पहली बार समाज के उपेक्षित पात्रों का चित्रण हुआ है।

अतः प्रातिवादी साहित्य मार्क्सवाद का सांस्कृतिक प्रगट माना जा सकता है। क्योंकि यह नयी समाज व्यवस्था के लिए समाज-

१- सुमित्रानन्दन पन्त - पृ० ६८

२- डा० नगेन्द्र : आधुनिक कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ पृ० ६६

३- " प्रातिवाद की संस्कृति प्रगट का एक महत्वपूर्ण शस्त्र है जो पूरी तरह उसके दृष्टिकोण को अपना कर चلتा है। "

- स्वयं प्रकाश उपाध्याय - सौमित्र " प्रातिवाद " पृ० १५

वादी संघर्ष का पैघ प्रदर्शन करता है। जिस प्रकार राजनीति के क्षेत्र में मार्क्सवादी चेतना समाज में क्रान्ति और क्रांती करना करती है, उसी प्रकार प्रातिवाद काव्य के क्षेत्र में यही कार्य करती है। अतः यह सांस्कृतिक प्रान्त है, इसलिए साहित्य में प्रातिवादी काव्य का व्युत्पत्ति सन् १९३६ के बाद की बदलती हुई राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के बीच हुआ है।

जैसा कि हम ऊपर संकेत कर चुके हैं कि भारत की राजनीति के क्षेत्र में मार्क्सवादी चेतना का विकास ही हुआ था। देश में इसी क्रान्ति का प्रभाव भारतीय कवियों पर पड़ने लगा था। भारत के राजनीति और काव्य पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। जार्ज मेट ने सन् १९१४ में प्रथम लेख, "हमारे गरीब किसान और मजदूर" शीर्षक से लिखा है। इसके बाद जुलाई १९१५ लेखी की बुरी दशा और कृषक साथ के साथ अधिकांश देश में जमीन के ठेकेदार राजे महाराजे, तबलुकेदार और जमींदार हैं। गवर्नमेंट ने जमीन उन्हीं को दे रखी है। बदले में वह उनसे माल गुजारी लेती है। ये ठेकेदार मनमाने लगान पर जमीन दूसरों को जोतने बोन के लिए देते हैं :

कृषक कथा - ६

कृषि ही थी तो विभी । बैल ही हमको करते
करके दिन भर काम शाम को चारा चरते
कृषि भी है किसी भाँति दग्धोदर भरते
करके अन्नीत्पन्न हमी हैं, भूखी मरते ॥ २

इसके बाद कृषक दशा पर विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लेख लिखे जाने लगे- जैसे-

१- जार्ज मेट निबन्ध - हमारे गरीब किसान मजदूर सरस्वती जू० १९१४

पृ० ३४१

२- जार्ज मेट निबन्ध- लेखी की बुरी दशा - सरस्वती जुलाई १९१५ पृ०

साप्ताहिक प्रकाशक कर्म के तहत प्रकाशित हुए। सन् १९१८ के बाद हिन्दी काव्य में बदलती स्वर सुनाई देने लगे। सन् १९३६ में सत्यजित में प्रातिशील लेखक संघ की स्थापना के साथ ही साहित्य के क्षेत्र में शान्तिकारी परिवर्तन आया।

काव्य के क्षेत्र में आयावादीयुग की कल्पना और भावुकता को छोड़कर प्रातिवादी कवि समाज के यथार्थ से जुड़ गये। युग की बदलती परिस्थिति के अनुरूप कवियों के भाव भी बदले। सुमित्रानन्दन पंत के अनुसार “ इस युग में जीवन की वास्तविकता ने जैसा उग्र आकार धारण कर लिया है, उसने प्राचीन विश्वासों में प्रतिष्ठित हमारे भाव और कल्पना के मूल हिल गये हैं। इस युग की कविता स्वप्नों में नहीं पल सकती उसकी जड़ों में अपनी पोषण सामग्री ग्रहण करने के लिए कठोर धरती का आश्रय लेना पड़ रहा है। ”

वतः हिन्दी साहित्य की पुरानी साहित्यिक परंपरा आज के युग में आकर कमजोर पड़ने लगी। युग की बदलती हुई परिस्थिति और राजनीतिक प्रभाव ने इस युग के समाज एवं कवियों को अधिक प्रभावित किया, जिसके फलस्वरूप आयावादी युग के ही प्रमुख कवियों ने आयावादी परंपरा को छोड़ कर आधुनिक युग की बदलती हुई नवीन सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना से जुड़ कर नये ढंग से काव्य सृजना की। इन कवियों में सुमित्रानन्दन पंत, निराला और रामधारी सिंह दिनकर, भगवतीचरण वर्मा आदि का नाम उल्लेखनीय है।

१- रूपाम - प्रथम बार जुलाई सन् १९३८ (सम्पादकीय)

२- “ युगान्त में मैं निश्चय रूप से इस परिणाम पर पहुँच गया था कि मानव संस्कृति को पिछला युग अब समाप्त होने की है और नवीन युग का प्रादुर्भाव अवश्यम्भावी है। ”

३- सुमित्रानन्दन पंत : युगान्त, युगवाणी आदि
निराला : कैला, नये पत्ते, परिमल, ककामला, अनामिका आदि।

डा० नामवर सिंह के अनुसार, "झायावाद के बाद उसकी प्रतिक्रिया में जो काव्य प्रवृत्ति उत्पन्न हुई वह प्रातिवाद कहलायी।" साहित्य में झायावादी काव्य की कल्पना, वादर्श और रोमानियत को छोड़ कर जीवन और सामाजिक यथार्थ को चित्रित करने का प्रयास किया। इसलिए प्रातिवादी काव्य में समाज के वार्तिक रूप को चित्रित किया गया है। अतः हिन्दी काव्य में पहली बार समाज की महत्वपूर्ण दिष्टि देने लगा। प्रातिवादी युग में वाकर समाज का वार्तिक स्वरूप अधिक स्पष्ट हुआ।

प्रातिवादी काव्य में चित्रित अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय भाव

इस युग में भारतीय जनता अपनी स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रही थी। गंधीवादी सिद्धान्त के अनुसार देश की स्वतन्त्रता का प्रयास किया जा रहा था। अतः हिन्दी काव्य में गंधी और गंधीवादी सिद्धान्त पर बहुत लिखा जा रहा था। मास्नलास चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुमित्रानन्दन पन्त आदि की कविताएँ इस युग की प्रमुख कविताएँ हैं :

गंधीवाद जगत में आया

तै मानवता का नवमान

सत्य अहिंसा से मनुजीवित

नव संस्कृति करने निर्माण ॥ ५

१- डा० नामवर सिंह- आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ पृ० ६६

२- मास्नलास चतुर्वेदी- हिमतरंगिणी पृ० ५१

३- सियारामशरण गुप्त - वाद्वर्ग पृ० ४१

४- बालकृष्ण शर्मा नवीन - विप्लव गायन पृ० ४२६

५- सुमित्रानन्दन पन्त - युगवाणी पृ० ४७

निराला के काव्य में भी राष्ट्रीय भावना से प्रेरित रचनाएँ देखी जा सकती हैं। यद्यपि निराला ने सिद्धान्तों का समर्थन नहीं किया है, बल्कि राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित होने के कारण उन्होंने राष्ट्रीय कविता लिखी है :

“ बन्दू फल सुन्दर नव हृन्द नवल स्वर गीत
जनि, जक जनि जनि जन्मूमि पाये ।
जागे नव बम्बर मर, ज्योति स्तर वासे
उठी स्वरोर्मियाँ पुसर दिक् कुमास्त्रि फिख ख ॥१

प्रगतिवाद के अन्य कवियों में भी ब्रिटिश राज्य के प्रति विद्रोह और राष्ट्रीय प्रेम की भावना मिलती है। सुमित्रानन्दन पन्त गांधी के सत्य और अहिंसा का समर्थन करते हैं, वहीं रामधारी सिंह दिनकर ऐसे कवि विद्रोह और आन्ति की बात करते हैं :

“ प्रभु तव पावन नील गगन तल
विदलित वमित निरीह निवल दल
मिटि राष्ट्र, उजड़े दल्लिज
बाह १ सम्पूर्ण बाज कर रही
असहस्यता का शोणित शोणन ॥१

भारत में जिस समय स्वतन्त्रता आन्दोलन चल रहा था । उसी समय कवियों का ध्यान देश की वार्त्तिक स्थिति की ओर भी गया और सम्पूर्ण शासन को देश के शोणन पर आधारित मानकर उसका

१- सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला - गीतिका पृ० ८३

२- रामधारी सिंह दिनकर : अङ्गवास पृ० ५

विरोध करना शुरू कर दिया । गांधी का सत्य और अहिंसापरक ढंग से स्वतन्त्रता प्राप्ति करने में असफल रहने के कारण गांधीवादी सिद्धान्तों का विरोध करना शुरू कर दिया । निराशा की कविता में अभिव्यक्त भाव दर्शनीय है :

“ गांधीवादी जाये ,
कंग्रेस में टूटे के ,
देर तक गांधीवाद बचा है, सम्मगते रहे ।
देश की भक्ति से,
निर्विरोध शक्ति से,
राज अपना होगा,
जमींदार साहूकार अपने कहलायेंगे ॥ ” १

इसी प्रकार के भाव इस कविता में देखे जा सकते हैं :

चलो किसानों कंग्रेस के मंदिर में ही पूजन है
वहीं मिलेंगे स्वराज देवता उनका स्थापन है,
वहीं पे चलकैङ्ग देवी कितने तो ऐसी पण्डा है
मतलब की सारी करते अपना छिपाये मण्डा है ॥ ” २

अतः राजनीति के साथ साथ काव्य में भी गांधीवादी सिद्धान्त का विरोध करना शुरू कर दिया और मार्क्सवादी सिद्धान्तों को स्वीकार करना शुरू कर दिया । पन्त “मार्क्स के प्रति” नामक कविता द्रष्टव्य है :

१- सूर्यकान्त त्रिपाठी निराशा - नये पौ पृ० ५८

२- का० रामकैर : रामणीपाल सिंह बीहान (दो किसान कवि) हंस

अगस्त सन् १९४३

धन्य मार्क्स । फिर तमज्जन्म पूर्वी के उदय सितर पर
तुम त्रिनेत्र के जान चक्षु से प्रकट हुएप्रसन्नकर ॥ १

हिन्दी काव्य में मार्क्सवादी सिद्धान्तों के प्रभाव बढ़ने के साथ ही एक नयी दृष्टि का विकास हुआ । गांधी के राजनीतिक प्रभाव की होड़कर मार्क्सवादी प्रभाव बढ़ा । इसका चित्रण इस रूप में -

“ हम किसानों का वस्त्र शस्त्र
एक रीटा सा डण्डा है ।
जिस पर भेर हूनों का रंगा
एक ताल सा झण्डा है ।
मंदिर को दूषित करता पाशाण
बड़ा एक रीटा है ।
इस फोडे जमींदारी को अब
तोड़न हार हथौड़ा है। ” २

इस युग में आकर व्यक्तिवादी चेतना के स्थान पर सामाजिक चेतना का प्रभाव बढ़ने लगा । गांधीवादी सत्याग्रहवीर वान्दीतन के स्थान पर मजदूर वीर किसानों ने ताल झण्डे के नीचे स्नान होकर कार्य किया ।

इस में होने वाले परिवर्तन ने भारतीय जनता की नयी दृष्टि प्रदान की । इसका प्रभाव हिन्दी कविता में नकी दुनिया का नवा वरमान नामक कविता में द्रष्टव्य है :

१- सुमित्रानन्दन पंत - युवावर्णि पृ० ४४

२- का० रामकौर - दी किसान कवि : लेखक रामगीपाल सिंह चौहान

ईस (अगस्त सन् १९४३) पृ० ८४३

“ वायु में प्राण का कम्पूचिम्प है,

वर्ष उसमें ही प्रसन्न रहित ॥

उसमें ही अटल अनुरक्ति पै मैं हुई हुए

जीवन कम्प की धी फूँडिया ।

मद सौरभ से करे रूजित शुचि हृदय के गीत का वाकाश ॥ १

अतः स्व. आनन्ति ने राजनीति के साथ साथ साहित्य को भी प्रभावित किया है। स्व. ने हिन्दी कविता को नयी दृष्टि प्रदान की है।

स्वी. आनन्ति

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र पर स्व. का प्रभाव पड़ने लगा था । भारत के राजनीतिक एवं सामाजिक दोनों क्षेत्रों पर स्वी. विचारधारा का प्रभाव पड़ा । भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के असफल प्रयास एवं गान्धी जी के नेतृत्व में होने वाले सत्याग्रह और गान्धीसमर्थों ने भारतीय जनता को निराशा-पूर्ण स्थिति में पहुँचा दिया , तब भारत के नवयुवकों ने सत्याग्रह के स्थान पर आक्रान्तिकारी कार्य करना शुरू किया । उस समय भारतीय जनता के सम्मुख स्वी. जनता का उदाहरण था जिससे भारतीय जनता प्रेरणा ग्रहण कर रही थी ।

भारत में राजनीति एवं साहित्य में मार्क्स का साम्यवादी विचारधारा तेजी से बढ़ने लगी जिसका प्रभाव हिन्दी के कवियों पर पड़ने लगा । जैसे रामधारी सिंह दिनकर की यह कविता :

१- अन्तः कुमार पाण्डाण- नयी दुनिया का नयावर्मान पृ० ५७

‘ हंस ’ जनवरी ६ सन् १९४७

“ जय विधायक वरुणाब्धि की ।

वरुण देश की रानी ।

स्वत कुसुम धारणि जगत्तारणि जय नव ।

शिव भवानी ।

वरुण विश्व की काली जय हो

सास सितारों वाली जय हो

दक्षिण कुमुदा विषण्ण मनुज की

शिक्षा रुद्र भक्तवाली जय हो

जग ज्योति जय, जय मविष्य की राह दिखाने वाली

जय समत्व की शिक्षा मनुज की प्रथम विजय की साक्षी ॥ ” १

स्व की शान्ति का अभिनन्दन ” सुमित्रानन्दन पन्त ”

ने इस प्रकार से किया है :

“ स्वत शान्ति के शोणित के सागर से उठकर

बर्फ रहा है लोहिताक्ष नक्षत्र नवोदित ।

नव्य लोक वह जिसके त्रैणि मुक्त समस्त में

विचरण करती वर्गहीन मानवता निर्भय

नव शोणित से रूपित नव शिक्षा से जागृत

विगत विषेर्षी, घृणित निषेर्षी से विमुक्त मम ॥ ” २

डा० राम विहास शर्मा के अनुसार ” गिरिजाकुमार

माधुर उन कवियों में हैं जिनका मोक्ष युद्ध और युद्धोत्तर काल की विभीषिका

१- रामधारी सिंह दिनकर - सामधनी - (दिल्ली और मास्को) पृ० ७५७

२- सुमित्रानन्दन पन्त- रक्त शिखर पृ० ३५

से क्षीण नहीं हुआ । युद्ध काल में जनता के नये राज्य सोवियत भूमि में उन्होंने विश्वास नहीं छिगने दिये । हिटलर और सोवियत जनता की लड़ाई में एक की हार और दूसरे की जीत निश्चित थी :

एक एक स्त्री की छाती
है अबिय स्तालिन ग्राव ।
जहाँ जर्मनिक रावण की
हार ऐसी युग युग याव ॥ १

भारत कवियाँ ने इस की छान्ति मजदूर और किसानों की जीत बताकर उससे प्रेरणा ग्रहण की । डा० शिव मंगल सिंह 'सुम्न' की यह कविता बर्लिन जब नजदीक है :

'लात फीव ने लात लून से वाज काहें लीक है ।
मास्को की तो बातें होड़ी बर्लिन जब नजदीक है।
जब जन गढ़ के सिंह द्वार पर बजा युद्ध का डंका ।
हिटलर की जर्मनी जल उठी ज्यों सोने की लंका ॥ २

एसी प्रकार नरेन्द्र शर्मा ने इस छान्ति का चित्रण मजदूर और किसान के रक्त के रूप में किया । नरेन्द्र शर्मा की कविता में जहाँ राष्ट्रीय चेतना का स्वर गांधीवादी रहा है वहाँ उन्होंने इस की छान्ति का चित्रण डाल के रूप में किया है :

१- लेख - गिरिजाकुमार माधुरा पृ० ५५० ईस पूर्व सन् १९४७

२- डा० शिव मंगल सिंह सुम्न : बर्लिन जब नजदीक है ' पृ० ६

ईस : सितम्बर १९४३

“ लास लस है दास साधियाँ सब मजदूर किसान की
 बाज वहाँ भी बाज लगी है कौन बचेगा धरती पर ?
 लास फाँज जो जीत गयी, यह दुनिया तस्वीर बनेगी
 दुनिया के बरमानों की । ”

जहाँ हिन्दी कवियों ने लस क्रान्ति का चित्रण
 किया है वहीं पर चीन का भी प्रभाव लस रूप में स्वीकार किया है :

“ पाँच सात से तोपों जागे सीना ताने चीन लड़ा है
 विश्व क्रान्ति का किला सोवियत लस गर्व से उधर
 चीन सागर तक से पूछी बाजाबी की कीमत क्या है ?
 बोल्गा की धारासे पूछी लोक युद्ध की ताकत क्या है ? २

लस की क्रान्ति ने भारतीय कवियों और राजनीतिज्ञों
 को नये ढंग से सोचने का प्रयास किया । लस क्रान्ति का प्रभाव सामाजिक
 क्षेत्र पर अधिक पड़ा है। गांधी के सत्याग्रह और असहयोग बान्दीलन को
 बौद्ध कर क्रान्ति और विद्रोह का रास्ता चुन लिया । लस कवियों की
 रचना में ध्वंसात्मक स्वर अधिक सुनाई पड़ता है। लस की क्रान्ति ने गांधीवादी
 सिद्धान्त को चुनौती दी, लसका प्रभाव भारतीय राजनीति पर पड़ा ।

लस ने राजनीति के साथ सामाजिक व्यवस्था को भी
 प्रभावित किया है। इसलिए हिन्दी कविता में सामाजिक अर्थ व्यवस्था को
 अधिक गहराई से चित्रित किया गया है।

१- रमेश सिन्हा : हिन्दी में फासिस्ट विरोधी साहित्य : ईस पृ० ८३३

अगस्त १९४३

२- मंगला मोहन : वहीं (लेख) ईस पृ० ८३३ अगस्त १९४३

द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव

द्वितीय विश्व युद्ध आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण घटना है, जिसका प्रभाव सम्पूर्ण विश्व की राजनीति पर पड़ा है। अतः भारतीय समाज भी इससे बिना प्रभावित हुए न रह सका। प्रातिवादी कविता में इस भयंकर युद्ध और विनाश सीला का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है :

“ धनी दे रहे सकल सर्वस्व, तुम्हें इतिहास दे रहा मान ।
सहस्रों बलशाली सार्वभौम चरण पर चढ़ा रहे हैं प्राण ।

० ० ०

हिमालय रक्त की लहर से लहता, हिन्द सागर से लहता प्रवाल ।
देश के दरवाजे पर रौज लड़ी होती उष्ण से मात ॥

० ० ०

कि जाने तुम वाकी किस रौज बजाते नूतन ठुम्र विधाण ।
किरण के रथ पर ही वासीन लिये मुट्ठी में स्वर्ण विहान ॥१

इसके साथ साथ जहाँ कवियों का एक समूह फासिस्टों और साम्राज्यवादी लोगों का विरोध कर रहे थे, तो दूसरी ओर हिन्दी के कवि इस ओर लाल सेना की प्रशंसा कर रही थी। जैसे सुमन की कविता “ बास्को अब भी दूर है ” में सोवियत सेनाओं का निब्रण है तथा रागिय राघव की प्रस्तुत कविता इस संदर्भ में द्रष्टव्य है :

नभ से भीषण बम गिरते हैं, उठी साक्ष्यों से आवाज
वह आवाज कि दुनिया गुँजी- स्तालिनग्रेड ज़िन्दाबाद ॥

द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव भारत में राष्ट्रीय चेतना के विकास में अधिक सहायक हुआ है। जैसे सोहन लाल द्विवेदी की कविता " बाज युद्ध की बेला " में युद्ध वीर गांधी का प्रभाव एक साथ प्रस्तुत किया गया है :

“ बाज युद्ध की बेला

बुझा मशाल न तैल डाल लो

बस्त्र शस्त्र अपने संभाल लो

हैं तीर्थ हूँकार भर रही

बापू कहाँ मौला

बाज युद्ध की बेला । ” १

हिन्दी काव्य में द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव समाज के साथ साथ भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के पृष्ठभूमि पर अधिक पड़ा है। इस युद्ध की साम्राज्यवाद और साम्यवाद के रूप में भी देखने का प्रयास अधिक किया गया। वास्तव में द्वितीय विश्वयुद्ध दो विचार धाराओं के संघर्ष का प्रभाव था। इसलिए हिन्दी के कवियों में नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल वचन, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि ने साम्यवादी चेतना के अनुरूप ही इस युद्ध को अपने काव्य में चित्रित किया है। डा० रामविलास शर्मा की कविता “ जल्साव की मौत ” तथा शिव मंगल सिंह सुमन की यह कविता :

“ साम्राज्यवाद का गढ़ विदीर्ण

फासिस्तवाद पर गिरी गाज

जवकाश सोचने का न रहा

बढ़ चली समर का सजी साज

वफा की कासिल ही
लाहूँ की लाती से धी दी
युग युग से बन्दी मानव की

कहा है तुम्हो मुक्त वाज । १

अतः द्वितीय विश्व युद्ध और साम्यवादी प्रभाव पर
प्रभाकर माचवे की कविता ' ब्राज्जास्तव्युती सोपित्स्की सोयूज् ' में
वर्णित यह देश :

" भूमि पे चला रही सधीर वीर वीरणा
तौप की विमान नासिका व शस्त्रगादियाँ ।
वाज स्व की हुँ कर्ह उजाड़ बाहियाँ ।
किन्तु धैर्य की दिवाल ही जरा भी भंग ना ॥ २

विश्व युद्ध में होने वाले स्व युद्ध का प्रभाव भारत
पर भी पड़ा । स्व युद्ध में विश्व की दो शक्ति तड़ रही थी । पूँजीपति
और साम्यवादी विचारधाराओं के बीच टकराव था । भारत में ब्रिटिश
साम्राज्यवादी शक्तियाँ का अधिक प्रभाव था । अतः भारतीय प्रगतिशील
कवि वफा की कविताओं में साम्यवादी विचारधाराओं का समर्थन कर रहे
थे । जैसे- रणिय राज्य की कविता द्रष्टव्य है :

" बाबादी या कहो गुलामी, यही पूँजीपति स्तालिन ग्रे
बन्धुकों की भीषणता में बाधिर बनते बर्ज में

१- शिवमंगल सिंह सुमन : प्रलय सृजन पृ० ५६

२- तार सप्तक (सम्पादक : वसंत) प्रभाकर माचवे पृ० २०६

एण्टी एयर ड्राफ्ट गन के उस बन्धकारमय गर्जन में
भीषण तोपों की बहादुरी से, महायुद्ध के जवहों में । १

इस प्रकार प्रगतिवादी कवियों ने पहली बार हिन्दी
काव्य धारा को अन्तर्राष्ट्रीय जातिज से जोड़ दिया ।

भारत की स्वतन्त्रता का प्रयास

प्रगतिवादी युग का समाज परतंत्र भारत का समाज
था । देश में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरोध में भारतीय जनता युद्ध कर रही
थी । इसी समय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय महायुद्ध और इस की क्रान्ति
ने भारतीय जनता को प्रभावित किया । गांधी जी के सत्याग्रह और असहयोग
आन्दोलनों का प्रभाव अधिक नहीं पड़ रहा था । इसलिए भारतीय जनता
परीशान थी ।

भारत में सन् १९३० से लेकर व्यक्तिवादी स्तर पर
चलने वाली सत्याग्रहों एवं आन्दोलनों से जनता परीशान होकर गांधी के प्रति
असन्तोष उत्पन्न होने लगने लगा था । दूसरी ओर इस की क्रान्ति से प्रभावित
क्रान्तिकारी विचारधारा के लोगों ने गांधीवादी सिद्धान्त को खोद कर
क्रान्ति और विद्रोह का रास्ता चुन लिया । अतः समाज में राजादी के
लिए क्रान्ति और कड़तालों का जोर बढ़ने लगा । इसी युग के प्रमुख कवि
ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरोध में जेल भी गये । उनकी विचारधारा अधिक
क्रान्तिकारी हो गई । इन कवियों ने काव्य में क्रान्तिकारी विचार धाराओं

को अधिक तीव्र रूप से चित्रित किया। जैसे-

कवि कुछ ऐसी तान सुनावी,
जिससे उफत पुफत मच जाए।
रू हिलोर रूधर से जाए रू हिलोर
उधर से जाए ॥ १

अतः इस युग के कवियों का स्वर ध्वंसात्मक क्रान्ति से सम्बन्धित है। इस युग के कवि क्रान्ति द्वारा देश को स्वतन्त्र करना चाहते हैं। इसलिए इस युग की कविता में सत्याग्रह से हटकर क्रान्तिकारी स्वर अधिक सुनाई पड़ता है। जैसे- रामधारी सिंह दिनकर (विप्लवा), सुमित्रानन्दन पन्त (युवावणी) आदि।

ब्रिटिश सरकार का अन्त करना है। प्रातिवादी युग में क्रान्ति और वहिंसा दोनों का प्रभाव देला जा सकता है। अतः इस युग के कवि दोनों सिद्धान्तों से प्रभावित हैं। इसलिए प्रातिवादी काव्य में दोनों सिद्धान्त देखे जा सकते हैं।

विद्रोही और बन्दी जीवन

प्रातिवादी काव्य में क्रान्ति के साथ साथ विद्रोही और बन्दी जीवन का चित्रण देखने को मिलता है। कविवर बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविता में ' विद्रोही कविता ' में चित्रित भाव :

हमने गति देकर चसित किया,
अन गति विहीन ब्रह्माण्डों को।

१- बाल कृष्ण शर्मा नवीन : हम विषपायी जन्म के पृ० ४२६
(विप्लव गायन)

हमने ही तो सृजित किया, सब के सब वर्तुष भाण्डों को
हमने नव सृजन प्रेरणा से, झिटकाये तार बम्बर में
हम ही विनाश भर जाये हैं, सब निस्तित विश्व बाढम्बर में,
हम भ्रष्टा हैं, प्रत्येक हम, हम सतत क्रान्ति के प्रसर धार ।
हम विप्लव रण बाण्डिका जनक, हम विद्रोही हम दुर्निवार ॥१

वही हुस्सेनशुर्की की कविता में विजादपूर्ण
स्थितियों का चित्रण देता जा सकता है ॥

जसी उस वीर नदी-नद पार-पार कर गिरिवन का विस्तार
वहाँ जिस वीर हमारा देश हमारी जन्म भूमि घर द्वार
सुनो हिन्दुस्तान की हुकार, बड़ी जागे लीचीं बसवार
हून को बुला रहा है हून । बड़ी दुरमन की चीर कतार । २

जसी प्रकार प्रगतिवादी काव्य में क्रान्ति और
विद्रोह की भावना एक साथ पायी जाती है। इस युग में भारत की स्वतंत्रता
के लिए सैनिक और जनता दोनों ही सक्रिय भाग ले रही थी ।

नाविक विद्रोह

भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व सन् १९४६ में ब्रिटिश
राज्य के प्रति भारतीय समुद्री सेना ने विद्रोह कर दिया, उसका प्रभाव
देश के मजदूरों और नागरिकों पर पड़ा । भारतीय जनता और कांग्रेस के

१- बालकृष्ण शर्मा नवीन : हम विजापयी जनम के पृ० ४६१

२- नरेन्द्र शर्मा- हंस माता (वादेल) पृ० ४७

साथ ही उन लोगों के हृदय में देश स्वतन्त्र कराने की प्रबल इच्छा थी , लेकिन सरकारी कर्मचारी होने के कारण ये देश के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग नहीं ले पा रहे थे । २२ फरवरी को उन नाविकों ने ब्रिटिश नीति के विरोध में हड़ताल की घोषणा कर दी । ब्रिटीश सरकार ने इस विद्रोह को दबाने के लिए शक्ति प्रयोग किया । उसे सफलता नहीं मिली । तब कांग्रेस और मुस्लिम लीग के नेताओं के प्रयास ने इस शर्त पर हड़ताल समाप्त हुई कि बदला नहीं लिया जायेगा । तब सैनिकों ने यह कहा , “ हम भारत के सामने आत्म समर्पण कर रहे हैं ब्रिटेन के सामने नहीं । ” इस विद्रोह से प्रेरित होकर हिन्दी कवियों ने कवितारें लिखी गयीं । जैसे बच्चन की यह कविता -

कुछ शक्त तुम्हारी घबराहें- घबराहें सी,
दिग् भ्रम की जालों के अन्दर परछाहें सी ,
तुम जहाँहीं को और कहाँ पर पहुँच गए ।

लेकिन नाविक

होता ही है

सुफान प्रबल ॥ “ २

इस प्रकार शिव मंगल सिंह “ सुम्न ” की कविताओं में चित्रित यह भाव भी प्रेरणादायक है :

बाज झिड़ा फिर मानव दानव में
संघर्ष पुरातन
उधर लड़े शोषण के दम्भी
स्थर सर्वहारा गण ॥

१- डा० रणजीत : हिन्दी की प्रातिशील कवितापु० २१२

२- बच्चन - धार के स्थर उधर पु० ८६

पय पैजिस्त की वीर बहुरहा
 फिट फिट नूतन जनता
 त्रेता वानर मातु
 जगि अब देश की जनता ॥ १

प्रातिवादी काव्य एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति

भारत को १५ अगस्त सन् १९४७ को राजनीतिक
 स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई, जिससे देश में नयी जैतना का विकास हुआ । चारों
 वीर हस्तास वीर प्रसन्नता अभिव्यक्त की जा रही थी । भारत में स्वतन्त्रता
 के गीत गाये जा रहे थे । वहीं प्रातिवाद के वि नयी सामाजिक समस्याओं
 की वीर जनता का ध्यान अपनी वीर लीच रहे थे । जैसे-

गिरिजा कुमार माथुर की यह कविता

आज जीत की रात
 फहरा सावधान रहना
 दुते देश के द्वार
 अब दीफ समान रहना ॥ २

गिरिजाकुमार माथुर की कविता में जहाँ भारत की स्वतन्त्रता का स्वागत
 है, वहाँ नयी परिस्थिति के प्रति जागरूकता है, उन्हीं के शब्दों में :

१- शिवमंगल सिंह सुन्न - विश्वास बढ़ता ही गया पृ० ५०

२- गिरिजाकुमार माथुर : १५ अगस्त पृ० ७६ ईस अगस्त १९४७

ऊँची हुई मलात हमारी
 बागे कठिन डगर है
 सतु हट गया लेकिन
 कायाबों का डर है
 शीशण से मृत है समाज
 कमजोर पुराना घर है
 किन्तु वा रही नयी जिन्दगी
 यह विश्वास बमर है। १

प्रगतिवादी कवि भावुकता के स्थान पर यथार्थ पर अधिक केन्द्रित है। इसलिए
 प्रगतिवादी कवि उत्साह और कल्पना के स्थान पर सामाजिक यथार्थ को अधिक
 महत्व देता है, जैसे- उदय शंकर मट्ट की यह कविता :

बाज हम स्वतन्त्र है
 बाज हम स्वतन्त्र है,
 समग्र जातियाँ जगी
 समग्र शक्तियाँ जगी
 समग्र एशिया जगा
 इण्डोनेशिया जगा
 सुदूर दूर चीन जगाम
 वी हरान फिर स्व
 करवटें बदल रहे
 संभल रहे मबल रहे

कह रहे कह रहे

बाज हम स्वतन्त्र है । ** १

लेकिन इस स्वतन्त्रता से कोई लाभ नहीं हुआ , क्योंकि स्वतन्त्रता के बाद भी भारतीयों की नैतिक स्थिति बही रही स्वयं उदयशेखर भट्ट जी कविता में अभिव्यक्त यह भाव :

न पर बदल सके कि तुम महान हो सके

स्वतन्त्र देश के महामिमान हो सके ?

दगा फरेव स्मार्थ सेन मुक्त हो सके

पृष्ठा कष्ट प्रपेव क्त विमुक्त हो सके । ** २

इसी समय देश की बदलती राजनीतिक परिस्थिति ने भारतीय स्वतन्त्रता की निराशा में बदल दिया । डा० राम विलास शर्मा की कविता के ये भाव :

** दीफ की ली सी उठती है

भारत की बाजाद फाका

ऊपर नीर भरे बादल है,

नीचे है बाजाद फाका । ** ३

इसी समय देश में साम्प्रदायिक दंगे हुए थे, देश में अज्ञान्ति और अव्यवस्था फैल गयी । इसका प्रभाव तत्कालीन कवियों पर पड़ा है। अतः प्रगतिवादी कवियों में इसकी अभिव्यक्ति हुई है।

१-उदयशेखर भट्ट : पूर्वापर पृ० १२८

२- .. पृ० १३०

३- डा० रामविलास शर्मा : रूप तरंग पृ० ८४

उदयशंकर भट्ट की कविता में उस समय हुए देश की अभिव्यक्ति इस रूप में हुई है :

“एक ऐसी वाज लीग सून की सरिता पर
 एक मजबूत पुत पाकिस्तान का महान्
 किन्तु यह धूर्तता पागलपन बर्बरता कूत्ता
 से बना हुआ पाकिस्तान का महसूस ।” १

साम्प्रदायिक देश जाति और धर्म के नाम पर होती थे और हत्या मुठभेड़ों की होती थी। भारत की स्वतन्त्रता के साथ मिला यह उपहार भारतीय जनता के लिए विन्ता और निराशा का कारण बन गई।

सन् १९४७ में प्राप्त होने वाली राजनीतिक स्वतन्त्रता के बाद भी देश की शासन व्यवस्था में कोई “वामूल बूल” परिवर्तन नहीं हुआ, उसका संकेत कवि रैतिन्द्र की कविता नयीता और चुनौती में देसी जा सकती है :

“वही फौज है, वही पुलिस है लाट वही है
 जमींदार है सैन्य और सलियान वही है
 गस्ता पहले से कम किन्तु लगान वही है
 नाम बदल डाले हैं पर हम काम वही है।” २

स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय सरकार ने भी वही रास्ता अपनाया जो अंग्रेजी

१- उदय शंकर भट्ट १ पूर्वा पर पृ० १३६

२- रैतिन्द्र : अन्दर की यह वाज (नयीता और चुनौती)

उद्धृत : हिन्दी की प्रतिष्ठित कविता - डा० रणजीत पृ० २१७

राज्य में था, पुलिस और फौज का जता पर बर्बर, दमन शोचण आदि ।
 इसलिए भारतीय जनता में स्वतन्त्रता के प्रति कोई नवीन उत्साह नहीं रहा ,
 लेकिन भारतीय स्वतन्त्रता ने अन्य देशों को स्वतन्त्रता की राह दिखायी ।
 इसके विश्व के अन्य भागों में भी स्वाभिमान का भाव जाग और स्वतन्त्रता
 के लिए प्रयास होने लगे ।

साम्प्रदायिक दंगे

सन् १९४६-४७ में आजादी प्राप्त होने से पूर्व देश
 में व्याप्त रूप से दंगे हुए इसका उद्देश्य यद्यपि राजनीतिक ही था । लेकिन
 मौत मनुष्यों की हुवा करती थी । साम्प्रदायिक दंगों के पीछे देश का हित
 न होकर स्वार्थपूर्ति हुवा करती थी, इसका प्रभाव समाज और काव्य दोनों
 पर पड़ा । इसलिए इस युग के कवियों ने इनका चित्रण इस प्रकार से प्रस्तुत
 किया है :

‘ उठी किसानों स्थाल करी एक महामौल बतलायी
 सारे रोग का एक दवाई स्कताई फरमायी
 इस की तरह कहे स्कता दुनिया नई बनायी
 लीग कश्मि स्कताई का घर घर मण्डा फहरायी । ’ २

१- सशिया जौ जौ, राष्ट्र भी न दुख फी ।

सभी महान् देश ही, सभी स्वतन्त्र देश ही ।

समूह दुःख नाश ही, समूह जग विकास ही । ’

- उदयलाल भट्ट : पूर्वा पर पृ० १२६

२- रामगीवास चौहान : दो किसान कवि पृ० ८४३ पृ० दिस अगस्त १९४३

इसी प्रकार हिन्दू मुस्लिम दोनों में एकता स्थापित करने का प्रयास हमेशा बहादुर सिंह की कविता में देता जा सकता है :

“ एक ही भिती

एक ही भिती

भाई भाई हिन्दु मुसलमान

मरने जीने का है दोनों का एक ही स्थान

एक ही प्रेम का झारा

सम्पत्ति है दोनों । ” १

स्वतन्त्रता से पूर्व एवं उसके बाद भी होने वाले साम्प्रदायिक दंगों ने भारतीय समाज को बहुत प्रभावित किया है। दंगों धर्म और जाति के नाम पर अधिक हुए इस की अभिव्यक्ति काव्य में इस प्रकार से है :

“ अस्साह के नाम पर यह नर संहार

धर्म की रक्षा के लिए होता है धर्म यह

जाति (लीग) की रक्षा के लिए जाति का विनाश

यह

देश की रक्षा के लिए देश फिटा जा रहा । ” २

इस युग की कविता में साम्प्रदायिकता के प्रति वाङ्मय भी व्यक्त किया गया है। रामधारी सिंह दिनकर की कविता में

१- हमेशा बहादुर सिंह भाई भाई पृ० ७७ ईस अक्टूबर १९४३

२- उषय रंजर मट्ट , पूर्वापर पृ० १३४

नौवाताली वीर बिहार दंगों का चित्रण द्रष्टव्य है :

“ यह विकट त्रास यह कोलाहल इस वन में मन उकसाता है
मेढ़िया ठठाकर हंसते हैं, मनु का बेटा चिल्लाता है। ”

०

०

जलते हैं हिन्दू मुसलमान भारत की वसिं जलती है।
बाने वाली बाजादी की ली दोनों वसिं जलती है। ” १

इस दंग से प्रभावित होकर नौवाताली यात्रा की
मानववादी जोहर की कविता कही है :

“ इतिहास परस नूतन विधान, पन्ने सफेट ले पुराचीन
बापू ने कलम उठाई है तिली की कुछ गाथा नवीन
थी फड़ी दृष्टि फलसे भी बया तेरी ऐसे नर नाभी पर
जो लुसे पवि निःशंक घूमता हो सापों की बाबी पर । ” २

इसी प्रकार प्रातिवादी युग के कवि पन्त ने भी
बापू की नौवाताली यात्रा का चित्रण इस रूप में प्रस्तुत किया है :

“ कौन लड़े उन्नत वविचस दुर्धर फीफता के सम्पुत
स्वर्ग दूत से जाति- भेद का हरने धारणी का दुःख

०

०

बाज राम की दंड तुम्हारे कर में नव संधानित
दीप्तब बरिंसा तीरों से करता भू तमस पराजित

१- रामधारी सिंह बनकर : सामयिनी पृ० ३४ वीर ३५

२-

..

चक्रवाल(बापू) पृ० २३२

यह संस्कृति का सस्त्र चीत्र मैं राजनीति के रीफित
भावी मानव जीवन गौरव उर में करता जागृत । ** १

भारत की स्वतन्त्रता के समय हुए साम्प्रदायिक दंगों
का चित्रण बच्चन की कवितामें इस प्रकार से किया है :

स्वतन्त्रता प्रभात क्या यही यही
कि रक्त से उष्ण भिगी रही मही
कि त्राहि त्राहि शब्द से गगन जगा
जगी धुणा
ममत्व प्रेम
सो गया । * २

गिरिजाकुमार माथुर ने साम्प्रदायिक दंगों को
ब्रिटिश सरकार की देन माना है :

बाज उपनिवेशिक स्वराज्य हमने पाया है
हिन्दू वीर मुसलमानों ने अपनी हाथ खून से रंग कर
सालीं घर उजड़ कर कस्बे शहर जलाकर रक्त वीर
हत्या से उठकर
नये देश बाहर जाया है वीर दूसरी वीर बहिस्ता के सागर
टूट मोती मिल पाया है बाज लड़ाई बाजादी की । ** ३

इसी प्रकार बच्चन की कविताओं में भी साम्प्रदायिक

१- सुमित्रानन्दन पन्त - स्वर्ण किरण पृ० ३५

२- बच्चन - धार के ऊपर उधर पृ० ७३

३- गिरिजाकुमार माथुर- तीस खून पृ० ७९५ ईस (जीलाई) पृ० १६४७

दंगों का पूरा कारण विदेशी शासन माना है :

“ विदेश की कुनीति ही गई सफल
समस्त जाति की न काम की कल
सकी न भाप एक बाल, एक कल
फिर हमें
दिला न फूल
पूरा मैं । ” १

एक साम्प्रदायिक दंगों में होने वाली भाई भाई
की मौत का चित्रण वसंत ने इस प्रकार से किया है :

“ हमारा रक्त, यह खर बहा
मेरे भाई का रक्त वह उधर रहा ।
उतना ही लाल तुम्हारी एक बहिन का । ” २

साम्प्रदायिक दंगों में होने वाली सम्पत्ति और
वस्तुओं के जलने का चित्रण राजीव सबसेना की कविता में देखा जा सकता
है :

धू----- धू----- धू----- धू-----
नगर जल रहे
गाँव जल रहे
हर घर के छप्पर से कैसा उठता है
हुँडली मास्ता धुआँ ।।

१- वक्ता : धार के खर उधर (देश विभाजन) पृ० ८५

२- वसंत - शरणार्थी - पृ० १६३ ईस विद्यम्बर १९४७

साँप की तरह वायु मण्डल की गि में मार

जहर का नश्वर ।

देती लड़प रही मानवता

साँस रुकी दम घुटा गले में

फटा गुलामी का फँदा कसता जाता है । १

दंगों में जहाँ एक ओर नगर और शहरों में वागजनी का वातावरण था । दूसरी ओर जनता अपनी सुरक्षा के लिए दौड़ रही थी। कहीं गोली चल रही थी, तो कहीं लट्ट इस का विज्रण उदय कर मट्ट की कविता में इस तरह से हुवा है :

“ मार डाला , छूट लिया

दीड़ियाँ रे वह मारा

इसके ही साथ साथ

घीसे जा रहे थे हुरे । ” २

इस दृश्य का वाग का भाग इस रूप में है :

“ वागये वागये, भाले लिये हुरे लिये

लाठी बन्दूक लिये प्राणों की भूल लिये

पागलों का दस बल । ” ३

इसी समय समाज में किये जाने वाले वत्याचारों एवं नारी दुर्दशा का विज्रण कवियों ने अपनी कविताओं में किया है :

१- राजीव सबसेना- साम्प्रदायिक दंगे १९४७ पृ० ७२६

हंस कुतार्ड १९४७

२-उपयत्तीकर मट्ट - पूर्वापर पृ० १३२

३- “ “ “ “ पृ० १३३

निर्दल नारी सुकुमार बासिकावी पर
 व्यभिचार बलात्कार
 नंगा कर मौक देना गुप्त वींग में भी वस्त्र
 रूत , नाक कान काट
 फाँड़ देना बलि भी । " १

स्वतन्त्रता पूर्व से होने वाले दंगों की परिणति
 महात्मा गांधी की हत्या के रूप में हुई, तब नागार्जुन ने 'महाशत्रुओं की
 दास न गलने देंगे'। शीर्षक में जनता की उपदेश दिया कि ऐसे लोगों से
 सावधान रहे जो भारतीय जनता की स्वतन्त्रता में बाधा डालना चाहते
 हैं।

 १- उदयशंकर मट्ट - पूर्वापर पृ० १३४

२- नागार्जुन - हंस मार्च १९४८ वॉक ६ पृ० ४३०

प्रातिवादी काव्य में बार्फिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ

प्रातिवादी काव्य में चित्रित ग्राम्य जीवन

हिन्दी के प्रातिवादी काव्य में समाज का सम्यक् चित्रण हुआ है। देश का अधिकतर जनसाधारण ग्राम में रहता है। इसलिए प्रातिवादी कवियों की दृष्टि ग्रामीण जीवन की ओर गई। भारतीय ग्राम में रहने वाले अधिकतर व्यक्ति किसान और मजदूर होते हैं। प्रातिवादी कवियों ने किसान के जीवन और उसकी समस्याओं का प्रसृत रूप से किया। प्रातिवादी युग के प्रसृत कवि सुफियानन्दन फत्त के काव्य 'ग्राम्य' में ग्रामीण जीवन का वर्णन इस रूप में हुआ है :

लौटे लगे गारे घर लौंठी ,
 लौटे कुचक शान्त स्थाय डग धर
 खिमे गृहों में खान बराबर
 हाया भी होगई लगीबर
 लौटे फेठ से व्यापारी भी
 जाते घर उस पार नाव पर
 ऊंटों घोड़ों के संग बैठे
 ताली वीरों पर हुक्का भर । * १

इस युग के काव्य में वैयक्तिकरण गुप्त की भाँति ग्रामीण जीवन की भावुकता एवं वास्तववादों ढंग से चित्रण नहीं किया

गया है, प्रत्युत यहाँ कवियों की दृष्टि यथार्थवादी है। बालकृष्ण शर्मा नवीन ने भारतीय ग्राम्य की अज्ञानता भूत और दलित जीवन का चित्रण किया है :

ऐसे ग्राम भरा है जिनमें बति अनाध अज्ञान भरीकर
 मँडराती है जहाँ भूत की, उत्कट ज्वालाएँ प्रसरीकर
 निज हत भाग्य राष्ट्र के ये सब ग्राम समूह कुम्हले में ॥ १

इसी प्रकार सोहन लाल द्विवेदी की कविता में-
 ग्रामीण जीवन का चित्रण भी द्रष्टव्य है :

“ कामल नगरों से दूर दूर है, जहाँ न ऊँचे लहे मल्ल
 टूटे- फूटे कुछ कच्चे घर, दिल्ली तैयारी में बल्ले हल
 पुरई पाली सपौली में रहिमा खुवा के नाव में
 है अपना हिन्दुस्तान कहाँ ? वह बसा हमारे गाँवों में । ” २

बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविता ‘नरक विधान’ में भारतीय ग्रामीण किसान का चित्रण किया गया है, जिसमें उन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि भारतीय ग्रामीण जीव का वातावरण कتنا गंदा है कि उसमें जानवर भी रहना पसन्द नहीं करेगा, फिर भी भारत का मुख्य कीड़े के समान गन्दगी में उत्पन्न होता है और मर जाता है। भगवतीचरण वर्मा की कविता में भारतीय किसान के निवासों का चित्रण हुआ है :

१- बालकृष्ण शर्मा नवीन - हम विचपायी जम के पृ० ४६

२- मैरवी पृ० ६

३- हम विचपायी जम के पृ० ४५६

“ उस बीर साहिब के कुछ बागे कुछ पाँव कीस की डूरी पर
 घू की हाती पर फोड़ों से है, उठे हुए कुछ कच्चे घर
 ये कहता हूँ सण्डहर उसकी, पर ये कहते हैं उसे ग्राम ॥ ” १

प्रातिवादी साहित्य में भारतीय किसान के साथ
 साथ उसके वार्षिक एवं सामाजिक जीवन का चित्रण भी मिलता है। सुमित्रा
 नन्दन फन्त की इस कविता में ग्रामीण जीवन की वार्षिक स्थिति का चित्रण
 इस प्रकार करते हैं।

“ ये जीवित है या जीवन्मृत ।
 या किसी काल विष से मूर्छित ?
 ये मनुजाकृति ग्रामिक जगणित
 स्यावर विषण्ण जडवत स्तम्भित ॥ २

प्रातिवादी कवि मार्क्सवादी सिद्धान्त के अनुसार
 समाज के प्रत्येक सम्बन्ध को देखते हैं। फन्त की ‘ग्राम देवता’ शीर्षक
 कविता में कवि ने ग्रामों की दखिन्नता पर दुःख प्रकट किया है। इस प्रकार
 ‘भारत ग्राम’ नामक कविता में किसानों की वार्षिक स्थिति का चित्रण
 है। ग्रामीण जीवन की शोचण नीति का चित्रण नवीन बीर फन्त की

१- मानव (भीसा गाड़ी) पृ० ७५

२- ग्राम्या (कठपुतले) पृ० २२

३- सुमित्रानन्दन फन्त - ग्राम्या (ग्राम देवता) पृ० ५७

४- मानव की निर्दयता देखी शोचण यातना मीनी ।

बीर बन गये बचपन से ही, छंकाफ रोगों के रोगी

तिल्ली बड़ी जिरर बढ़ बाया, ढाँचा हुआ झुल्लर काँटा ।

रोटी के टुकड़े के बदले, कच्चे भिंसा चटि पर चटि ॥

- बालकृष्ण शर्मा नवीन - हम विषपायी जम के पृ० ७५

५- सुमित्रानन्दन फन्त - ग्राम्या (कठपुतले) पृ० २३

कविताओं में काफी हुआ है। नवीन जी इनका कारण बन्ध विश्वास
वीरु गरीबी को मानते हैं।

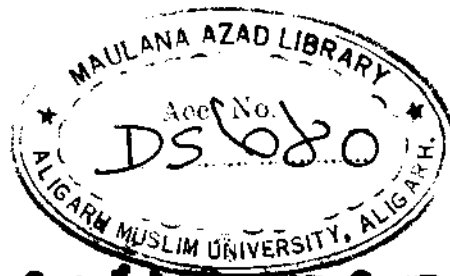
भारतीय किसानों की गरीबी, बेरोजगारी पिके
हरे गाल धूती छठियाँ का संग्रह मात्र, फटे कपड़े वाले किसान की विचित्र
परिस्थितियों का चित्रण प्रातिवादी कवियों ने यथार्थवादी दृष्टि से किया
है। भगवती चरण वर्मा की दृष्टि में किसान का स्वल्प एक प्रकार है १

उसका कूटम्ब था मरा पुरा बाहों से हाहाकारों से
फाकें से लड़ लड़ कर प्रतिदिन छुट छुट कर बत्थाबारों से
तैयार किया था उसने ही कफा कीटा सा एक तैल ।
बीबी बच्चों से झीन, बीन दाना- दाना कपड़े में भर
भूते लड़पे या मरे, मरों का तो मरना है उसकी घर । १

निष्कर्षतः यह कहना अवश्योक्ति न होगी कि
प्रातिवादी कवियों ने समाज के उपेक्षित वर्ग-किसानों का चित्रण अपनी
कविता में सम्पूर्णता के साथ सक्षानुप्रातिपूर्क किया है।

प्रातिवादी काव्य में चित्रित शहरी जीवन

प्रातिवादी काव्य में ग्रामीण जीवन के साथ साथ
शहरी जीवन का भी चित्रण हुआ है। प्रातिवादी कवियों की दृष्टि सामा-
यिक यथार्थ पर केन्द्रित होने के कारण उनकी दृष्टि ग्रामीण समाज के
साथ ही शहरी जीवन पर भी गयी है। अतः प्रातिवादी काव्य में जहाँ



ग्रामीण क्षेत्र के किसानों के जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया गया है, वहीं शहरी जीवन के निम्न वर्ग मजदूर और कुलियों के जीवन का भी समीप चित्रण किया गया है। प्रातिवादी काव्य में औद्योगिक नगरों में रहने वाले मजदूरों का चित्रण देता जा सकता है :

“ देता उसे मैं स्ताहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर
नहीं कायापार
फँस वह जिनके तले बैठी हुईं स्वर्य ॥ ” १

इसी प्रकार वरुण के काव्य में चित्रित साधारण कुली का जीवन जो अपनी वार्षिक कठिनाईयों तथा कमावों से विपन्न होकर कुलीगिरी का काम करता है :

“ करौटि की सब डलान पर
दु-दिन में जो किसी कमाग की किस्मत छी
सीधी डलती जाती गयी है
फटे हुए पैरों में फले मोटे चप्पल
और पैन्थ लगी सतवार कमर में लसि । ” २

इसी प्रकार वाधुनिक शहरी जीवन में रहने वाले मध्य वर्गीय बाहुवी के जीवन का चित्रण भी देता जा सकता है । जैसे- उदयलाल भट्ट की कविता में मध्य वर्ग बाहुवी की जीवन की वार्षिक स्व

१- निराशा - वह तोड़ती पत्थर - काव्यिका पृ० ७६

२- उपेन्द्र नाथ वरुण उ सङ्कलन पे डले साथे पृ० ६१

सामाजिक जीवन का चित्रण हुआ है। गिरिजाकुमार माथुर की कविता में दैनिक जीवन का जीवन रूप में चित्रण है :

बीसियाँ साइकिलों की पल्लियाँ
 कैरियर की टोक रियाँ हैंडिल में
 कुछ के ताली कढ़ीरदान में बंधी
 कुछ में हैं फार्मों हर दिन भुली
 जो न कभी सत्पन हुए दफ्तर में
 है जरा कम ही टीकरी रखी । १

जहाँ प्रगतिवादी काव्य में मजदूर और बाहु-
 लोंगी का चित्रण किया गया है वहीं शहरी जीवन में पाये जाने वाले
 भिक्षुकों का कठण चित्रण भी देखा जा सकता है २

निराला की कविता में भिक्षु की वरिष्ठता और
 वार्षिक मजदूरी का चित्रण है वहीं श्रीचन्द्र बर्मिहोत्री की कविता भिक्षारिण
 में भिक्षारिण का यह स्वरूप-

मांगती वह भीस, फटी धीती बात रखे
 पैसों की दो फाँत पर, शून्य वहीं बिड़ी फा पर
 वे भला उसका न वे उसका भला मांगती वह भीस
 रात तक बी बार पैसों या, झुली से ता, किसी जलपान
 घर की झूठ
 होती जिन्दगी का बीक मांगती वह भीस ।। ३

१- गिरिजाकुमार माथुर- धूप के धान पृ० २६

२- निराला - परिमल पृ० १३३

३- श्रीचन्द्र बर्मिहोत्री - भिक्षारिण पृ० ३४४ एडिशन १९४७

प्रातिवादी कवियों की दृष्टि में धुँबी का समान रूप से वितरण न होने के कारण ही एक और समाज में उच्च वर्ग है जो बूझरी और निम्न और मजदूर वर्ग है। प्रातिवादी कवियों ने मजदूरों के जीवन का चित्रण इस प्रकार से किया है :

‘ उधर बिलबिलाते थे कीड़े,
 नावदान में कितवल कितवल
 कंधर सड़ी गंदी कच्ची सी,
 नाली का पानी था पैकिल
 उठते थे कबतरी मयंक र
 सड़न और बदबू के बाँपर ॥ ’ १

प्रातिवादी युग के कवियों की दृष्टि में आधुनिक समाज का निर्माण ही मजदूर और निम्न वर्ग के शोषण पर आधारित है :

घाट धुँसाले ज्वालते
 विद्यालय बैरियालय लारे
 होटल बफ़तर बूझ साने
 पैदिर मस्जिद हाट सिनेमा
 अमजीबी की उस छड़ी पर टिके हुए ॥ ’ २

इस प्रकार से प्रातिवादी काव्य में समाज के शोषण का चित्रण भी हुआ है।

१- नवीन- हम विजयायी जन्म के १० ४५६

२- केदारनाथ - युग की गंगा ४

प्रातिवादी काव्य में शीघ्रता का स्वरूप

प्रातिवादी काव्य सामाजिक चेतना पर आधारित काव्य है। इसलिए प्रातिवादी काव्य में समाज का मार्क्सवादी चेतना के आधार पर चित्रण किया गया है। मार्क्सवादी सिद्धान्त के अनुसार समाज का पूरा आधार ही वर्ग होता है। सभी आधार पर समाज का विभाजन शोचक और शोचित वर्गों में होता है। ब्रिटिश साम्राज्य और भारतीय साम्राज्य और अधिकारी दोनों मिलकर जनता को पीड़ान करते थे। हिन्दी काव्य में जनता का चित्रण देखा जा सकता है। जब सम्राटों के शोचण के फलस्वरूप दलित प्रजा भुली मरने लगती है तब मेरा जीवन समाप्त होनेक लगता है :

“ जब हुई हनुमन्त जीर्ण पर,

जब भी चुफे मैं तहाँ में

कोठों की लाकर मार फली

पीड़ित थी दबी कराहों में

सोने सी कितर जान हुई

तब कड़े वस्त के दाहों में ।

ले जान हथेली पर निकली

मैं मर फिटने की चाहों में ।

मेरे चरण में लीज रहे,

भय कम्पित तीनों लोक शरण

भन भन भन भन भन भन भन ॥ १

१- रामधारी सिंह दिनकर - हुंकार पृ० ७५

इन पंक्तियों में कवि ने तत्कालीन साधारण व्यक्ति का चित्रण किया है। समाज के उच्च वर्गीय लोग साधारण व्यक्ति का शोचण किया करते थे। प्रगतिवादी काव्य में टूटती हुई सामन्ती व्यवस्था का चित्रण केदार नाथ खण्डवाल ने इस रूप में किया है :

बाज सामंती पुरानी होगयी, स्वप्न की भूली कहानी
होगयी ।

बी भतायी थी बुराई ही गयी ,
बी कमाई थी बुराई ही गयी ।

प्यारवाली बात कानी ही गयी ,
नष्ट सोना की जानी ही गयी ।

बाज रानी नीकरानी ही गयी ,
तपस्पाती बाग पानी ही गयी ॥ १

प्रगतिवादी काव्य में सामन्ती व्यवस्था के टूटने एवं पूँजी पति व्यवस्था का प्रभाव अधिक पड़ा है। वाधुनिक काल में वाधुनिक सम्यक्ता भी शोचण का अस्त्र बन गयी है, इसकी अभिव्यक्ति गिरिजा-कुमार माधुर की कविता में इस रूप में द्रष्टव्य है :

इन डोरों में बंध गयी धरा

० ०

फिर नयी शक्ति का जन्म उठा

१- केदारनाथ खण्डवाल - विचारगान - ईस - जनवरी फरवरी १९४७

पृ० २४०

उपनिग और व्यापार का फैला प्रसार
 कुँजी की कंजन देता बड़ी
 देत की सीपारै सिपटी
 बारम्ह हो गयी नयी दीड़ बाजारी की । " १

बाधुनिक व्यवस्था और शासन भी लोचन का ही
 वस्त्र है। बाधुनिक युग में बढ़ने वाली यान्त्रिक सम्पत्ता मनुष्य का किसी न
 किसी प्रकार लोचन कर रही है :

नीम बच्चे रो देते हैं
 सीत नहीं रोने देता है
 ससि नहीं बाहर जाती है
 चोस नहीं बाहर जाती है
 सोच रहा है-
 बाज पिता न गीसी लायी
 कस हम मुसे मर जायें
 ठण्डी तीर्थ । ठण्डी तारी ।। " २

यान्त्रिक सम्पत्ता के साथ उभरने वाले कुँजीपति
 द्वारा गरीब मजदूरों पर किये गये जुल्म और गीसी काण्ड का निष्पन्न
 इस प्रकार से है :

बाज नहीं बायेगा घर पर
 कभी नहीं बायेगा घर पर

१- गिरिजाकुमार माधुर : धूप के धान (पहिया) पृ० १८

२- वादित्य मिश्र - कानपुर - ईस (कावरी- कलवरी) १९४७

रो बेती है हंस बेती है
 पागल होती और सीकती
 * कस से फुट पायी पर रात
 कट जायेगी ? लोग मुझ फायर से पारें
 जबकि उन्हें गोली से मारा ॥ ** १

उन पंक्तियों में मजहूरों की दयनीय दशा का चित्रण है। एक और श्रेणीपति उनका शोषण करते हैं और अधिकार मगने पर गोली मार देते हैं। दूसरी ओर उस छलछल धन का व्यव किस रूप में होता है, उसका भी चित्रण देखिये-

** दूर कहीं पर भित्त का पालिक
 फूट रहा है निज पेशवा से
 कितनी सारी ? कितने कंगन
 कितने तौला सोना लीगी ?
 मुस्कान देती जितना तुम दो
 बंधा शिक्का से हूब रहा है पारी
 जीवन ॥ ** २

दूसरी ओर धन के महत्व का चित्रण राम दयाल पाण्डेय की कविता में इस रूप में हुआ है :

** वह धन जो जग में सत्य
 न्याय की लरीयने में है समर्थ ।

१- वादित्य भिन्न - हंस - कानपुर पृ० २४० जनवरी फरवरी १९४७

२- रामदयाल पाण्डेय - मुमुक्षा भवन - हंस पृ० २६४ स० १९४७

वह धन जो हुलकर कर सकता है,
 दुनिया में सारे कार्य
 वह धन किसी बागे मानव की
 मानवता ही गयी व्यर्थ ।
 वह धन जो अनर्थकारी होकर भी
 कहताता हूँ व्यर्थ ॥ १

इन पंक्तियों में कवि ने धन का उपयोग मानव के
 हित में कर के धर्म के नाम पर होने वाले अपव्यय का विमर्श किया है।
 औजीवादी व्यवस्था ने समाज में भ्रष्टाचार को जन्म दिया । इसका विमर्श
 इस रूप में देता जा सकता है :

‘ शासन सेवा वाला मिस्टर पैसा वाला
 एक बैठा शास में एक बैठा विस्स में
 स्टेट्स में है मिटिया में साहब हिस्स में
 हाय स्काल हाय स्कर्ट हाय अधरात जलन ॥ २

औजीवादी व्यवस्था ने गरीबी को जन्म दिया और
 बूझरी और बेकारी को नागाजुन की इस कविता में प्रस्तुत किया गया है :

‘ मकान नहीं ताली, दुकान नहीं ताली है
 स्कूल नहीं ताली ताली नहीं कालिज
 ताली नहीं टेबल ताली नहीं फल
 ताली नहीं अस्पताल नहीं ताली है हात नहीं ॥ ३

१- रामदयाल पाण्डेय - मुमुक्षा भवन संस् ५० २६४

२- विष्णु शर्मा - कवितारं १६६४

३- एस विसम्बर ५० ५९

भारतीय समाज में शोचण का स्वल्प

ग्रामीण क्षेत्र

भारतीय समाज में ग्रामीण स्तर तहरी दोनों क्षेत्र में शोचण हुआ है। ग्रामीण क्षेत्र में जमींदार और साहूकार शोचण करते थे-

“ जमींदार, साहूकार, कृषि सेठों
के हमी थे गुण गार
कितनी पत्थर देव बना हम
झुल चढ़ाने को सार । ” १

ग्रामीण क्षेत्र में किसानों की वार्षिक स्थिति का चित्रण इस रूप में मिलता है :

बाज ठंडक बधिर है ।
बाहर बीते पड़ चुके हैं
रुह फूटते फलते पासा फटा था-
बाहर कुस की कुस मर चुकी थी
हवा हाह तक वेध जाती है। ” २

उसके पश्चात् भी भारतीय किसान का शोचण किया जा रहा था । इस शोचण में :

जमींदार का सिपाही लट्ठ कन्धी पर डाले
बाया और लोग की और देखकर कहा

१- जन्माप्यप्रवाद मिश्रित - पृ०-२६ अर्थ-की अनुवृत्ति पृ०-३२

२- निराशा - नये पौ (कृता भक्तिने लगा) पृ० ५५

हरे पर पानिदार बाये हैं,
 छिन्टी साहब ने बन्दा लगाया है,
 एक सफ़ते के बन्दर बना है। १

ग्रामीण चीज का न केवल जमींदार छीते थे, बल्कि
 अन्य अधिकारी भी पिल्लर लोचन करते हैं, उसका चित्रण हिन्दी काव्य
 में निरासा ने इस रूप में किया है :

जमींदारों के घट भरते नहीं हैं,
 वे लाते हैं कतना बफ़रते नहीं हैं
 किसानों पे क्या सुल्य करते नहीं हैं ? २

कतः ग्रामीण चीज के वार्षिक एवं सामाजिक
 लोचन का चित्रण प्रातिपादी कवियों ने अपने काव्य में किया है।
 ग्रामीण चीज में लोचन की प्रक्रिया बहुत तेज थी। वहाँ की वार्षिक
 स्थिति बहुत सराबोर ही जाने के कारण ग्रामीण चीज से लोग शहर की
 ओर तेजी से जाने लगे। कतः शहर में यात्रिक सभ्यता का विकास हुआ।

शहरी जीवन में लोचन

ग्रामीण समाज के साथ साथ शहरी समाज में भी
 लोचन का प्रभाव था। ग्रामीण चीज में जमींदार और साहूकार लोचन
 किया करते थे तो शहरी जीवन में पूँजीपति और साहूकार किया करते हैं।

१- निरासा- नये पौ- (कृपा भक्तिने लगा) पृ० ५५

२- पृ० ५६

‘गर्वी’ में शीर्षक कविता में कवि ने युगोप-परिस्थिति का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। जीवन की वास्तविकताओं से कवि परिचित है। अधिक और प्रतीति के युग के प्राचीन संघर्ष को लेकर कवि कहता है :

“ मजदूर सदा दो पैरों के
मासिक के चतुर दुरापी के
हैं अपना हिन्दुस्तान कहाँ
वह क्या हमारे गर्वी में ॥ ” १

शहरी जीवन के प्रतीति-द्वारा किये जाने वाले शोषण का चित्रण हिन्दी काव्य में इस रूप में हुआ है :

“ लादी ने मलमल से अपनी साँठ गाँठ कर डाली है
झिड़ता टाटा ठासमिया की तीसरी दिन दिवाली है
जोर जुलूम की बाँधी चलती बीस नहीं कू सकती हो
सम्झ नहीं पाता हूँ कि छुल्लू-मल्लू गरीबी है या काली है । ” २

शहरी जीवन में पाये जाने वाली मजदूर और विधवा-
जीवन का चित्रण काव्य में इस रूप में मिलता है :

कुली मजदूर है
बीकना डोते हैं लीकते हैं टेला
धूल धुआँ माप से पड़ता है सबका
यँ मरि जहाँ तहाँ हो जाते हैं डेर
सपने में भी सुनते हैं धरती की धड़कन ॥ ” ३

१- सीहनसाह द्विवेदी- मैत्री पृ० १४

२- नागार्जुन : संघ - जून १९४८ की १ पृ० ६४०

३- नागार्जुन - प्यासी प्यरायी जति पृ० २९

क्तः आधुनिक समाज में शहरी जीवन का धार्मिक
 एवं सामाजिक चित्रण प्रातिवादी काव्य में अधिक हुआ है।

प्रातिवादी काव्य में धार्मिक एवं वर्त्मन रुढ़ियों का विरोध

प्रातिवादी कवियों ने समाज की परम्परा
 और स्थापित मान्यताओं एवं धार्मिक मूल्यों का तण्डन करते हुए, नवीन मान्यताओं
 की स्थापना करने का प्रयास किया है। प्रातिवादी कवि समाज में प्रचलित
 वहेज प्रथा का विरोध इन शब्दों में करते हैं :

“ घातक समाज कैसे

सौंघ दूँ स्वयं मैं तुम कन्या रे नृसिंह ?

बाप ही छी मैं मार डालूँगा

तेरी यह वाजा न पावूँगा । ” १

प्रातिवादी कविताओं में तत्कालीन समाज की जाति
 व्यवस्था पर प्रहार करते हुए कवि शिवाराम शरण गुप्त कहते हैं :

“ पापी ने मंदिर में छुब कर

कतुणित कर दी है मंदिर की

चिर कालिक शुद्धि सारी ।। ” २

१- शिवाराम शरण गुप्त- वाङ्मय नृसिंह पृ० ४१

२- “ “ “ “ पृ० ५६

पण्डे पुरीक्षित

भारतीय समाज में पण्डे पुरीक्षितों का बहुत महत्त्व है। इन लोगों ने मिलकर भारतीय जनता का बहुत शोचण किया है :

“ मैं बोला- यह सब गलत बात
 मैं उसी देश का हूँ वासी ।
 तुम कहते हो जिनकी योगी ,
 मैं कहता हूँ सत्यानाशी ।
 ये धर्म धर्म करने वाले,
 जितने भी हममें पण्डे हैं,
 सूट करता है मोलों की,
 पासण्डी ढोंगी गुण्डे हैं। ” १

अतः हिन्दी कविता के प्रातिवादी युग में समाज की वार्त्तिक- सामाजिक रुढ़ियाँ धार्मिक कुरीतियाँ एवं नैतिक मूल्यों की वस्वीकार करते हुए नये जीवन मूल्यों की स्थापित करने का प्रयास किया गया है। मानसंबादी चेतना ने भारतीय समाज में काफी परिवर्तन लाने का प्रयास किया । समाज में नयी मान्यताएँ स्थापित की । वाधुनिक समाज वार्त्तिक कारणों से प्रभावित है।

प्रातिवाद में चित्रित वर्ग चेतना एवं संघर्ष

भारत में ब्रिटिश राज्य प्रबोपति एवं व्यवस्था पर

१- चन्द्र देव - हमारा देश , पीड़ित की गव्व हो रहा है,

उद्धृत - डा० रणबीर : हिन्दी की प्रातिशील कविता पृ० १८०

बाधार्ति था , जिसके फलस्वरूप समाज में वार्थिक विषमताएं थीं । प्रगति-वादी काव्य में इसका चित्रण इस रूप में हुआ है :

बाज दुनिया के करीठों बावपी
सह रहे हैं धूप सर्दी और नमी
बिन्दगी का एक भी साधन नहीं
उग्र तपती धूप है, सावन नहीं ॥ १

मुक्तिबोध की कविता में प्रगतिवादी वर्ग व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना देखी जा सकती है :

शोषण के वीर्य बीज से कम जमीं दुर्गम
दो सिर के, चार पैर वाले राक्षस बालक
विद्रुप सम्यताओं के लोभी संचालक
मानव को वात्मा से सहसा कुछ दानव और
निरुत बार ॥ २

वाधुनिक जीवन की समस्याओं और संज्ञास का चित्रण प्रगतिवादी कविता में देखा जा सकता है :

बहुरी और सतही बिन्दगी के गर्म रास्तों पर
कवानक सनसनी मीक
कि पैरों के तले के काट ताती कौन सी यह
बाग

जिसे नच रहा साईं ॥ ३

१- गिरिजाकुमार माथुर - धूप के धान पृ० ८६

२- मुक्तिबोध - चांद का मुँह टेढ़ा है पृ० ५८

३- पृ० २४

अतः प्रगतिवादी काव्य में वर्गिक समस्या पर आधारित वर्ग चेतना और वर्ग संघर्ष का चित्रण देता जा सकता है। प्रगतिवादी काव्य की मूल चेतना मार्क्सवाद पर आधारित है। इसलिए प्रगतिवादी कवि समाज का मूल आधार वर्गों की ही स्वीकारते हैं।

नारी समस्या

हिन्दी साहित्य में नारी की विशेष महत्व दिया गया है। इसलिए साहित्य में नारी का चित्रण किसी न किसी रूप में अवश्य मिलता है। प्रगतिवादी युग में प्रत्येक वस्तु का मूल्यकर्म भौतिक आधार पर रखा है। इसलिए प्रगतिवादी कवि नारी का सौजन्य और उसकी दयनीय अवस्था पर विचार करते हैं। आधुनिक काल की नारी यथार्थ की भूमि पर खड़ी है। इसलिए वह मजदूरिन और भिलाइन दोनों हैं :

वह तोड़ती पत्थर
देता उसे मैं स्लाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर
कोई नहीं डायार
फेड़ वह जिसके तल बैठी हुई स्वीकार ॥ १

प्रगतिवादी कविता में मजदूरिन का चित्रण है। वहीं पर भिलाइन का भी चित्रण रखा है। आधुनिक समाज में होने वाले

१- भूमिदानन्दन पुस्तक- ग्राम्या (मजदूरिन प्रति) पृ. २५

२- निराशा - आत्मिका - पृ. ७६ , द्वितीय संस्करण २००५

३- वह वाता-

दी टुक कसेबे के करता फलताता पथ पर वाता
फेड़ पीठ दीनी भित्ति है एक
कल रण खुटिया टुक ॥

- निराशा - परिपक्व पृ. १३३

विधवा नारी के शोचण का चित्रण काव्य में मिलता है :

वह रुष्ट देव के मंदिर की पूजा थी
वह दीप- शिखा थी शान्त भाव में लीन
वह दूर कात ताण्डव की स्मृति रेंगा थी
वह टूटे तरु की झुटी लता थी दीन ॥ १

वाधुनिक समाज में नारी का कैसे शोचण होता है, और वह किस प्रकार पुरुष की ज़ाया मात्र बनकर रहती है, इसका चित्रण प्रगतिवादी कवि पन्त की कविता में इस रूप में किया गया है :

वह नर की ज़ाया नारी
चिर नमित नयन फट विजडित
वह चकित भीत हिली सी
किञ्च चरण चाप से शंकित
मानव की चिर सह धर्मिणी । २

प्रगतिवादी काव्य में चित्रित ग्रामीण नारी का भी चित्रण देखने को मिलता है। कवि ग्रामीण नारी का चित्रण उसके परिवेश में करती है :

वह स्नेह शीत सेवा ममता कीमधुर भूति
यपि चिर दैन्य अविद्या के तम से पीडित
कर रही मानवी के आव की वाज भूति
ब्रज नगरी की यह ग्राम बहू निश्चित ॥ ३

१- परिमल- निराता- पृ० १२६

२- सुमित्रानन्दन पन्त - युवावर्णी (नर की ज़ाया) पृ० ६६

३- सुमित्रानन्दन पन्त - ग्राम्या (ग्राम नारी) पृ० २९

प्रातिवादी काव्य में मध्यमगीय सहरि नारी का चित्रण भी देशी की भित्ति है। आधुनिक युग की सहरि नारी अपने जीवन की व्यथित करने के लिए नौकरी करती है। इसके साथ कितनी पिछ-प्यार है। कवि ने इस ओर ध्यान दिया है :

शामने बाहर

हक गहं बयवमाती कार

बाहर निकली बासक सज्जा युवतिया

बक उठी मुताबी धूप में तन की बंध कान्ति ॥ १

आधुनिक नारी का चित्रण पन्त की कविता में देशी की भित्ति है। आज की नारी अपने परिवेश से परिस्थिति से पूर्णतः परित्यक्त है। इसलिए प्रातिवादी नारी घर से परिवेश को त्याग कर बाहर निकल कर आयी ।

प्रातिवादी काव्य में चित्रित वेश्या जीवन

हिन्दी साहित्य का प्रातिवादी युग ऐसा काल है जिसमें समाज के निम्न समूह जाने वाले वर्ग को चित्रित किया जिन्हें वेश्या कहते हैं। यद्यपि वेश्याओं का प्रकटन समाज में बहुत पुराना है। सामन्त-वादी व्यवस्था में उसका काफी शोचण हुआ है। लेकिन साहित्य में उनके जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। लेकिन साहित्य में उनके जीवन का यथार्थ

१- नागाकुं - सतरंगि फौजवाही (बयति नल रंजी) पृ० ३४

२- ग्राम्या आधुनिकता पृ० ८३

चित्रण नहीं हो सका। क्योंकि उनका सर्वत्र सामाजिक बहिष्कार किया जाता रहा है। प्रातिवादी कवियों ने इनको अपने काव्य में स्थान दिया है। प्रातिवादी विचारक वेश्यावर्ग का चित्रण वार्त्तिक शीघ्रण के रूप में ग्रहण करते हैं। समाज नारी का शीघ्रण अपने स्वार्थ हेतु करता है। दूसरी ओर समाज की मध्यवर्गीय नारी एवं निम्न वर्ग की नारी अपना जीवन यापन करने के लिए वेश्या वृत्ति को ग्रहण करती है क्योंकि नारी अपनी कमजोरी एवं मजबूरी के कारण ही वेश्या बन जाती है।

शुक्ती प्रेमचन्द ने वेश्यावर्ग का इस प्रमाणम के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्रातिवादी विचारक वेश्यावर्ग के जीवन का पुनः कारण वार्त्तिक परिस्थिति को मानते हैं। श्री विजय चन्द्र द्वारा रचित उपन्यास में “ न० केवल वेश्या का उससे उत्पन्न सन्तान को समाज में कितना कष्ट उठाना पड़ता है, उसका भी उल्लेख किया है।” इस काव्य उपन्यास में श्री विजय चन्द्र ने केवल वेश्या जीवन को चित्रित करते हैं, बल्कि उसके कारण पर भी प्रकाश डालते हैं। इस काव्य में श्री विजय चन्द्र का मत है, “ जब तक एक वर्ग के पास बेहद फालतू रूपया होगा जिसकी यह चिन्ता रहेगी कि उस रूपये को कैसे खर्च किया जाये ? और दूसरे वर्ग के पास गरीबी, बीमारियाँ और वार्त्तिक मजबूरियाँ होंगी, तब तक वेश्यावृत्ति को किसी न किसी रूप में फलने फूलने की स्वतन्त्रता अवश्य रहेगी। खतना ही नहीं वेश्या जीवन के लिए समाज स्वयं भी ज़िम्मेदार है।

१- विजय चन्द्र : काव्य उपन्यास 'वेश्यावृत्ति'

२- ३ - “ जब तक किसी देश से औद्योगिकी धन वितरण की व्यवस्था समाप्त नहीं कर दी जाती है, वहाँ से वेश्यावृत्ति को भी पूर्णतया नहीं उखाड़ा जा सकता। ”

- वही भूमिका पृ० (क-स)

मैं वेश्या हूँ
 मेरी कहानी को
 पढ़ने सुनने का
 तुम्हें एक नहीं है ।
 बेजने के कोण से
 तुम उसे लिखतीग
 यश धन कमातीग
 उन ही सिक्कों के । १

वेश्या जीवन में रहने वाली नारी यह अनुभव करती है कि बाफ़ा समाज उसे केवल फूँटे वाश्वासन तो देता है उसके प्रति सहानुभूति भी रखता है, फूँड़े बाँध भी बहाता है, लेकिन सामाजिक एवं वार्तिक रूप से कुछ नहीं करता । बल्कि उसके नाम पर नेतागिरी भाषणबाजी होती, काल्हि तेरा गेहूँ कीहँ भी एक टोपी के सहारे चुनाव लड़कर समाज के प्रतिष्ठित नागरिक बन जाते हैं या समाज के ठेकेदार बन जाते हैं, और उसे उसके हास पर समाज में झोंद देते हैं।

वेश्या किसी एक पुरुष की न होकर सबकी होती हुए भी वह किसी की नहीं होती है। लेकिन समाज में रहने के लिए मुहागिम का अभिनय करती है जिसका चित्रण मृत्युञ्जय उपाध्याय की रचना में हुआ है :

सिन्दूर पर हजारों का नाम
 हीठ पर लठ्ठी का चक्का
 गर्भ में वजात पिता का वंश

१- विजयचन्द्र - वेश्या पृ० १

२- .. पृ० ४

३- .. पृ० ६

फफुडों में टी० बी० की गन्ध

एक रुपया

नहीं दो रुपया

कौन

सीता

सावित्री

कौन किन्तु । १

इसी प्रकार हिन्दी के अन्य कवियों में रामेश्वर शुक्ल केवल की कविता में
वेश्या जीवन की अभिव्यक्ति वार्षिक कठिनाइयों के कारण से माना है तो
विजयकुमार ने वेश्या वृत्ति का कारण परिस्थितियों से उत्पन्न सामाजिक
स्थिति^२। वेश्या किसी जाति या धर्म की नहीं होती है, वह तो केवल वेश्या
मान्य होती है :

मैं वेश्या हूँ-

ब्राह्मण नहीं हूँ

दासिय नहीं हूँ

शूद्र नहीं हूँ

वेश्या भी नहीं

केवल वेश्या हूँ । ३

वाधुनिक युग का समाज प्रष्ट है। प्रत्येक वस्तु में फ्लिटावट है। वहाँ वेश्या
वाज भी सच्ची और ईमानदार है। वह जिस रूप में है, उसी रूप में अपने
को केवली है।

फिर भी वेश्या वाधुनिक युग के व्यापारियों से अपने

१- मृत्युञ्जय उपाध्याय - किन्तु

उद्धृत : डा० रणजीत- प्रातिशील हिन्दी की कविता पृ० १७३

२- विजयचन्द्र - चेहरा पृ० ४४

३- .. - वेश्या पृ० ६

की बेवसी है। वह उन भ्रष्ट व्यापारियों के समान नहीं है जो धन के लोभ में नकली वस्तु बेते हैं :

मैं झूठा व्यापार नहीं करता हूँ
ग्राह्य बाटल की लीशियाँ तरीकर
पानी नहीं भरती हूँ
स्वदेशी कपड़े पर
विदेशी मोहरें
मैं नहीं लगाती हूँ । १

इस प्रकार से प्रगतिवादी साहित्य में देशी जीवन की आर्थिक विषमता और उसके नाम पर की जाने वाली व्यापार और ढोंग तथा देशी जीवन का उच्च कीटि का वर्णन प्रगतिवादी काव्य में मिलता है।

बंगाल का अकास

भारत में सन् १९४३ में बंगाल में पीछण अकास पड़ा जिसने सम्पूर्ण मानव समाज को प्रभावित किया । भारत के इतिहास में इतना भयंकर अकास कभी नहीं हुआ पड़ा जिसमें काफी लोग कारण ही मौत की गीद में सी गये । बंगाल के इस अकास ने समाज एवं कवियों को प्रभावित किया । स्वयं राहुल के शब्दों में :

“ जो जो बंगाल में अकास पड़ा था, जानते ही
वहाँ कुछ ही महीनों में साठ लाख आदमी मरे जिनमें भूत से मरने वाले २०

तास से ज्यादा न होंगे ।^१ ..

इसी समय के कवि शिवमंगल सिंह सुम्न की कविता में चित्रित काल का यह चित्र-

हाय । सुन रहे कलकत्ते में फैला घोर काल
काल गास में समा गए कितने बार्ह के ताल
गतियों सड़कों फुटपाथों पर लुधा ग्रस्त बेहास
जगह जगह पर तड़प रहे हैं मानव के कंकाल ॥^२

बंगाल की इस परिस्थिति को देखकर उस समय के लेखक और कवि इस काल को देखकर दुःखी हो गए स्वयं महादेवी वर्मा के शब्दों में ,

.. बाज का विराट मानव की व्यापकता का समुद्र
बाज लेखक की जीवन की कोई महान् तथ्य कोई अमूल्य सत्य न दे सकेगा ।
ऐसा विश्वास कठिन है। इस दुर्भिक्ष की व्यापकता का स्पर्श कर के हमारे
कलाकारों , लेखकों की लूटी यदि स्वर्ण बन सकी तो उसे रात ही जाना
पड़ेगा । ..

महादेवी वर्मा की यह धोखणा साहित्यकारों के लिए एक नया मैत्र सिद्ध हुई जिसके फलस्वरूप शिव मंगल सिंह सुम्न ,

१- राहुल सङ्कृत्यायन - भागी नहीं दुनिया की बपती पृ० १

२- शिव मंगल सिंह सुम्न- कलकत्ते का काल पृ० ६६

ईस वषत्बर १९४३

३- उद्धृत- डा० दुर्गा प्रसाद मजुमदार - प्रातिशील हिन्दी कविता पृ० ११३

बासूच्य सप्त^१ नवीन^२, बच्चन^३ और स्वयं महादेवी जी ने बंगाल के काल का चित्रण बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इस ने बंगाल के काल पर 'बंगाल काल' के निकास जिसमें काल का मार्मिक चित्रण था। उसी समय हमेशा बहादुर सिंह की यह कविता भी प्रकाशित हुई :

भूत
जान
मुताफा सीर
जान और का
हिपा सा निरं में
बन्धेरा बाजार ।^४

बंगाल के काल के विषय में पंडित जवाहर लाल नेहरू का मत यह है कि यह काल प्रकृति की देन नहीं है बल्कि स्वयं मानव द्वारा कृत्रिम जमाव से उत्पन्न किया गया है। उसी भाव की पुष्टि हिन्दी के कवि शिव भंगस सिंह सुभन ने अपनी कविता में इस रूप में किया है :

ये पुँजीवादी समाज के जुल्मों के अवशेष
धूल लकड़ी से हाथों को लाकर नुँह के पास
बच्चे झूठे तौड़ रहे हैं अपनी बन्तिम ससिस ।
धूल गये वसि के जसु रुद कण्ठ के द्वार ॥^५

१- हम विजयायी जय के पृ० ५४३

२- बंगाल का काल (संपूर्ण)

३- महादेवी वर्मा : वंग दर्शन : बंगाल काल पर लिखित विभिन्न कवियों की कविता का संग्रह

४- कलकत्ते की सड़कें पर पृ० ६३ - इस - सितम्बर १९४३

५- डा० शिव भंगस सिंह सुभन- कलकत्ते का काल १९४३ इस अक्टूबर १९४३

दूसरी और काल के समय में देश के प्रजीपति भी विदेशी प्रजीपतियों के साथ मिलकर भारतीय जनता का शोषण कर रहे थे। देश में साधारण वस्तुओं का कभाव न होती हुए भी कुश्मि रूप से उनका कभाव उत्पन्न करके मारी माया में मुनाफा कमा रहे थे, इसका विषय जैस जी की कविता की इन पंक्तियों में देता जा सकता है :

“ इस सुजता सुफता सस्य श्यामता को तुम्हें
बीरान किया ।
साली का दूत किया पूरे सूखे को ही बेजान
किया ॥
साली को तड़पा तड़पाकर चावल गोदामों में
रूँथा ।
मानवता को धूँसे मारा तुम्हें जनता का तन
झूठा ॥ ” १

यहाँ प्रजीपति और व्यापारी मुनाफा लोरी के लिए अपने गोदामों में साधानों को जमा किए हुए थे और दूसरी और कलकत्ते की विषम स्थिति थी, नरेन्द्र शर्मा ने इसी समस्या को यहाँ उठाया है :

“ भूत भूत सब और भूत की सपट्टी रूँध तन दुर्बल
किसे जान कहने की दामता और किसे सुनने का बल ॥

१- रामेश्वर शुक्ल जैस- बंगाल के मुनाफासोरी से ” पृ० २२८

- हंस - दिसम्बर १९४३

हिन्दू मुसलिम नफासोर की
 धन दीसत में भेद नहीं ।
 वीर मौत का घाट एक है
 जहाँ राज्य सक्का साया ।
 दूध तरंगों पर उतराता *
 कंकालों का दल बाया ॥ १

उसी समय का एक किताब हा० शिव मंगल सिंह सुम्न
 की कविता में प्रस्तुत हुआ । जब बच्चे अपनी माताओं का दूध के नाम पर
 रक्त ब्रूने का प्रयास करते हुए मृत्यु की नींव से जाते हैं :

निष्ट दुध मुँह बच्चे
 सूती हाती से जसबत ।
 ब्रू रहे माँ के जोवन
 का बना बचाया रक्त
 जिस गीदी में जोवन
 पाया पाया साद हुतार ।
 बाज उसी में बिना कफन के
 सीये शिशु सुकुमार ॥ २

नागाजुन की कविता में काल के कारण कई दिनों
 तक मौज न बने की परिस्थिति का चित्रण इस प्रकार से हुआ है :

कई दिनों तक ब्रूला रीया बच्ची रही उदास
 कई दिनों तक ^{माँ}कृतिया सीहें उसके पास ।

१- नरेन्द्र शर्मा- दूधा हिन्दू पृ० १४६ ईस नवम्बर १९४३

२- शिवमंगल सिंह सुम्न - प्रलय युग - (कलकत्ता का काल १९४३) पृ. ११९

कई दिनों तक लगी भीत पर हिप कतियों की गरत
कई दिनों तक झुकी की भी हालत रही शिकस्त ।। १

प्रातिवादी कवियों ने काल का प्रमुख कारण
पूँजीवादी व्यवस्था को मानते हैं। उस समय देश में विदेशी शासन था।
जो भारतीय जनता का शोषण वफ़ी रित के लिए कर रहा था। वही
समय द्वितीय महायुद्ध हुआ उस युद्ध को लड़ने के लिए भारतीय जनता का
शोषण किया गया। दूसरी ओर देश और विदेश के पूँजीपतियों ने देश
का वार्षिक शोषण करने के लिए भाव की स्थिति उत्पन्न कर दी गई^१।

पंडित जवाहर लाल नेहरू के अनुसार “ बंगाल में
साधान्म पहुँचाने के लिए रेल के डिब्बे नहीं थे, परन्तु कलकत्ते में होने वाली
छुड़ दौड़ों के लिए देश के विभिन्न भागों से घोंडे मजदूरों के लिए रेल गाड़ियाँ
में विशेष बाँगियाँ सदा उपलब्ध रहीं। ” उसका कारण यह था कि
भारतीय और विदेशी पूँजीपतियों ने मिलकर भारतीय जनता का शोषण
करने एवं धन कमाने के उद्देश्य से साधान्म वस्तुओं के भाव स्तने बढ़ा दिए
थे। जिससे जन साधारण उन्हें वासानी से नहीं तरीद सके। इसका परिणाम
यह निकसा कि बंगाल में काल की स्थिति उत्पन्न हो गई जिसका चित्रण
प्रातिवादी कविता में प्रचुर मात्रा में मिलता है।

१- नागाजुन- सतर्गि फौजवाली (काल और उसके बाद) पृ० ३०

२- जवाहरलाल नेहरू : हिन्दुस्तान की कहानी पृ० ६२५

३- “ कलकत्ते में घुड़दौड़ बराबर होती रही और के शेरनेवल लोग वहाँ जाते रहे।
स्वाध सामग्री के लिए घातघात का कोई इन्तजाम नहीं था लेकिन घुड़दौड़
के छोटे रेल के डिब्बे में देश के दूसरे हिस्से से आते रहे। ”

जवाहरलाल नेहरू : हिन्दुस्तान की कहानी पृ० ६२६

प्रातिवादी युग ऐसा युग था जिसने समाज के उपेक्षित वर्ग की अपनी कविता का विषय बनाया । प्रातिवादी काव्य की मूल चेतना मार्क्सवादी है। कतः प्रातिवादी कवियों ने समाज का विभाजन भी मार्क्स के अनुसार वर्ग के आधार पर ही स्वीकार किया है। भारतीय समाज में श्रमीपति वर्ग मजदूरों का वर्ग के रूप पर शोषण करते हैं। कतः इन विचारकों एवं कवियों का दृढ़ विश्वास है कि जब तक समाज में गरीब, अमीर शोषक एवं शोषित वर्ग रहेंगे, तब तक समाज उन्नति नहीं कर सकता । समाज का एक वर्ग चाहे कितना ही ऊँची अट्ठास्किाओं में विकास कर गैस और विपुल चासित यन्त्रों के प्रयोग से अपनी रंग रसियाँ मनाता हो, लेकिन जब तक इस धरती पर कुछ भुलसे मरते मजदूर ठंड से सिकुड़ते अवोध बच्चे रहेंगे तब तक हम इस देश का विकास नहीं कर सकते । मार्क्सवादी कवि श्रमी का समान वितरण पर विश्वास करता है। इसलिए प्रातिवादी कवि गरीबों के अधिकार के संघर्ष करता है। इसलिए प्रातिवादी काव्य में वर्ग चेतना, संघर्ष और वार्थिक असमानताओं का चित्रण हुआ है।

तुतीय कथ्याय

प्रयोगवादी काव्य में चित्रित समाज

शायवादी काव्य के बाद हिन्दी साहित्य में दो प्रकार की चेतना का विकास हुआ। प्रथम प्रकार की चेतना सामाजिक राजनीतिक जीवन के प्रति जागृक रहते हुए भी अपनी साहित्यिक व्यक्तित्व को बनाये रखा। राजनीति और समाज के प्रति विशेष लगाव रहने के कारण यह प्रगतिवादी काव्य धारा कहलायी। दूसरी चेतना " किसी राजनीतिक वाद की दासता को स्वीकार नहीं कि वरन् काव्य की वस्तु और ऐसी शिल्प की नवीन प्रयोगों द्वारा वाज के अनेक रूप वस्थिर चित्र प्रयोग-शील जीवन के उपयुक्त बनाने की ओर ध्यान दिया। " यह धारा साहित्य के क्षेत्र में होने वाली नवीन चेतना और शिल्प से प्रभावित है।

प्रयोगवादीयुग में सामाजिक एवं बौद्धिक चेतना बहुत तेजी से बदली " इस बदलती हुई परिस्थिति के अनुसार अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम सीजना वाज के कवि के लिए अनिवार्य है। " इसलिए भी साहित्य के क्षेत्र में नए नए प्रयोग हुए।

डा० रघुवंश के अनुसार शायवादी युग की भांति और शिल्प वाधुनिक युग के भाव को अभिव्यक्ति करने में असमर्थ रही, इसलिए साहित्य में नये प्रयोग की आवश्यकता हुई। नये प्रयोग ने काव्य

१- डा० नगेन्द्र : विचार और विवेक पृ० २३६

२- डा० रघुवंश - साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य पृ० ६६

की नयी दिशा प्रदान की^१।

हिन्दी काव्य में नयी शैली का अभ्युदय कायावाद के तुरन्त बाद से ही होता है।^२ यह प्रभाव कायावाद के प्रमुख कवि निराला, सुमित्रानन्दन पन्त और भास्करनाथ त्रिवेदी आदि के साहित्य में देखने को मिलता है। श्री सप्तीकान्त वर्मा के शब्दों में, “निराला का कायावादी मार्ग ढोड़ कर प्रयोग की उस सीमा तक उतरना विशेष महत्व की बात है। कविता उस पुराने कलेवर में सिमिट चुकी थी। शब्दों के अर्थ तक संस्कारबद्ध, रुढ़ि में उसका गये थे।” डा० नामवर सिंह के अनुसार कायावाद के दूसरे प्रमुख कवि पन्त के काव्य में भी नवीन शिल्प पदा का प्रयोग देखा जा सकता है। इन सभी तथ्यों के आधार पर यह माना जा

१- यदि जीवन और जगत् में नवीन सम्बन्धों की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी तो कवि को निश्चय ही ध्वनि के रूप में अर्थ तथा प्रभाव की व्यञ्जना के लिए नयी शब्द शक्ति, नयी व्यञ्जना शैली तथा नये विधान की योजना करनी होगी।

- डा० रघुवंश - साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य पृ० ६७

२- उस समय कायावाद के विरुद्ध जो प्रतिक्रिया हुई केवल विषय वस्तु के क्षेत्र तक ही सीमित न थी। स्वयं निराला, पन्त ने अपनी काव्य शैली में परिवर्तन किया। पन्त जी ने पल्लव, गुंजन-कालीन बंधे शब्दों को ढोड़ कर मुक्त शब्दों की दिशा में कदम उठाया और यथा-शक्ति भाषा में सादगी तथा मितव्ययिता लाने की चेष्टा की।

डा० नामवर सिंह : इतिहास और कालोचना पृ० ६

३- नयी कविता के नये प्रतिमान पृ० ५६

४- इतिहास और कालोचना पृ० ६

सकता है। प्रयोगवाद का वह व्युत्पन्न छायावादी कवियों द्वारा ही चुका था। सन्नीकान्त वर्मा के अनुसार " निरासा उनमें सर्वप्रथम थे जिन्होंने इस नये भाव बोध के साथ कुरुमुखा की रचना की थी। " डा० नामवर सिंह का मत है- निरासा की क्रायिका में संकलित १९३७-३८ की कविताओं और वागे चत्वर सन् १९४० में प्रकाशित कुरुमुखा शीर्षक लम्बी कविता से स्पष्ट है कि हिन्दी में तारु सप्तक के प्रकाशन के पहले ही नये परिवर्तन की जोरदार हवा बह चुकी थी।

वतः हिन्दी साहित्य में नये प्रयोगों का सूत्रपात निरासा की काव्यकृति कुरुमुखा से हुई है। इसके बाद प्रयोगों की चर्चा 'स्वप्न' 'उच्छ्वस्त जैती बल्फालिक एवं इस विशास भारत जैती प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में होने लगी। इनका प्रभाव वज्र पर पड़ा। उन्होंने 'वाधुनिक हिन्दी कविता' शीर्षक अंग्रेजी निबन्ध विश्व भारती में लिखा। निरासा के संदर्भ में वात्स्यायन ने लिखा है कि भौतिकता के सायास चक्कर में निरासा की कलात्मक क्षमता विपणन हो गई और पुरानी रुढ़ियों के तोड़ने की जिद में उन्होंने अपनी कविता को काफी जाति पहुँचाई। इस आरोप के सबूत ही सन् १९३७ में वज्र ने निर्णय दिया कि 'साहित्यिक शक्ति के रूप में निरासा मर चुके हैं।' लेकिन वज्र ने इस युग की दो प्रवृत्तियों को

१- नयी कविता के नये प्रतिमान पृ० ५६

२- " " " " पृ० ८६

३- डा० नामवर सिंह - कविता के नये प्रतिमान पृ० ८८

४- " " " " पृ० ८८

५- " " " " पृ० ८८

स्वीकार किया, यौन झुठठा और प्रगतिशील साहित्य के नाम पर सिली जाने वाली भावी आशापूर्ण जन कवितारें।

वज्राय ने सन् १९४३ में नये कवियों का समूह तैयार किया और उनकी रचनाओं और वक्तव्य के साथ नया काव्य संग्रह प्रकाशित किया जिसे 'तारसप्तक' नाम दिया गया। यद्यपि वज्राय ने दूसरे तारसप्तक की भूमिका में स्पष्ट लिखा है, 'प्रयोगवाद का कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे नहीं हैं न प्रयोग अपने आप में इष्ट या साध्य है। ठीक उस तरह कविता का कोई वाद नहीं, कविता भी अपने आप में इष्ट या साध्य है। अतः हमें प्रयोगवादी कहना उतना ही सार्थक या निरर्थक है, जितना हमें कवितावादी कहना।'

यद्यपि तारसप्तक के कविताओं के वक्तव्य में प्रयोगवाद का विरोध है फिर भी इन कवियों को वे प्रयोगवादी कहा गया और तारसप्तक की प्रयोगवादी रचना कहा गया। 'प्रतीक' नामक पत्रिका के माध्यम से यह आन्दोलन चर्चा का विषय बन गया। इसके बाद स्थानस्थान पर इस विषय पर चर्चा और गोष्ठियाँ आयोजित की गईं और कहीं भी की गईं।

हिन्दी काव्य में जिस समय प्रयोगवादी आन्दोलन शुरू हुआ उसी समय बिहार में प्रपञ्चाद नाम साहित्य आन्दोलन शुरू हुआ जिसे नकेन वाद भी कहा जाता है। इन कवियों ने तारसप्तक का

१- वज्राय - दूसरे सप्तक की भूमिका पृ० ६

२- डा० नरेन्द्र देव वर्मा - प्रयोगवाद पृ० ४६

विरोध किया। न - नलिन विलीजन शर्मा, क- केशरीकुमार वीर
न- नरेश ने प्रयोग की साधन न मानकर साध्य के रूप में स्वीकार करते
हैं। प्रपञ्चवाद के कवि ने प्रयोग की काव्य दर्शन के रूप में स्वीकार किया
है। इस बिन्दु पर वह वंशय के साथ है कि " प्रयोग सभी काल के
कवियों ने किया है, यद्यपि किसी एक काल की किसी विशेष दिशा में
प्रयोग करने की प्रवृत्ति होना स्वाभाविक ही है।"^१

अतः प्रयोगवादी कवियों के विरोध के बाद भी
इस युग का नाम प्रयोगवाद ही पड़ा। प्रयोगवाद के जन्मदाता के रूप
में वंशय वीर कृति "तार सप्तक" की स्वीकार किया गया। प्रयोगवाद
के इस परम्परा में वागे चलकर मुक्तिबोध, भ्राकर माधवी, शमशेर बहादुर
वादि कवि जुड़ गये। इस प्रकार हिन्दी साहित्य की यह परम्परा तीव्र
गति से वागे बढ़ती गई।

प्रयोगवादी काव्य का अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय परिस्थितियाँ

प्रयोगवादी काव्य में तत्कालीन समाज की
राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ का प्रभाव पड़ा है। लेकिन
प्रयोगवादी कवियों ने समाज की इतना गहरा चित्रण नहीं किया है,
जितना की प्रगतिवादी कवियों ने किया है। प्रयोगवादी कवियों की
मुख्य चेतना व्यक्तिवादी होने के कारण इनका ध्यान समाज वीर परि-

१- डा० नरेन्द्र देव वर्मा- प्रयोगवाद पृ० ४६

२- वंशय - तार सप्तक पृ० २७६

स्थिति की और कम गया है। इन कवियों ने अन्तर्भूत का विश्लेषण किया है। इसलिए प्रयोगवादी कवियों ने मानव मन की क्रायक और दुःख के बाधा पर चित्रित करने का प्रयास है। फिर भी तत्कालीन परिस्थितियों का केवल इस प्रकार से है।

देश के विभाजन का चित्रण

भारत की स्वतन्त्रता देने से पूर्व ही भारत के सपने कर दिया गया जिसके फलस्वरूप देश में साम्प्रदायिक दंगे हुए जिसकी अभिव्यक्ति साहित्य में मिलती है :

बैर की पर नासियों से हंस-हंस के
हमने सीधी जो राजनीति की रेली
उसमें जाज बह रही हूँ की नदियाँ हैं।
कल हो जिसमें साक फिट्टी कह के हमने कुत्ता था
घरणा की जाज उसमें फग गयी रेली
फसल काटने की जगत सदियाँ हैं। " १

भारत के तत्कालीन राजनीतिक क्षेत्र में साम्प्रदायिकता और विद्वेष की भावना प्रसृत थी। भारत स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न कर रही थी तो ब्रिटिश शासक स्वतन्त्रता न मिले इसके लिए मुस्लिम लीग के माध्यम से बाधा डाल रहे थे जैसा कि बच्चन की कविता " देश विभाजन " में देखिये -

१- वीजय - हंस् दिसेम्बर १९४७ फग गयी रेली पृ० १६४

“ विदेश की कू नीति ही गई सफल
समस्त जाति की न काम दी कल
सकी न भाँप एक बात एक कल

० ०

यही स्वतन्त्रता लता गया लगा
कि मुक्त वीर-वीर लून से रंगा
बितरी बीज फूट के हुवा कलंग
स्वदेश सर्व कास की गया ठगा
गरल गया
उसीध नीध
मूल में । “ १

कतः इस युग के वल्य कवियों जैसे- केदारनाथ
अग्रवाल, शिव मंगल सिंह सुमन वादिमें भी राष्ठीय परिस्थितियों का
चित्रण देता जा सकता है। इस युग की दूसरी घटना साम्प्रदायिक दंगों
एवं उसकी परिस्थितियों का चित्रण भी तत्कालीन कवियों ने अपनी
रचनाओं में किया है। जैसे बच्चन, उदयकिशोर भट्ट वादि ।

शरणार्थी समस्या

भारत की स्वतन्त्रता के साथ ही देश का विभाजन
हुवा जिसके फलस्वरूप बहुत से लोग एक देश से दूसरे देश की गये । इस
परिवर्तन के कारण दंगा, लूट - पाट, जागजी, वीर अशान्ति का वाता-

१- बच्चन - धार के स्धर उधर पृ० ८५- ८६

वर्ण उत्पन्न हो गया । तत्कालीन समाज इससे प्रभावित रहा इसलिए साहित्य में इसका चित्रण इस प्रकार से हुआ है :

दूध तक तम्बू तने हैं
 तेसरी बाहर
 दीन कटे कर नाक टूटी टंगि वाली
 बच्चे बांधि उजली पट्टियाँ
 हम फँदे हैं तम्बूवाँ में----- ।^१

शरणार्थी समस्या की और बच्चन का भी ध्यान गया । इसलिए बच्चन के काव्य में इसकी अभिव्यक्ति देखी जा सकती है :

कैसे हम उन लालों को सकते हैं बिसार
 पुस्तक पुस्त की धरती को कर नमस्कार ।
 जो जले काफिलों में मीलों के सिर बास
 कोई उनकी वफाएगा बाहि पसार
 जो मटक रहे अब भी सहते मानापमान
 बाजादो का दिन मना रहा हिन्दीस्तान ॥^२

इस शरणार्थी समस्या के कारण भारतीय समाज में अज्ञान और कुराफा की भावना उत्पन्न होगई , जीवन मूल्य और जीवन दृष्टि तेजी से बदलने लगी । अस्थिरता एवं अनीतिक जीवन का सूत्र-पात हुआ । देश में असीतौष और अराजकता का वातावरण हा गया ।

१- हरिनारायण व्यास : दूसरा सप्ताह - पृ० ७५

२- बच्चन- धार के स्तर उधर पृ० ६९

समाज की पुरानी मान्यताएँ टूटने लगी मनुष्य का मनुष्य पर से विश्वास उठने लगा । भारत की स्वतन्त्रता की लुप्त हुःल और बीत्कार में बदल गई । अतः तत्कालीन कवियों ने इस बदलते स्वरूप को पहचाना । वंशय की कविता का यह स्वरूप द्रष्टव्य है :

दो सर्प चले जाते हैं
बंध गयी लीक दोनों की
वह हमारा सर्प
हम जा रहे हैं उस वीर
जिसमें सुना है। * १

इसके वतिरिक्त प्रयोगवादी काव्य में काश्मीर समस्या और देशी रियासतों की समस्याओं का चित्रण गिरिजाकुमार माधुर, शिव मंगल सिंह सुमन, प्रभाकर माजरे, और बच्चन आदि के काव्य में देखी जा सकती है।

बापू हत्या काण्ड

यह प्रयोगवादी युग की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। हिन्दी साहित्य पर बापू की हत्या का प्रभाव दो रूपों में भिन्नता है :

- १- वंशय- प्रतीक - हेमन्त कंक ४ पृ० ७
- २- गिरिजाकुमार माधुर : ध्रुव के ध्यान ५०२
- ३- सुमन- प्रलय सृजन पृ० ७६
- ४- प्रभाकर माजरे - अनुवाण पृ० ७६ ईस १९४७ कंक २
- ५- बच्चन- धार के स्तर उधर पृ० ८०

(१) बापू के निधन पर शोक प्रकट किया और
वासु बहाये हैं।

(२) बापू के निधन पर उनके वादशर्मा की ग्रहण
करने की प्रतिज्ञा ली है।

प्रथम प्रकार का चित्रण राष्ट्रीय कवियों के काव्यों
में देखी जा सकती है जिसमें कवियों ने महात्मा गांधी की राष्ट्रीय नेता के
रूप में स्वीकार करते हुए दुःख प्रकट करते हैं। जैसे- सुमित्रानन्दन पन्त, बच्चन,
और गिरिजाकुमार माथुर आदि ।

‘तप में रही वस्थियाँ से
जब बज्र हुआ निर्माण
भिट्टी नव युग तन का हस्तन
रखि बहिन नई उठान
तुम्हो मरकर मृत्यु भिटा दी
विश्व निहाल हुआ ।’ १

दूसरा रूप हिन्दी साहित्य के प्रातिवादी दृष्टि-
कोण की लेकर चलने वाले कवियों—जैसे- नागार्जुन की कविता में बापू के
वादशर्मा की स्मृति लेकर प्रतिज्ञा ली है— ‘है बापू तुम्हारे द्वारा शान्ति

१- गिरिजाकुमार माथुर - ईस दिसम्बर ६ सन् १९४७

वीर कृता की जो दीप तिला जलाई गई है वह कभी बुझ न पायेगी^१।

इस युग के वन्द्य कवियों बच्चन, शिवमंगल सिंह सुमन वादि की रचनाओं में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। सुमन जी की दृष्टि में बापू का हत्यारा रावणवीर कंस दुर्योधन वीर हिरण्यकश्यप की श्रेणी में आता है^२। बच्चन की दृष्टि में बापू का हत्यारा पूरी परम्पराओं का प्रतीक है, जो अपनी राग द्वेष के कारण बापू की हत्या करता है, लेकिन स्वयं कभी वागे नहीं आया^३।

इस प्रकार गांधी हत्याकाण्ड वाधुनिक युग की महत्वपूर्ण घटना है, जिसने वाधुनिक युग को प्रभावित किया है। भारतीय राजनीति के क्षेत्र में गांधी जी का अपना स्थान था। जिससे संपूर्ण भारतीय राजनीति संज्ञास्ति होती थी। बापू की मृत्यु के साथ ही राजनीति के क्षेत्र में अस्थिरताजानी शुरू हो गयी।

१- हाँ बापू निष्ठापूर्वक मैं शपथ आज लेता हूँ

हिंदुस्तान के ये पुत्र-पौत्र जब तक निर्मल न होंगे

हिन्दू मुसलिम सिख फासिस्टों से न हमारी

मातृ भूमि यह जब तक सली होगी

सम्राज्यवादी दैत्यों के निकट लौह

जब तक सण्डहर न बनेंगे

तब तक मैं उनके तिलाफ सिलता जाऊँगा ।।

- युगधारा पृ० ५७-५८

२- शिवमंगल सिंह सुमन- पर वसति नहीं भरी पृ० १०१, १०२

३- बच्चन - सादी के फूल पृ० ५४

प्रयोगवादी काव्य पर युद्ध का प्रभाव

हिन्दी साहित्य में जिस समय प्रयोगवादी काव्य लिखा जा रहा था। उस समय विश्व में द्वितीय महायुद्ध के बाद की परिस्थितियों के प्रभाव से कुंठा और निराशा का वातावरण था। अतः इस युग के कवि द्वितीय महायुद्ध के प्रभाव से उत्पन्न परिस्थितियों के अनुरूप ही अपनी रचना लिख रहे थे। भारतीय समाज पर विश्व युद्ध की निराशा और कुंठा का व्यापक प्रभाव नहीं पड़ा लेकिन हिन्दी कवि योरोपीय साहित्य का प्रभाव होने के कारण हिन्दी साहित्य में भी इस युग की युद्ध और उसके प्रभाव का चित्रण किया जा रहा था। युद्ध ही वाधुनिक युग के मानव की प्रमुख समस्या है। दिनकर के शब्दों में, “युद्ध निहित और दूर वर्ण है किन्तु इसका दायित्व किस पर होना चाहिए? उस पर जो नीतियों के जाल बिछाकर प्रतिकार की वामन्त्रण देता है? या उस पर जो जाल की शिन् भिन्न कर देने के लिए वातुर है।” नये कवियों में नरेश मेहता, धर्मवीर भारती और लक्ष्मीकान्त वर्मा ने विचार किया है, देवराज ने अपने साहित्य में युद्ध की पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए, “शक्ति लालसा और सम्मान लालसा की भावनावर्ष का उत्प्रेत किया है। पृथ्वी की गोद में खेलने वाले बच्चे अन्न दूध घी का सेवन बाद में करते रहेंगे पहले तो देशों को युद्ध के उपकरण स्वतंत्र कर सम्मान और शक्ति का संचय करना चाहिए।”

इस प्रकार से भारतीय साहित्यकारों ने द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर सोचते हुए उसका विरोध किया है, क्योंकि

१- राधारी सिंह दिनकर - कुरुक्षेत्र (निवेदन) पृ० १

२- देवराज - धरती और स्वर्ग पृ० ८६

युद्ध के कारण मनुष्य का जीवन संकट में पड़ गया है :

“ युद्ध की ज्वाला जगी है।
 था सकल संसार बैठा
 बुद्धि में बाह्य भरकर
 क्रोध हंथियाँ देखा मद की
 प्रेम सुमनावलि निवह कर
 एक चिनगारी उठी ली वाग दुनिया में लगी है
 युद्ध की ज्वाला जगी है। ” १

इस युद्ध की भारतीय कवि बहिष्ता वीर शान्ति के रूप में बदल देने के उद्देश्य से कहते हैं :

ताना सा कर कमी में बिस्तर पर लेटा
 सोच रहा था मैं मन ही मन हिटलर बैठा
 कड़ा मूर्ख है, जो लड़ता है सुख दुःख मिट्टी के
 कारण ।
 पाण मंगूर ही तो है रे । यह सब वैभव धन
 वन्त लेगी राय न कुछ दी दिन का भेता । ” २

द्वितीय महायुद्ध में प्रयुक्त विस्फोटों का चित्रण हिन्दी कवितावली में देखा जा सकता है :

“ दूर सात सिन्धु पार
 वणु का विस्फोट हुआ

१- बच्चन - धार के स्वर उधर पृ० १६

२- भारत भू-वर्णन अग्रवाल - तार स्फोटक पृ० ६६

उड़ गई उड़क की धजियाँ
 जिसके धड़के की धमक से
 लीण काय स्वर धारी नारी का दम झूटा
 एक सधु हिक्की से त्यागे उन्होंने प्राण ॥ १

एक बम काण्ड से हुए विनाश का चित्रण प्रयोग
 वादी युग के कवि धर्मवीर भारती की कविता में द्रष्टव्य है :

पृथ्वी पर रसमयी वनस्पति नहीं होगी
 शिशु होंगे विकलांग और कुण्ठा ग्रस्त ।
 सारी मनुष्य जाति बौनी ही जायेगी । २

बम काण्ड के कारण मनुष्य का जीवन संकट ग्रस्त होगया, मृत्यु के प्रति
 आधुनिक दार्शनिकों का ध्यान गया । ईश्वर की सत्ता के स्थान पर मनुष्य
 के प्रति भय उत्पन्न हो गया -

“ जीवन क्या है ?
 मृत्यु क्यों ?
 मुक्ति कैसे
 ईश्वर कहाँ ? ” ३

इसकी प्रतिक्रिया साहित्यकारों और दार्शनिकों
 के मन पर कुंठा निराशा, संत्रास आदि के रूप में हुई है। द्वितीय महायुद्ध

१- भारतभूषण अग्रवाल- वी अप्रस्तुत मन पृ० ५६

२- बन्धा युग पृ० ६३

३- डा० हरिचरण शर्मा- नयी कविता का मूल्यकिन परम्परा और प्रगति
 की भूमिका पृ० १५७

के बाद साहित्य के भारत पर युद्ध की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त हुई है। इसलिए प्रयोगवादी कविता में दण्ड भंगुरता और निराशावादी की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।

प्रयोगवादी काव्य में चित्रित व्यक्तिवाद

प्रयोगवादी काव्य के संदर्भ में शिवदान सिंह चौहान का मत है, “ प्रयोगवाद के समर्थक अधिकांश में व्यक्तिवादी हैं। क्योंकि वे ~~अपने~~ अवचेतन मन की शक्त और अज्ञात कन्दराओं में छुकर मनुष्य की काम वासनाओं का साक्षात्कार करते हैं। इस प्रकार व्यक्ति मानस की ही समस्त घटनाओं और सम्बन्धों का केन्द्र और कारण मानने के कारण वैयक्तिक भूमि पर आता है। ” प्रयोगवादी युग की अधिकांश कविता पर वाधुनिक समाज का प्रभाव है, इसलिए प्रयोगवादी कविता के संदर्भ में डा० रामदत्त मिश्र का मतभी कुछ इस प्रकार का है :

“ प्रयोगवादी कविता द्रासोन्मुख मध्य समाज के जीवन का चित्र है। प्रयोगवादी कवि ने जिस नए सत्य का शोध और प्रेक्षण करने के लिए मध्यवर्गीय समाज के व्यक्ति का सत्य था । ” वहीं तार सप्तक में संकलित कविताओं में वर्णित है, जैसे - “ कवि गाते हैं । इस दण्ड में व्यक्तित्व और मण्डहर वादि राम गिलास शर्मा की कविता

१- काव्यधारा पृ० २०३- २०४

२- हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास भाग १४ पृ० १३६

३- नैमिचन्द्र जैन - तार सप्तक पृ० ६

४- “ “ पृ० १८

कवि, किसान कवि और उसका पुत्र^१ वादि में व्यक्तिवादी चेतना का स्वर प्रसृत है। इसी प्रकार प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माधुर वादि की कविताओं को लिया जा सकता है। अतः प्रयोगवादी कविताओं में व्यक्ति प्रेम और परिस्थिति का केंद्रन इस रूप में हुआ है :

जी भी जहाँ भी फिस्ता है
पर हारता नहीं न मरता है
पीड़ित श्रम रत मानव
विविजित दुर्जय मानव
कम कर श्रम कर शिल्पी ब्रह्मा ।
उसकी मैं कथा हूँ ।^२

वाधुनिक परिस्थितियाँ और परिवेश से उत्पन्न
कुंठा का चित्रण साहित्य में देता जा सकता है :

थी हृदय में चाह
जी में था बहुत उत्साह
कड़ा करके जी कमर कस चला पड़ा था
उस दिवस वस्तान
व्यक्तियों के स्वत्व-संगर में जड़ाने
एक निज का दान ।
सौचता था : अब हुआ जीवन सफल
मिट गया अधियारा ॥^३

१- गजानन मुक्तिबोध : तार ७४ ७५ सप्तक ५० ७०

२- रामविलास शर्मा : तार सप्तक ५० २३३ और २५७

३- वीर्य - हनुमन्तु रॉदि हुए थे ५० २०

इसी प्रकार प्रयोगवादी काव्य में प्रेम के अभाव में उत्पन्न कृण्ठाओं का चित्रण मिलता है। प्रयोगवादी युग के कवि स्वच्छन्द प्रेम के उपासक हैं, लेकिन भारतीय समाज में स्वच्छन्द प्रेम की मान्यता न होने के कारण इनके मन में समाज के प्रति विद्रोह है :

‘ ठहर ठहर बात तायी । जरा सुन ले
मेरे कुछ वीर्य की पुकार आज सुन जा
रागातीत दर्पस्फीत कतल कतुलनीय
मेरी अवहेलना की टक्कर सहारा ले
जाण भर स्थिर खड़ा रह ले
मेरे वृद्ध पौरुष की एक जोट सह ले । ’ १

प्रयोगवादी कविता में कवियों के उन्हें की स्वीकार किया है। इसलिए व्यक्तिवादी चेतना की अभिव्यक्ति उन्हें के माध्यम से की गई है :

शक्ति असीम है
मैं शक्ति का वणु हूँ
मैं भी असीम हूँ । ’ २

अतः प्रयोगवाद के अन्य कवियों की भाँति अन्य कविता में उन्हें की अभिव्यक्ति इस प्रकार से हुई है :

‘ पर न हिम्मत खार
प्रज्वलित है प्राण मैं अब भी व्यथा का दीप

ढास उसमें शक्ति अपनी

तौ उठा । १

प्रयोगवादी काव्य में जहाँ की अभिव्यक्ति मनुष्य के दुःख और सुख की अभिव्यक्ति के लिए भी किया गया है :

दुःख सबको मज्जा है

और

चाह स्वयं सबको मुक्ति देता न जाने, किन्तु

जिसको मज्जा है

उन्हें यह सरिता देता है कि सबको मुक्त

रहे । २

इसी प्रकार भारती ने भी अपनी कविताओं में जहाँ के स्वर को प्रमुक्तता प्रदान किया है। अतः प्रयोगवाद का व्यक्तित्व अपनी को समाज से कटा हुआ समझ कर उसकी अभिव्यक्ति साहित्य में करता है।

प्रयोगवादी काव्य में कनास्था एवं संशय की अभिव्यक्ति

प्रयोगवादी युग के प्रत्येक कवि के साहित्य में किसी न किसी रूप में कनास्था और संशय की अभिव्यक्ति हुई है। द्वितीय महा-युद्ध के कारण वाधुनिक जीवन में कनास्था और संशय की स्थिति थी। भारतीय राजनीति के क्षेत्र में स्वतन्त्रता न मिलने के कारण निराशा

१- भारत भूषण अग्रवाल - बी अप्रस्तुत पृ० ५३

२- अज्ञेय - हरी घास पर चाण भर पृ० ५५

थी। इन कारणों से नवयुवकों के मन में निराशा थी। मध्यमर्गीय लोगों की सीमा और परिस्थिति उनकी सामाजिक बन्धन में मजबूर किये हुए थी। इसलिए उनके मन में सामाजिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह की भावना थी। इन कारणों से प्रयोगवादी काव्य में संशय और अनास्था की अभिव्यक्ति है :

“ मैं ही हूँ वह फटाफूट रिरियाता हुआ ^१ । ”

ऐसी भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। आधुनिक युग की बदलती हुई परिस्थितियों के कारण उत्पन्न दुविधा और अनिश्चय से उत्पन्न परिस्थिति का चित्रण वज्रय ने अपने काव्य में किया है :

ऐसी परिस्थिति की
मेरा मनोबल भला कब सहेगा । ^२

प्रयोगवादी काव्य में चित्रित अस्तित्व बोध

द्वितीय महायुद्ध के बाद ही समाज में अस्तित्व बोध की भावना ने जन्म लिया व्यक्ति का जीवन संकट ग्रस्त हो गया। विज्ञान और युद्ध के कारण मनुष्य के जीवन पर संकट आ गया। इस संदर्भ में पार्श्वात्य विचारकों ने गम्भीरता से सोचना आरम्भ किया और अस्तित्ववादी दर्शन का अभ्युदय हुआ :

“ किन्तु हम हैं द्वीप
हम धारा नहीं हैं
स्थिर समर्पण है हमारा ।
हम सदा से द्वीप हैं श्रोत स्वर्गी के ।

१- वज्रय - इत्यतम् पृ० १६५

२- .. इन्द्रधनु रवि हुए थे पृ० ७६

किन्तु हम बहते नहीं हैं,
क्योंकि बहना रेत हीना है। ** १

वतः प्रयोगवाद के अन्य कवियों की कविताओं पर
वस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव पड़ा है।

प्रयोगवादी काव्य में चित्रित मध्य वर्ग

प्रयोगवादी युग के कवि मध्यवर्गीय हैं। वतः
प्रयोगवादी कवियों ने मध्यवर्गीय जीवन का समग्र रूप में चित्रित किया है।
वस्तुतः ये कवि व्यक्तिवादी दर्शन से प्रभावित हैं। वाधुनिकयुग का समाज
वर्गीकरण का समाज है जिसमें व्यक्ति अपनी परिस्थितिस्व परिेश
से स्वयं संघर्ष कर रहा है :

** तुमने कब भेली संक्रान्ति
तुम क्या सम्झोगे जी प्रभु
एन मर्यादारीधों का दर्द
कैसे तरुणाई में ही
घुट भर जाते हैं विश्वास । * २

धर्मवीर भारती की कविता में वाधुनिक समाज
में बदलती नैतिक मूल्यों का केंद्र इस प्रकार से हुआ है :

मर्यादा मत तोड़ों
तोड़ी हुई मर्यादा

१- धर्मवीर भारती : सात गीत वर्षा पृ० ४३

२- अन्धा युग - पृ० १६

कूचते हुए वज्रगर से
गुंबलिका में कौरव - वंश को लपेट कर
धूसरी लकड़ी से तोड़ डालेगी । १

प्रभाकर माचवे की कविता में वाधुनिक समाज में
किसान के शोषण का चित्रण हुवा है :

बहुत कुछ जायेगा लगान
कुछ जायेगी कर्ज किस्त
बाकी रह जायेगी
फसोपड़ियों की उन धूसरी कतहियों के लिए धूसरी
रक केर रोट्टी । २

मुक्तिबोध की रचना 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में
संस्कृति और नैतिकता के नाम पर व्यक्ति का किस प्रकार से शोषण
हो रहा है। संस्कृति के नाम पर वाधुनिक युग में मनुष्य पर कितना
दबाव है, चाँद का चित्रण हुवा है। गाँधी जी की मृत्यु के बाद भारतीय
समाज की बदलती हुई परिस्थिति में मध्यवर्ग की स्थिति क्या है ? चाँद
का चित्रण हुवा है।

प्रयोगवादी काव्य में चित्रित शहरी समाज

प्रयोगवादी युग का समाज यांत्रिक सभ्यता का
वाधुनिक समाज है जिसमें यन्त्र की महत्ता अधिक है। वाधुनिक समाज में

-----०००अन्धकार०युग०पृ००००००

१- अन्धा युग पृ० १६

२- तार सप्तक पृ० १६६

३- चाँद का मुँह टेढ़ा है पृ० ३२-३३

मनुष्य का अस्तित्व एक मशीन के पुर्ज के समान है जिसे कभी भी बदला जा सकता है। अतः आधुनिक समाज में व्यक्ति का अस्तित्व ही संकट ग्रस्त है, “ सात्रं का विद्रोही व्यक्तित्व समूची ऐतिहासिक स्थापनाओं की अस्वीकृति और व्यक्ति की अबाध स्वतन्त्रता का समर्थन करता हुआ, समसामयिक व्यक्ति तत्त्व को पूर्णतः जल्दुा हुआ, वर्णन करने के अधिकार से वंचित मानता है, और आत्मेयर काँसू आधुनिक जीवन की असीत स्थिति को आत्म घातक निरूपित करता है। ” इसलिए वंशय की कविता में व्यक्तिवादी भावना मिलती है :

“ केवल जो अस्पृश्य ग्राह्य कह

तज बापी में अस्तित्व की सवा

जिसके भय से त्रस्त बीढ़ती काली घृणा झुका
उतना ही वही हताहत उसने लिया ।

और मुझको आत्सल्य मरा आशिश देकर
बोक भर पिया । ” २

प्रयोगवादी काव्य में आधुनिक समाज का वह मध्यमर्गीय पुरुष है जिसका अन्धुदय आधुनिक परिस्थिति में हुक्क है :

यह व्यक्ति और समाज का

उत्पन्न मथन कात है

संक्रान्ति की घड़ियाँ बनी हैं शृंखला

बँधी हुई है देह

मन की बाँधने बढ़ते पतन के हाथ हैं। ” ३

१- डा० श्याम सुन्दर मिश्र - अस्तित्ववाद और द्वितीय समरीनर हिन्दी साहित्य पृ० १३६

२- वंशय- वागिन के पार द्वार पृ० ५६

३- पृ० ५६

जटिल यांत्रिक व्यवस्था ने सर्वत्र मानवीय
संवेदनाओं, स्व-पर्याप्तताओं का हनन किया है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात्
भारत में जैसा अमानवीय और नैतिक परिवेश उत्पन्न हुआ उसकी अभि-
व्यक्ति "भारती" के काव्य में देखा जा सकता है :

“ यह युग एक वैधा समुद्र है
 चारों ओर से फटाहों से घिरा हुआ
 वीर दारों से
 वीर गुफावाँ से
 उमड़ते हुए भयानक तूफान चारों ओर से
 उसे मथ रहे हैं। ” १

युद्धोपरान्त निष्क्रियता, मय, संक्रांस, कुण्ठा,
 द्वेष आदि विकृति वांस्करूपता बाज भी विश्व में देखी जा सकती है :

युद्धोपरान्त
यह वीधा युग क्षरित हुआ
जिसमें स्थितियाँ मनोवृत्तियाँ आत्माएँ सब विकृत हैं,
हैं एक बहुत फतली डोरी मर्यादा की । २

वाधुनिक समाज में मानव जीवन यंत्रित हो गया है, जिसमें घुटन, कूँठा और निराशा है।

“ बीसवीं सदी ने यही दिया है
जबकि एक वाहन नवीन

१- धर्मवीर भारती- कन्धा युग पृ० ७४

२- ,,
५० १२

बाया त्यों ही उसमें सवार
कितने समीन निज की कुलीन
शक्ति विचारा मलिन दीन । १

अतः इस कविता में आधुनिक मानव और उसकी परिस्थिति का वर्णन है। दूसरी कविता कसूरपुरी में वस से इह में कवि ने मानव की मशीन के सम्मुख हीन बताया है। वास्तविकता भी यही है। बाज के समाज में मनुष्य का उपयोग पुर्ब के समान है, जिसे कभी भी बदल दिया जा सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि प्रयोगवादी साहित्य में समाज और युग परिस्थिति के साथ साथ राजनीतिक परिस्थिति का प्रभाव पड़ा है। अतः प्रयोगवादी परम्परा में समाजवादी परम्परा के साथ व्यक्तिवादी चेतना भी देखी जा सकती है :

१- प्रयोगवाद के वे कवि जिनमें सामाजिक यथार्थ है। जैसे- डा० राम विलास शर्मा और मुक्तिबोध आदि ।

२- व्यक्तिवादी चेतना को लेकर लिखी गयी कवि जैसे- अज्ञेय और गिरिजाकुमार माथुर आदि ।

१- प्रभाकर माधवे- तार सप्तक पृ० २०४

२- तीसरा सप्तक पृ० ६०-६१

३- प्रभाकर माधवे - तार सप्तक पृ० २०४

प्रयोगवादी काव्य में व्यक्तिवाद की ही प्रधानता होने के कारण आधुनिक समाज में व्यक्ति का चित्रण उसकी परिस्थिति और सामाजिकता के साथ हुआ है। प्रयोगवादी युग के कवि समाज के मध्य वर्ग के हैं। उक्तः उनके काव्य में समाज की मध्यवर्गीय चेतना की प्रमुक्ता है।

उक्तः यह कहा जा सकता है कि प्रयोगवादी कवियों ने अपनी वैयक्तिक प्रवृत्ति के कारण सम्पूर्ण समाज की प्रमुक्ता न देकर एक विशिष्ट वर्ग (मध्य वर्ग) की तथा व्यक्ति विशेष की प्रमुख स्वर प्रदान किया है।

निष्कर्षतः प्रयोगवादी कविता व्यक्ति मूलक तथा अन्तर्मुखी कविता है।

चतुर्थ अध्याय

नयी कविता में चित्रित समाज

हिन्दी काव्य में सन् १९३६ के आस पास नयी प्रवृत्ति का विकास होने लगा था। सन् १९३६ में ही नरीमन सागर के सम्पादकत्व में उच्चैःस्त नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन केस नयी कविता का विकास शुरू हुआ। सन् १९४१ में केदार नाथ सिंह कृत 'सेहस कैप' प्रभाकर माजवे कृत 'गारि हरवाहे' तथा मालव संघारें जैसे रचनाओं का सुरुवात हुआ। अतः हिन्दी काव्य के बीच १९३६ से १९४४ तक और १९४४ से १९४९ तक नयी कविता का वार्षिक स्वस्मय चलने लगा था। सन् १९४० से १९४३ तक की कविता में परिवेश के प्रति जागृकता, सामाजिक क्लेश, युद्ध जनित परिस्थिति, मानवीय संवेदनाओं और नवमानवतावादी प्रभाव उभरने लगा।

सन् १९४० के बाद हिन्दी काव्य की प्रयोगवादी धारा नयी कविता के रूप में उभरने लगी। सन् १९४४ में नयी कवितानामक संकलन का विधिवत् प्रकाशन हुआ। सन् १९४४ में डा० जगदीश गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में नयी कविता नामक अर्द्ध वार्षिक पत्रिका स्थापना

- १- 'मेघ' की प्रवृत्ति में प्रभाकर माजवे (१९१७) ने दावा किया है कि जनवरी १९३६ के विज्ञापन भारत में प्रकाशित उनकी दो इम्प्रो-विस्ट कविताओं (कर्मसाधन और देहाती मेला) के प्रकाशन से नयी कविता प्रारम्भ हुई। - डा० सत्यनारायण वाष्णीय- द्वितीय महायुद्धोत्तर

हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० २१०

- २- 'तारसप्तक' (१९४३ ई०) के प्रकाशनकाल के बाद प्रयोगवाद का स्फूर्त ठीक तरह से चलता रहा। बाद में प्रयोगवाद के स्थान पर नयी कविता का दौर आया। -

- डा० रवीन्द्र प्रमर- समकालीन हिन्दी कविता पृ० ३७

- ३- नयी कविता पुस्तक: १९४३ ई० में नये पौ के प्रकाशन के साथ विकसित हुई, और जगदीश गुप्त तथा रामस्वरूप चतुर्वेदी के सम्पादन में प्रकाशित होने

बुद्धिजीवियों को भी अनुभूत होने लगी है, इसलिए उनमें और यूरोपियन कवियों में थोड़ा बहुत साम्य दिखता है दे रहा है।

हिन्दी साहित्य की नयी कविता वाधुनिक समाज की कविता है जिस पर नये वैज्ञानिक एवं पारम्पर्य सभ्यता के कारण समाज में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव पड़ा है।

नयी कविता का भारतीय समाज

भारतीय समाज का पुराना स्वरूप बदलने लगा । देश में वैज्ञानिक औद्योगिक तकनीकी विकास के फलस्वरूप समाज की स्वरूपमान्यताएँ टूटने लगी । परन्तु भारत में जनता के सामने एक वादों था, सत्य था । अनुशासन था और एकता की भावना थी । किन्तु स्वतन्त्र भारत में यह भावना क्षिप्त भिन्न हो गयी , जीवन में कोई अनुशासन न रह गया । समाज में प्रवृत्तियों और टूटते नैतिक एवं धार्मिक मूल्य रह गये । अतः आज का नवयुग समाज के प्रति विद्रोह, क्रान्ति के साथ परिवर्तन करने के लिए संघर्ष कर रहा है। नयी कविता पर महानगरी सभ्यता का भी प्रभाव पड़ा आज का मानव यन्त्रवत् जीवन से ऊब गया है। यान्त्रिक सभ्यता ने मानवीय संवेदना को नष्ट कर दिया जिसकी अभिव्यक्ति नयी कविता के कवियों ने अपनी काव्य में किया है। नयी कविता प्राचीन मान्यताओं एवं धार्मिक एवं सामाजिक रुढ़ियों के प्रति विद्रोह करती है। वाधुनिक युग का मनुष्य अपनी वाफो संज्ञास , कुंठित एवं निराशाजन्य परिस्थिति में

पाता है।

अतः नयी कविता पर तत्कालीन समाज एवं परिस्थिति का प्रभाव पड़ा है। नयीकविता अपने वपूर्ववर्ती काव्य परम्परा के प्रभाव को भी स्वीकार करती है। इसलिए विचार के क्षेत्र में नयी कविता प्रगतिवाद और प्रयोगवाद दोनों के प्रभाव को ग्रहण करती है। नयी कविता में कवि जहाँ व्यक्तिवादी चेतना के अनुसृत काव्यों की रचना करते हैं वहीं तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था और जटिल समाज व्यवस्था को स्वीकार करते हैं। नयी कविता का समाज आधुनिक युग का समाज है जिस पर यान्त्रिक सभ्यता का प्रभाव है। डा० इन्द्रनाथ मदान के अनुसार, “ नयी कविता में आधुनिकता का भाव बोध है और इस भाव बोध की अभिव्यक्ति के लिए मात्र उन विषयों और प्रतीकों का प्रयोग है जो यथार्थ जीवन की उपज है। ”

नयी कविता का कवि समाज की पुरानी मान्यताओं को अस्वीकार करते हुए नयी मान्यताओं को भी ग्रहण करता है। ”

१- स्वतन्त्र भारत का मध्यमगीय बुद्धिजीवी टैबूज और रुढ़ियों को तोड़ने की बसवती लम्बा रस्ती हुए भी अपने को विवशता का शिकार बना हुआ पाता है, जिसके फलस्वरूप उसमें हूँठा, स्काफीफ, क्लबफीफ, घुटन निरुद्देश्यता, नपुंसक आक्रोश आदि मानसिक स्थितियाँ उत्पन्न हुए बिना नहीं रहती । ”

- डा० लक्ष्मीसागर वाष्णीय- द्वितीय महायुद्धोपरि हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ७४

२- आधुनिक कविता का मूल्यकिन पृ० ८७

३- “ कला के कृतित्व का अन्धातुरण विघातक होगा । निरी गतानु- गतिता से कला की परम्परा की रक्षा कदापि नहीं होती, क्योंकि जो केवल आवृत्ति है वह नूतन नहीं है और नूतनता के समकार के बिना वह कला ही नहीं है।

- अजय- प्रियंका १० ३६

क्तः नयी कविता में प्रगतिवादी युग के समान विद्रोह की भावना का भी चित्रण हुआ है। नयी कविता में प्रयोगवादी कवियों के समान व्यक्तिवादी चेतना के आधार पर मानव मन की संज्ञा, कृष्ठा निराशाओं आदि को स्वीकार करता है।

नयी कविता की साहित्यिक पृष्ठभूमि पर इन सभी परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा है। नयी कविता पर वैज्ञानिक एवं सामाजिक दोनों प्रभाव पड़े हैं। नयी कविता में अभिव्यक्ति जीवन दर्शन पार्श्वात्य है लेकिन पृष्ठभूमि भारतीय है। इसलिए नयी कविता में समाज में व्याप्त, कृष्ठा, निराशा, मृत्युबोध एवं महानगरीय जीवन के अक्षेप की यथार्थ के स्तर पर व्यक्त करने में नयी कविता पूर्णतः सक्षम है। नयी कविता ने समाज के टूटते हुए सम्बन्धों और जीवन में जाह्न रिक्तता को चित्रण किया है।

जब , चीन, मलय, नव हिन्द चीन,

ब्रह्मा भारत वृद्ध फिलिस्तीन ॥ १

इसी प्रकार गिरिजाकुमार माथुर की हृदय देश नामक कविता में कवि ने अफ्रीका की स्वाधीनता पर हर्ष प्रकट किया है और साम्राज्यवादी शक्ति द्वारा किये जाने वाले शोषणकारी कार्यों का विरोध किया है :

फिर नई शक्ति का यन्त्र उठा

उद्योग और व्यापारी का फैला प्रसार

पूँजी के चलन बेल बढ़ी

बेल की सीमायें सिमटीं

वारम्भ ही गई वौद नये बाजारों की

बँधी लिप्सा वह उपनिवेश हथियाने की । " ३

प्रस्तुत कविता में कवि ने साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा अपना अधिकार क्षेत्र बढ़ाने की चर्चा भी बहुत सुन्दर ढंग से की है। आधुनिक युग के पूँजीपति और उद्योगपति आधुनिक विज्ञान का प्रयोग अहित में न करके जनता के शोषण हित में करते हैं, इसी संदर्भ में ब्रिटिश सरकार द्वारा किये गये भारत में शोषण का चित्रण गिरिजाकुमार माथुर की कविता में इस रूप में मिलता है :

“ फिर रेत तार के कसी धरा,

जम गये दासता के निशान ।

१- गिरिजाकुमार माथुर - धूप के धान पृ० २४

२- गिरिजाकुमार माथुर : शिलापत्त चम्कीले पृ० ५५

३- गिरिजाकुमार माथुर - धूप के धान पृ० ३६

मैली फाँफूद से शहर उगे,
कस्से व्यापारिक केन्द्र स्थान ।

०

०

चिकनी सड़कों के वास- पास,
फैली तमिस्त्र गंदी गलियाँ
श्री , सुत, सम्पदा विदित गई,
एह गरीबी की कड़ियाँ । ** १

यद्यपि प्रत्येक व्यवस्था का अन्त होता है। इसलिए
पूँजीवादी व्यवस्था का अन्त होगा, तभी शोषण का अन्त होगा ।
मार्क्स ने पूँजीवादी व्यवस्था का विरोध किया । इसकी प्रतिक्रिया विश्व
और भारत में भी हुई । विश्व स्तर पर भारत के अन्य भाग जैसे - गोवा, काँगो,
अल्बेनिया और वियतनाम, बांग्लादेश, तिब्बत^३ इसके साक्षी हैं। काँगो में
साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा किये गये तूनी होली का यह दृश्य :

** हम नीचे बदन रहते हैं फुलते घोंसलों में
बादलों सा
शोर तूफानों का उठता है-
डिक्टीशन के डिक्टीशन मार्च करते हैं
नये बमबार हमको दूँडते फिरते हैं---
सहकारों फसटती हैं जहाँ हम वर्ग से कण्ट बदलते हैं। ** २

-
- १- गिरिजाकुमार माथुर- धूप के धान पृ० १४
२- प्रभाकर माधवे- मेफ्त (शिकागो) पृ० १२
३- पृ० १६
४- रामेश्वर बहादुर सिंह : कुछ और कविताएँ पृ० १०

जहाँ पर बाज भी शोचण के सिर झूट की होली खेली जाती है। रशिया और अफ्रीका के बहुत से भाग पर बाज भी विदेशी अपनी शोचण नीति के कारण अधिकार जमाए हुए हैं वहाँ पर बाज भी युद्ध ही रहा है। इसका चित्रण नागार्जुन के काव्य 'प्यासी प्यारों वैसे' में अफ्रीका में होने वाले युद्ध का चित्रण है। जहाँ पर गरीब शासक अपनी स्वार्थ के लिए अफ्रीकन्स को मार कर अपना अधिकार जमाना चाहते हैं। नागार्जुन ने अपनी कविता में साम्राज्यवादी शक्तियों का विरोध किया है।

इसी प्रकार स्वेज नहर पर किये गए वाङ्मण का विरोध हिन्दी कवि देवेन्द्र सत्यार्थी ने अपनी काव्य 'बन्दनवार' में किया है। उन्होंने स्वेज नहर वाङ्मण को साम्राज्यवादी एवं विस्तारवादी नीति के अनुसार मानकर उसका विरोध किया है।

साम्राज्यवादी देशों द्वारा कमजोर देशों में फूट डालो और शासन करो वाली नीति के अनुसार सैनिक प्रभाव डालते हैं। इसका चित्रण शिव मंगल सिंह सुप्त की कविता में इस रूप में मिलता है :

“डासरीं से अकित्त कैंसास की सुत श्री विभा की
जानकर उन जान सा करता त्रिशूली की प्रभा की
सब घटाटोप अंधेर में डुब कर
सोवता है कौन गिलगिट में सुरों
कर दिए किसने पलाया विक्रानामी
और रंग बाझा वीरान नंग ॥” १

कतः हिन्दी की इन कविताओं में साम्राज्यवाद और उनकी नीतियों के प्रति विद्रोह का स्वर सुनाई पड़ता है।

हमला न कर बैठे सारनाक
 कुहरे के जलन्त्री
 वानर थे नर थे
 समुदाय भीड़ । ** १

कैसी भावना की प्रधानता थी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शक्ति सम्पन्न
 बिगड़ गयी थी। विश्व में अपना अधिकार क्षेत्र बढ़ाने के उद्देश्य से विश्व
 की साम्राज्यवादी शक्तियाँ द्वारा अपने स्वार्थ के लिए गरीब एवं कमजोर
 राष्ट्रों की सहायता तो करती हैं^१ लेकिन राजनीतिक एवं वार्तिक दृष्टि
 से उनका शोचण करते हैं।^२ कुहरे शब्दों में कहा जाये तो वाधुनिक युग
 की विकसित सभ्यता के अनुसार सम्पूर्ण देश का शोचण अपने स्वार्थ के
 लिए करते हैं, इसका चित्रण धर्मवीर भारती की कविता में इस रूप में
 मिलता है :

** डंग है नया ।
 लेकिन बात यह पुरानी है
 या
 रौटी से दूक कर या फिरमों में रंग कर
 वे जंजीरों केवल जंजीरों ही लाये हैं
 वीर भी फरते कहें बार जाये हैं। ** ४

१- मुक्तिबोध : चाँद का मुँह टेढ़ा है : लकड़ी का रावण पृ० २६

२- प्रभाकर माचवे - मेण्ड (शिकागी) पृ० १२

३- स्वप्न वासि सुबद्ध राजा

सहाश्रैताना मन्तरुद्रोणीः सन्नियन्थन्ति ।

राजशक्तियाँ लोलुप होगी

जता उनसे पीड़ित होकर

- धर्मवीर भारती : बन्धा युग पृ० १२

हिन्दी कविता में जहाँ गांधी की हिंसावादी नीतियों का समर्थन किया गया है, वहीं हिटलर की हिंसावादी नीतियों का विरोध किया गया है :

“ साना साकर कमे में विस्तर पर लेटा
 सोच रहा था मैं मन ही मन हिटलर बैटा
 बड़ा भूँस है जो लड़ता है तुच्छ पांडू मिट्टी के कारण
 दाण भंगुर हीले हैं रे यह सब वैभव धन ॥ ” १

उपयुक्त कविता में कवि वागे कहता है कि इस भौतिक जगत् की प्रत्येक वस्तु नाशमान है और अन्त में मनुष्य उसी प्रकार सारी हाथ लीट जायेगा फिर युद्ध की आवश्यकता ही क्या है ?

“ स्टम बम ” शीर्षक कविता में नागार्जुन जी ने हिंसा का विरोध किया है, उन्होंने भी हिंसा द्वारा मरने वालों लोगों के प्रति सहानुभूति रखते हुए युद्ध का विरोध किया है :

“ कहाँ गिरि स्टम या हाइड्रोजन बम
 नहीं फौजपर
 नहीं पुलिस पर
 नहीं लाम पर
 नहीं मुहिम पर
 बम बरसि जाकीण वाबादी पर ही । ” २

१- भारत भूषण अग्रवाल - तार सप्तक पृ० ६६

२- नागार्जुन : युगधारा पृ० ६२

विश्व युद्ध के बाद शान्ति का प्रयास

विश्व राजनीति के क्षेत्र में दो युद्ध हो जाने के बाद विश्व में हुई सामाजिक वार्तिक विनाश के देखते हुए विश्व शान्ति की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय रूप से प्रयास किये जाने लगा।

राष्ट्रीय समाज

नयी कविता का समाज स्वतन्त्रता के बाद का समाज है। सन् १९५० तक भारत का नया संविधान लागू हो चुका था। भारतीय संविधान द्वारा जनता को बहुत से अधिकार दिये जा चुके थे। समाज में पूरा अधिकार दिये जाने के बाद भी समाज में असीमता था, स्वार्थी की लड़ाई चल रही थी इसका विप्लव श्रीकान्त वर्मा की कविता में इस रूप में मिलता है :

क्या बागडोर दे दूँ, धरयात्री के हाथ में ?
क्या चिड़ियाँ को, फुर्ल से उड़ा दूँ ? क्या कवि को
समय से, समय को, कवि से
लड़ा दूँ ? १

भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व जिस हल्का-हल्का राम राज्य की कल्पना भारतीय जनता ने की थी। वह कल्पना पूरी नहीं हो सकी। बल्कि रामराज्य से सब-कुछ के समान जनता को निकाल दिया गया।

नये संविधान और सदन में इन नेताओं ने प्रवेश किया उसका चित्रण सर्वेश्वर दयाल सबसेना ने इस रूप में किया है :

“ तेरी मेंस के बागे बीन बची
तेरी मेंस के बागे सहनाई
तेरी मेंस घुस गयी संसद में
सब संविधान बट कर बायी
तेरी मेंस की मेंस में मेंस रहे ॥ ” १

इस कविता में मेंस के माध्यम से सर्वेश्वर दयाल सबसेना ने वाधुनिक नेताओं पर व्यंग किया है। उनकी दृष्टि में वाधुनिक संविधान और संसद एक स्तरीय है। जिसका उपयोग देश हित में न करके स्वार्थ के लिए करते हैं और जनता की सुखी बनाने के लिए परिवर्तन का वाश्वासन देते हैं। लेकिन समाज का संवेदनशील प्राणी नेताओं को इन वाश्वासनों से ऊबने लगता है और नेताओं से घुणा करने लगता है। इसका चित्रण कवि इस रूप में करता है :

“ धीरे दोस्तों धीरे धीरे कुछ नहीं होता ।
सिर्फ मौत होती है
धीरे धीरे कुछ नहीं जाता
सिर्फ मौत जाती है ।
धीरे धीरे कुछ नहीं मिलता । ” २

इसी प्रकार के भाव मालमलाल बतुर्वदी की कविता कागज की फावार में मिलता है :

१- गर्म हवाई (राग डोंग कल्याण) पृ० ४१

२-सर्वेश्वर दयाल सबसेना - गर्म हवाई (धीरे धीरे) पृ० ११

इसी प्रकार के भाव मास्नलाल चतुर्वेदी की कविता
कागज की फावार् में मिलता है :

“ कहा समस्या ने- रे स्वार्थी तेरे बुद्धि विचार नहीं है,
मैंने सुना- सभा में मेरी बयान जब वन्दन वार नहीं है।

०

०

कुछ वर्णों के शिशु शासन पर हम बूढ़े बूढ़े बैठे ऐसे
पीठी कुर्सी, पीठें रूप थे, पीठें सफे कैंसे कैंसे । ” १

इन सब परिस्थितियों के फलस्वरूप देश में नैराश्य
का भाव फैलने लगा लोगों का नेताओं और राजनीति पर से विश्वास
उठने लगा जिन नेताओं ने कभी देश की स्वतन्त्रता में भाग नहीं लिया।
वह नेता बाज शासन की कुर्सी पर बैठ कर जनता का शोषण करने लगे :

“ शासन सेवा वाला मिस्टर मेवा लाल
एक बेटा रैल में एक बेटा विल्स में
स्टेट्स में है बिटिया में साहब हिल्स में । ” २

जाना ही नहीं समाज के संविदनशील कवियों ने
इन नेताओं की दशा देखकर क्रान्तिकारी नेताओं के बलिदान को नादान
सम्झा है, क्योंकि जिन नेताओं ने अपना जीवन दे दिया उन्होंने कुछ
नहीं लिया और दूसरों ने फद और सचा पर अधिकार जमा लिया :

* भगतसिंह प्रिय तुम तो नाएक फाँसी पूछ गये थे ।

१- आधुनिक कवि ६ पृ० १४४

२- सी० बंजि कृमार- कविताएँ १९६४ (कूर्मावली : निर्बुद्धि परिग्रह्य)

योग योग का सर्वोदय का कर्म ही भूल गये थे ।

भगतसिंह तुम मेरे बुद्धि थे तुम वाँसत प्राणी । * १

दूसरे कवि मुक्तिबोध की रचना * चाँद कब
हूँगा * में यही भावना है। * वसंत की कविता में नेताजी के प्रति
वसंत की भाव अभिव्यक्ति हुई है। * इसकी प्रतिक्रिया सामाजिक जीवन
में यह हुई कि देश में जीवन की उपयोगी वस्तुओं का अभाव ही गया ।
समाज में अभाव और भ्रष्टाचार फैलने लगा । *

स्वतन्त्र भारत पर विदेशी आक्रमण का चित्रण

भारत पर सन् १९६२ में चीन द्वारा किये गये
आक्रमण का चित्रण तत्कालीन कविता में मिलता है। विष्णु चन्द्र शर्मा
की कविता में चित्रित विदेश नीति का उल्लेख इस रूप में मिलता है :

“ हमारा राष्ट्रपति
गीता के निष्काम कर्म की व्याख्या विधान सभाओं,
में सुना रहा है
और मेरे देश की आध्यात्मिक ऊँचाईयाँ
चीनी सिपाहियों के पैरों में कसमसा रही हैं। ” ५

१- नागाजुन - प्यासी प्यराईं अति पृ० २०

२- मुक्तिबोध : चाँद का सूर्य टूटता है पृ० ४६

३- वसंत- अति और कठण प्रभावयो (हमारे जिनगी के) पृ० ३४

४- सी० अजितकुमार - कविताएँ १९६३ रणिय राघव (कानप पैरों का
यात्री) पृ० ११२

५- विष्णु चन्द्र शर्मा- आयात निर्यात पृ० १४९

इसके साथ ही भारतीय नीति^१ चीनी हिन्दी भाई-भाई का चित्रण भी तत्कालीन साहित्य में इस रूप में हुआ है :

‘ मैं तुम पर किया भारीसा भाई से बढ़कर जाना
हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा हमने माना
हमें नहीं पालूम तुम्हारे झूठ लगा था दाढ़ी में
जो गीली से उफन उफन कर बहता बाज फ़ाड़ में । ” १

इस प्रकार तत्कालीन साहित्य पर उस समय की राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण मिलता है जिसने समाज और साहित्य को प्रभावित किया है।

स्वातन्त्र्योपर सामाजिक एवं वार्तिक समस्या

नयी कविता में स्वतन्त्र भारत के समाज का चित्रण भी देशी की मिलता है। भारत स्वतन्त्रता के समय देश में साम्प्रदायिक दंगे हुए थे उनका चित्र काव्य में इस रूप में हुआ है :

‘ कस तक तुम्हारे बीच बैठे थे लीज
जो तुम दोनों को लड़ाने में थे तेज
बर्याँकि तुम्हारे लड़ाईयों से फड़ुता था जोर
उनके साम्राज्यवाद का रथ
हीती थी मजबूत उनकी बागडोर
रौदा और कुक्का जा रहा था हिन्दुस्तान । ” २

१- भगीरथ राकेश - चीन की चुनौती (नेहरू का पत्र बाऊ के नाम)

२- बच्चन- बुद्ध और नाच घर (हिन्दू और मुसलमान) पृ० ४३

अतः नयी कविता के कवि अपनी युग की सामाजिक एवं राजनीति परिस्थिति से परिचित थे, तभी वह किराँ का विरोध करते रहे। उनकी दृष्टि में किराँ भारतीयों को वापस में लड़ाकर अपना शासन तंत्र को मजबूत करना चाहते थे इसका चित्रण बच्चन की कविता में देली जा सकती है।^१

नयी कविता में स्वतन्त्र भारत की वार्षिक स्थितियों का चित्रण देने की भित्ति है।^२ देश में पंचवर्षीय योजना का प्रारूप तो बना लेकिन उसका प्रभाव समाज पर क्या हुआ। इसका चित्रण इस कविता में देला जा सकता है :

“ वह जानता है
फायर दर फायर
नम्बर दर नम्बर
देश ऊँचा हो रहा है
रेडियो रोज खरब दे रहा है
लाफ हो रहा है। ”^३

लेकिन यह विकास केवल कागज और सरकारी फायरों में है। वाज का भारत धीरे धीरे नैतिक और वार्षिक दृष्टि से पतन की ओर जा रहा है। इसका भी चित्र नयी कविता में इस रूप

१- बच्चन- बुद्ध और नाचघर (हिन्दू और मुसलमान) पृ० ४२, ४३

२- संसद और विधान सभाओं का द्वार

उनको गया है वह समूह भाकम्फोर

जो मेरे देशवासियों। एक चिनगारी और । ”

- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : गर्म हवाएँ (लीहिया के न रहने पर) पृ० २४

३- तीलाधर जगूड़ी : वादमी छाप दुःख शताब्दी सम्कालीन हिन्दी कविता
कै (जनवरी - मई १९६६)

देता जा सकता है :

“ इस भविष्य में
धर्म वर्ण ब्राह्मण्युत्त होगे
नाय होगा धीरे धीरे सारी धरती का
सवा होगी उनकी
जिनकी पूजी होगी । ” १

क्तः स्वतन्त्रता के बाद देश में बढ़ते हुए वीथीनीकरण एवं नये समाज से नयी कविता की विशेष रूप से प्रभावित किया है।

स्वतन्त्रता से पूर्व महात्मा गांधी का विशेष महत्त्व था । गांधी के नेतृत्व में जन आन्दोलन हुए और भारत की स्वतन्त्रता भी प्राप्त हुई । लेकिन स्वतन्त्रता के प्राप्त होते ही गांधी के सिद्धान्त मूल्यहीन हो गये । जीवन के सभी सिद्धान्त बदल गये । गांधी के अनुयायियों ने ही गांधी के नाम का दुरुपयोग अपने स्वार्थों के लिए करना शुरू कर दिया जैसा कि सर्वश्रेष्ठयाल की कविता से स्पष्ट है :

“ मैं जानता हूँ
क्या हुआ तुम्हारी लंगोटी का
उत्सवों में अधिकारियों के
बिल्ले बनाने के काम आगई ।। ” ३

सन् १९५० के बाद की पीढ़ी विचार, कर्म, कथ्य और सत्य के बीच में फिस गई । क्तः नयी राजनीति में युवा पीढ़ी कर्मण्यता, नैतिकताविहीन, अपराधिय आदि के बोध धिर कर रहे हैं । स्वतन्त्रता के बाद सामाजिक जीवन में भी परिवर्तन आया ।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद देश में अवसरवादी मनोवृत्ति का अधिक प्रभाव पड़ने लगा । आधुनिक समाज में फल और वर्ण की प्रधान हो गई । इस लिए नेता देश सेवा छोड़ कर फल के लिए स्वार्थ

-
- १- धर्मवीर भारती- बन्धा युग पृ० ११-१२
 - २- श्रीकान्त वर्मा - माया दर्पण पृ० १०५
 - ३- सर्वश्रेष्ठयाल - गर्म हवाएँ पृ० ३०-३१

वाविकारों के सुख साधन
 सब वस्त्र बन गये शोचण के
 साम्राज्यवाद के हाथ में
 पर परिवर्तन का तैल
 चक्र बढ़ता जागे
 है धार काटती नागपाश
 कस इसलिये होगा विनाश ॥
 मानव का मानव पर
 दुःख दोहन काचार
 इसीलिये की रुकता नहीं कभी गीतक का पहिया ॥ १

अतः नयी कविता के कवि अपनी युग की शोचण
 नीति का विरोध करते हैं। नयी कविता के कवियों की दृष्टि में विज्ञान
 का विकास औद्योगिकीकरण के विकास में हुआ जिसका प्रयोग शोचण के
 लिये किया जाता है। इसलिये नयी कविता के कवियों ने इसका विरोध
 किया । कविता के अतिरिक्त दूसरे पक्ष में भी विज्ञान का प्रभाव देखा जा
 सकता है। विज्ञान तर्क, परीक्षण और प्रयोग पर निर्भर है। इसलिये
 प्राचीन युग की श्रद्धा, भ्रम और विश्वासों का विरोध करता है। अतः
 विज्ञान प्राचीन युग की रुढ़ि मान्यताओं, ईश्वर और धर्म का विरोध
 इन शब्दों में किया है :

अगर सब पूछो मेरी प्रान
 व्यर्थ है स्वर्ग नरक अनुमान
 तुम्हारे मुस्काहट में स्वर्ग
 तुम्हारे वासि में नगवान् ॥ २

१- गिरिजाकुमार माथुर- धूप के धान (पहिया) पृ० ३७

२- कर्पूरी भारती - ठंढा सौहा पृ० ३६

इसलिए आधुनिक युग का कवि ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। बल्कि जन-जीवन से उत्पन्न परिस्थितियाँ में ही पौराणिक पात्रों की कल्पना करता है। जैसे-

रात में एक स्वप्न देता
 मैं देता
 कि मेनका अरुणाक्ष में नर्स हो गई है
 और विश्वामित्र ट्यूशन कर रहे हैं। " १

वक्तः आधुनिक युग का कवि ईश्वर और ईश्वरीय सत्ता को न स्वीकार यथार्थ जीवन को स्वीकार करता है। इसलिए नयी कविता के कवि कुँवर नारायण^२, धर्मवीर भारती^३ और नरेश मेहता^४ आदि प्राचीन मान्यताओं का विरोध करते हैं।

विज्ञान और युद्ध

द्वितीय महायुद्ध के बाद विज्ञान का स्वरूप युद्ध के रूप में सामने आया जिससे विश्व के सम्मुख शान्ति की समस्या उत्पन्न हो गई। द्वितीय महायुद्ध में प्रयुक्त बम और उससे होने वाली घटनाओं का चित्रण नयी कविता के कवियों ने अपने काव्यों में किया है। धर्मवीर भारती के काव्य 'बन्धा युग' में इस रूप में हुवा है :

" पृथ्वी पर इस मय वनस्पति नहीं होगी ।

१- भारत भूषण अग्रवाल- ओ प्रस्तुत मन पृ० १०२

२- कुँवर नारायण - ऊँ ब्यूह (शीशे का कवच) पृ० ८४

३- धर्मवीर भारती - बन्धा युग पृ० ११

४- नरेश मेहता : संशय की रात पृ० ६५

शिशु हँसि पिकलांग जौर कुँठा ग्रस्त
सारी मनुष्य जाति बीनी ही जायेगी । " १

युद्ध का प्रभाव न केवल मनुष्य जीवन पर पड़ता है, बल्कि समाज पर भी पड़ता है। युद्ध के समय प्रयुक्त वणु विस्फोट का चित्रण करते हुए भारत भूषण अग्रवाल कहते हैं :

दूर सात सिंधु पार
वणु का विस्फोट हुआ
उड़ गईं उब्जन की धज्जियाँ
जिसके धड़ाके की धमक से
दाण काय स्वर धारी नारों का दम टूटा
एक लघु चिक्की से त्यागे उन्हनि प्राण । " २

इसी प्रकार के भाव, प्रभाकर^३ माचवे, गिरिजा^४ कुमार माथुर^४ आदि कवियों ने विज्ञान के विकास का युद्ध वस्त्र के रूप में देखा है। इन कविताओं में युद्ध में मारे जाने वाले सैनिकों का चित्रण है। युद्ध के बाद उत्पन्न परिस्थिति का चित्रण किया गया है।

अतः विज्ञान का विकास युद्ध सामग्री के विकास के रूप में देखकर आधुनिक युग के दार्शनिक एवं कवि विज्ञान के इस रूप का

१- धर्मवीर भारती : वीधा युग पृ० ६५

२- भारतभूषण अग्रवाल- बी अग्रस्तुत मन पृ० ५६०

३- प्रभाकर माचवे- मेयल (सौ का मार्च) पृ० ३८

४- गिरिजाकुमार माथुर- धूप के धान पृ० ६७

विरोध करते हैं। विज्ञान के विकास के फलस्वरूप युद्ध की संभावना बढ़ रही है। इसलिए वाधुनिक युग की शान्ति महत्वपूर्ण समस्या है। इसलिए विज्ञान का उपयोग शान्तमयी विकास में करने का समर्थन इन कवियों ने किया है। जैसे- भारत भूखण अग्रवाल आदि ~~पद्यकार~~ ^१।

नयी कविता में प्रयुक्त नवीन जीवन दर्शन

नयी कविता का जन्म वाधुनिक युग के नये समाज में हुआ है। इसलिए नयी कविता पर वाधुनिक विचारकों का प्रभाव पड़ा है। वाधुनिक काव्य पर पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क के कारण भी बहुत से नये विचार आये हैं।

वस्तित्ववाद

वाधुनिक समाज पर सार्त्र और कीकगार्ड के प्रभाव से वस्तित्ववादी दर्शन का विकास हुआ जिसका प्रभाव नयी कविता पर पड़ा है। नयी कविता के प्रमुख कवि धर्मवीर भारती की इस कविता में देखा जा सकता है :

मे
 रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
 लेकिन मुझे फेंकों मत ।
 क्या जाने कब । इस दुस्सह चक्रव्यूह में
 बह्मिहिणी सेनाओं की चुनौती देता हुआ । ^२

१- भारतभूखण अग्रवाल - तार सप्तक (वर्हिता) पृ० ६६

२- सात गीत वर्ण (टूटा हुआ पहिया) पृ० ७६

इस कविता में कवि ने अपने युद्ध व्यक्तित्व की महिमा की जो घोषणा की है उसका आधार ही अस्तित्ववाद है। अतः अस्तित्ववाद का प्रभाव अन्य कवियों- जैसे सर्वेश्वर^१ दयाल , प्रभाकर^२ माचवे, वशैय^३ , धर्मवीर^४ भारती , मुक्तिबोध^५ वादि प्रतीत^६।

इसी प्रकार नयी कविता में आधुनिक युग की आशा और निराशा का भाव भी नयी कविता के कवियों में देखा जा सकता है। जैसे- कीर्ति चौधरी (तीसरा सप्तक) , केदारनाथ सिंह, मदन वात्स्यायन वादि । इसी प्रकार नयी कविता में क्षणवाद, आस्था, अनास्था और लघु मानववाद वादि स्वर सुनाई पड़ते हैं। नयी कविता में द्वितीय युद्ध के बाद समाज के टूटते हुए मानव मूल्यों, नैतिक आदर्शों और धार्मिक मान्यताओं का सफ़हन भी देखने को मिलता है।

नयी कविता में चित्रित यौन एवं नारी चित्रण

नयी कविता पर पार्श्वगत्य सभ्यता का विशेष प्रभाव पड़ा है। द्वितीय महायुद्ध के बाद जो युवा पीढ़ी आयी उसने प्राचीन मान्यताओं का विरोध करना शुरू कर दिया । उनकी दृष्टि में प्रेम और यौन सम्बन्ध कर्मिक न होकर नैतिक हो गये । विश्व शान्ति और प्रेम के

१- काठ की घंटियाँ पृ० ३७

२- प्रभाकर माचवे- मैफल पृ० ४७

३- रुद्र धनु रौंदि हुए थे- पृ० ४२

४- सात गीत वर्षा पृ० ३३

५- चाँद का मुँह टेढ़ा है पृ० १५

लिए यौन प्रतिबन्ध की मीन की आवश्यक बताकर उसका विरोध किया ।
वाधुनिक समाज में प्रचलित हिप्पीवाद, बीट्स वादि इसके उदाहरण हैं।

यान्त्रिक सभ्यता ने युगों से चली जाने वाली
यौन प्रतिबन्ध पर प्रहार किया । वाधुनिक युग की सामाजिक एवं आर्थिक
परिस्थितियाँ ने भी यौन सम्बन्ध को प्रभावित किया । इसलिए वाधुनिक
युग के कवि प्रेम को जीवन का नैसर्गिक आवश्यक मानते हैं^१। वैसे ही प्रेम
को मानव की नैसर्गिक भूख माना है। लग युग के प्रणय को वे नैसर्गिक
कहते हैं और उस मानव को कोसते हैं जो अपनी प्रणय को हिजाता
रहता है। इसलिए वैसे की दृष्टि में मनुष्य यौनका पुत्र है^२। इसलिए
वाधुनिक युग के कवियों की कविता में प्रेम का यथार्थ चित्रण हुआ है :

“ फिर कटीली दृष्टि रंजित प्यार दो
आदमो की शक्ति का आधार दो
प्यार तुमसे ही जगत से प्यार हो
प्रणय यह रंगमय संसार हो । ” ४

अतः नयी कविता का प्रेम सौंस्कृतिक न होकर अलौकिक
है। इसलिए प्रेम के साथ साथ यौन का भी चित्रण नयी कविता में मिलता
है। जैसे- सर्वेश्वर दयाल सबसेना, धर्मवीर भारती ।

१- डा० रामेश्वर लाल सण्डेलवाल- वाधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और
सौंदर्य- पृ० ४४६

२- वैसे- इत्यलम् पृ० ६६

३- वैसे- तार सप्तक - वक्तव्य पृ० २७८

४- गिरिजाकुमार माथुर- नयी कविता पृ० ८१-८२

५- गर्म हवाएँ - प्यार) पृ० ६६

६- कनुप्रिया (तुम मेरे कौन हो) पृ० ३५

‘ लिप्ट गयी कंग कंग सप्ट सी गोरी मोरी गहुँकन साँप ।
 बधर परस बाहुन मन मेरा बगिन घर न कुम्हाय
 निशि नाहिं नींद न जग दिवस मैं गोरी मोरी गहुँकन साँप ॥ १

इसी प्रकार हनु जैन की कविताओं ‘ वात्मा
 रहित पशुवत देह मिलन के लिए बाहुलता पूर्वक पुकार लगा रही है।^२
 श्रीमती शान्ति सिन्हा तथा धर्मवीर भारती की यह कविता देखिए-

‘ मैं कस कर तुम्हें जकड़ लिया है
 और जकड़ती जा रही हूँ
 और निकट और निकट
 कि तुम्हारी साँसें मुझमें प्रविष्ट हो जाय ।
 तुम्हारे प्राण मुझ में प्रतिष्ठित हो जाय ॥ ‘ ४

अतः नयी कविता के अन्य कवियों में देवराज,^५
 विनोद चन्द्र पाण्डे^६ आदि की रचनाओं में भी देखा जा सकता है।

नारी रूप

नयी कविता में नारी के कई रूप देखे जा सकते
 हैं। जैसे- बाधुनिक विचारधारा वाली नारी और भारतीय विचार

१- मदन वात्स्यायन - तीसरा सप्तक पृ० १५७

२- चौसठ कवितारें पृ० ४६

३- श्री शान्ता सिन्हा - समानान्तर सुने पृ० ५३

४- कनुप्रिया पृ० ५४

५- इतिहास और पुरुष पृ०

६- सफेद चिड़िया- श्रीनकुल पृ० ४३

धारा वाली नारी कादि । आधुनिक समाज में नारी के दो प्रमुख रूप हैं :

१- मध्यवर्गीय नारी

२- त्रफिक या निम्न वर्ग की नारी

आधुनिक समाज में नारी के दो और भी रूप देखे जा सकते हैं :

१- वेश्या नारी और

२- अभिनेत्रियाँ ।

समाज में आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से नारी के दोनों रूप (वेश्या और अभिनेत्रियाँ) उच्च नहीं माना जाता है। लेकिन आर्थिक एवं जीवन की परिस्थितियाँ नारी को दोनों रूप में बदल देती हैं। इसलिए आधुनिक समाज की वेश्या या अभिनेत्रियाँ आधुनिक समाज की देन हैं।

अतः नयी कविता के कुछ कवियोंने चल चित्र की अभिनेत्रियों का चित्रण अपने काव्य में किया है। यह अभिनेत्रियाँ एक साथ जीवन के कई पक्ष को प्रदर्शित करती हैं :

सिने कलाकार कुशल

वह देसी नायिका की भिन्न भूमिकाओं में

नाज अन्दाज मरी

घनपट पे यहाँ वहाँ बिजली सी झलक मार । *१

इस प्रकार नयी कविता में नारी के विभिन्न

१- देवराज- इतिहास और पुरुष पृ० ११

रूपों का यथार्थ चित्रण हुआ है। आधुनिक युग की बदलती हुई आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में नारी का स्थान और दायित्व के बदलते हुए रूप का चित्रण साहित्य में देखने को मिलता है। आधुनिक युग की नारी पर पश्चात्य सभ्यता और आधुनिक सभ्यता का प्रभाव है। इसलिए नयी कविता की नारी इसी युग का प्रतिनिधित्व करती है। अतः नयी कविता की नारी आधुनिक युग की नारी है।

नयी कविता पर आधुनिक परिस्थिति और सामाजिक परिवेश का प्रभाव है। आधुनिक युग की बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार साहित्य के क्षेत्र में परिवर्तन आया। आधुनिक युग में ही नयी कविता के साथ ही बहुत सी नयी पद्धति का विकास हुआ। नयी कविता के साथ साथ नवगीत, सहजगीत, कविता, भूखी पीढ़ी की कविता आदि का जन्म हुआ। इनमें से बहुत सी कविता पश्चात्य साहित्य का प्रभाव से उत्पन्न हुईं। साहित्य की कुछ परम्परा का विकास आधुनिक युग के विकसित साहित्यिक एवं सामाजिक परिवेश के कारण हुआ, जिसने साहित्य में नये आन्दोलन के रूप में प्रभावित किया। नयी कविता के साथ साथ ही नवगीत का विकास हुआ। नवगीत आधुनिक साहित्य की महत्वपूर्ण घटना है। आधुनिक काव्य पर इसका प्रभाव पड़ा है।

पंचम अध्याय

नवगीत में विभिन्न समाज

हिन्दी काव्य का विकास विभिन्न वान्दोसनों एवं प्रभाव के अनुरूप हुआ है। नयी कविता के बाद हिन्दी काव्य में विभिन्न वादों का अभ्युदय एक साथ ही हुआ, जैसे- नई कविता, नवगीत, एक कविता, सहज कविता, विद्रोही पीढ़ी, भूरी पीढ़ी^१ कविता आदि ।

आधुनिक गीत काव्य का आरम्भ हिन्दी में सन् १९५० के आस-पास दिखाई देती है। भारतीय साहित्य में गीत काव्य की परंपरा बहुत पुरानी है। आधुनिक हिन्दी काव्य में जिस गीत काव्य का विकास हुआ है। वह प्राचीन गीत काव्य से भिन्न है। नवगीत का विकास सन् १९५० के आस-पास नयी कविता के समानान्तर ही हुआ।

हिन्दी के विद्वान् डा० विनय मोहन शर्मा का मतानुसार है कि "नवगीत का विकास नयी कविता के वैदिकता और दुस्वता के विरुद्ध नवगीत का विकास हुआ^१।"

दूसरी ओर डा० लक्ष्मीसागर वर्ष्मण्य का मत इससे भिन्न है, "वैचारिक स्तर पर नवगीत की रचना सामान्यतः नई कविता के अन्तर्गत और उसकी पूरक शाखा ही मानी जानी चाहिए ।

१- "नई कविता के कवि गथात्मक दुर्लभ या वृत्ति-गथात्मक तब स्मृति पट पर गूँव नहीं पाते । उनकी गथात्मक सूक्तियाँ ही कभी कभी कौंध जाती हैं ।"

- डा० विनय मोहन शर्मा : साहित्य : नया और पुराना पृ० ३२

सन् १९६० में नवगीत एक आन्दोलन के रूप में हिन्दी काव्य में उभर कर आया। शब्द (कलवर) व अन्य पत्र- पत्रिकाओं में नवगीतों का प्रकाशन होने लगा। अतः नवगीत शीघ्रता से लोकप्रिय होने लगी और नई कविता की लोकप्रियता कम होने लगी।

नवगीत का स्वरूप

सन् १९५० के आस- पास नयी कविता के समानान्तर ही कुछ ऐसे गीतकारों की परम्परा आयी, जिसने युगबोध से नयी संवेदना ग्रहण करके सहज और सरल भाषा में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। स्वतन्त्र भारत में काफी परिवर्तन आने के फलस्वरूप समाज की नयी भाव-भूमि ने इस युग के गीतकार को अधिक प्रभावित किया है।

~~स्वतन्त्रता से पूर्व की कल्पना यथार्थ नहीं बन सकी।~~
स्वतन्त्रता से पूर्व महात्मा गांधी का भारतीयराजनीति पर विशेष प्रभाव होने के कारण वैयक्तिक चेतना ने सामाजिक धर्मश्रुतित्वाभिमुखी। स्वतन्त्रता से पूर्व गांधी का सत्याग्रह और आन्दोलनों का प्रभाव नवगीतों पर पड़ा है।

१- डा० लक्ष्मीसागर वाष्णीय - द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० २४२

२- " गीत में मैं की यह यात्रा वैयक्तिकता से क्रमशः सामाजिकता की ओर सक्रिय है। वैयक्तिकता की सामाजिकता के साथ जुड़ने की यह स्वाभाविक प्रक्रिया समकालीन गीत रचनाओं की बुनियादी पहचान है। "

- सुधीश पन्नीरी : समकालीन गीत की सामाजिकता से गुजरते हुए :
अन्तराल पृ० २१ अक्टूबर १९७४

स्वतन्त्रता के बाद भारतीय समाज में व्यापक परिवर्तन आया। भारतीय समाज की महानगरी सम्यक्ता और परिवेश से उत्पन्न आधुनिक युग की कृष्णता, निराशा एवं वैज्ञानिक परिवर्तनों का प्रभाव आधुनिक गीतकारों पर पड़ा। आधुनिक समाज में कवि, सम्पत्तियों और ऐश्वर्यों के माध्यम से बहुत से गीतकार साहित्य में आये जैसे- गोपालदास बीरज, रमावन्दास त्यागी, रमेश रॉय, बाल कवि बैरागी आदि। नवगीतकारों में बहुत से मूल तक ही सीमित रह गये। जैसे- देवीदास शर्मा, निर्भय हाथरसी, वल्लभ बीकानेरी, काका हाथरसी, देवदत्त बनारसी आदि। काव्य में इनका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, फिर भी जनता और मंच के क्षेत्र में इनका विशेष प्रभाव है।

नवगीत में बौद्धिकता

आधुनिक युग विज्ञान से प्रभावित होने के कारण से साहित्य और समाज पर बौद्धिकता का विशेष प्रभाव पड़ा है। आधुनिक गीत पर बौद्धिकता अर्थ यान्त्रिक संवेदना से प्रभावित होने के कारण से गीत काव्य में कहीं कहीं पर बौद्धिक अतिरिक्तता आ गई है। जैसे- बाल स्वरूप राही का शम है उबने लगा है दिल, नामक गीत में व्यक्ति का अकेलेपन का चित्रण है। इसी प्रकार आधुनिक युग की वैज्ञानिक एवं यान्त्रिक सम्यक्ता के बीच मटकते हुए आधुनिक मनुष्य का चित्रण भी नवगीत में हुआ है।

नवगीत पर आधुनिकता का प्रभाव

भारतीय समाज पर सन् १९५० के बाद व्यापक

परिवर्तन आया। भारतीय समाज में बढ़ते हुए वैज्ञानिक एवं यान्त्रिक सभ्यता ने आधुनिक जीवन को प्रभावित किया। हिन्दी की नयी कविता पर बौद्धिकता का आरोप लगाया जाता है। इसलिए नयी कविता में लय का अभाव हो गया, जबकि नवगीत में बौद्धिकता के साथ साथ लय का भी प्रभाव रहा।

नवगीतों ने भी बौद्धिकता का वर्णन कर अपनी को परम्परागत गीतों से अलग लिया। नवगीतों में आधुनिकता, युग बोध तथा नवीन जीवन दर्शनों के कारण नवगीत की भाव भूमि में नवीनता आ गई है। बालस्वरूप राही ने नवगीत की बौद्धिकता एवं हार्दिकता का सह संयोजन को अपनी नवगीत प्रक्रिया के दौरान स्वीकार किया है,

“ मेरी कोशिश यह है कि वस्तु तो बौद्धिक हो क्योंकि वह हमारे युग की सच्चाई के अधिक निकट होगी, किन्तु अभि-
व्यंजना रागात्मक होनी चाहिए। बौद्धिक अनुभूतियों को पकाकर उन्हें संवेदनात्मक बनाकर ही मैं प्रस्तुत करना चाहता हूँ। ”

उक्त : नवगीत कल्पना और वादों से उत्पन्न वैज्ञानिक प्रभाव से उत्पन्न सामाजिक यथार्थ को ग्रहण करता है। नवगीत भावुकता

१- “ नयी कविता की बौद्धिकता तथा नये गीतों का हार्दिकता को परस्पर एक दूसरे का पूरक मानते हुए भी यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए कि ये दोनों दो परिस्थितियों और मनःस्थितियों के काव्य हैं। ”

- ठाकुरप्रसाद सिंह - आलोचना : स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य
विशेषांक जून १९६५

२- बाल स्वरूप राही गीत (१) आतचीत का एक टुकड़ा और कुछ
स्फुट विचार पृ० ४६ (विस्ती)

और रोमांटिक के प्रति विद्रोह करते हुए कटु यथार्थ के साथ साथ आधुनिक युग में मानव सम्बन्धों में होने वाले परिवर्तनों की भी गीत की वस्तु रूप में स्वीकार करती है। नवगीत में भी प्रयोगवादी कविता के समान ही प्रेम की अभिव्यक्ति नये रूप में प्रस्तुत किया है।

नवगीत में व्यक्तिवादी चेतना

नवगीत में जहाँ युगबोध और आधुनिक परिवेश और वैज्ञानिक प्रभाव से उत्पन्न यान्त्रिक समाज के साथ साथ ही आधुनिक परिवेश में जीने वाले व्यक्ति का चित्रण भी नवगीत का विषय है। हिन्दी के नवगीत पर पश्चात्य साहित्य (अमेरिकन साहित्य के नवगीत) का प्रभाव है, वहीं पश्चात्य साहित्य के मनोवैज्ञानिक फ्रायड, स्ट्रुडर जुंग का भी प्रभाव पड़ा है। नवगीतों पर आधुनिक परिवेश और आर्थिक विषमताओं से उत्पन्न वैयक्तिक कृंठाओं निराशाओं और मानसिक तनावों का चित्रण हुआ है। आधुनिक जीवन वैज्ञानिक प्रभावों एवं यान्त्रिक सम्यता के कारण उत्पन्न संज्ञास, निराशाओं एवं घुटन वादि के प्रभाव को स्वीकार करते हुए नवगीतों में इसकी अभिव्यक्ति हुई है।

१- “ नवगीतकारों की जीवन दृष्टि भावुकतापूर्ण नहीं है। उनकी भाषा भी क्लृप्त और भावुकतापूर्ण नहीं है। उनके स्थान पर उनमें आधुनिक यथार्थ बोध से अनुशासित भाव- प्रवणता है। आधुनिक वास्था- अनास्था, संज्ञास कृंठा से युक्त जीवन का कोई भी पक्ष सामयिक विघटनकारी शक्तियों से अछूता नहीं रह सका । ”

- डा० लक्ष्मीशानर वाष्णीय - द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० २४४

नवगीत में चित्रित राजनीतिक एवं वाधुनिक समाज

नवगीतकारों अपने युग की सामाजिक एवं वार्तिक परिस्थितियों से प्रेरणा लेकर गीत का विषय बनाया जैसे देवराज दिनेश की कविता में चित्रित देश स्वतन्त्रता की यह भावना :

“ स्वतन्त्र देश के स्वतन्त्र नागरिक
जमीन पर पड़े प्रसन्न हँस रहे
प्रबण्ड धेध व्योम बड़ा चीर कर
उमड़ रहे घुमड़ रहे बरस रहे

० ०

स्वदेश में बसे महान नागरिक
उन्हें पता लगा कि हम गुलाम है
गुलाम का न दीन है न धर्म है
गुलाम के रहीम है न राम है। ” १

इसी प्रकार स्वतन्त्रता के बाद देश का शासन बदल गया , सकारी तंत्र में व्यस्त वाधुनिकनेताओं पर किया गया व्यंग्य इस प्रकार से है :

“ हम तुम ही लाकर उन्हें खिलाते देते हैं
कहते हैं नेहरू चाचा ने भिजवाए हैं
हैं राज काज में व्यस्त बहुत नेहरू चाचा
इसलिए नहीं वह तुमसे मिलने आए हैं। ” २

१- देवराज दिनेश - भारत माँ की लोरी पृ० ७६

२- पृ० ८७

वही प्रकार वाधुनिक समाज में कैसे राजनीतिक एवं सामाजिक भ्रष्टाचार का चित्रण करें :

“ उजार कोशिश की तुमने लेकिन
नहीं तुम्हारा ही बाट बाया ।
कि तुम सभी में थे योग्य वैसे
तुम्हें कपटी ने काटा लाया ।
वह जो गरीबों का था एक नायक जो
साद सकता था सिर्फ लादो । ” १

अतः स्वतन्त्रता के बाद देश की बदलती हुई परिस्थितियों में उत्पन्न राजनीतिक भ्रष्टाचार और नेताओं का प्रभाव समाज में किस प्रकार से फैल रहा है, उसका चित्रण नीरज के गीतों में देखिये-

“ तब घूमते थे उदास सड़कें पे
तुम लिये डिडरियों का वास्ता
तब वास में सावनों का रोक
सड़ा था एक बादलों का दस्ता
मगर बता था नहीं तुम्हें यह निराला टैगोर के सपूतों ।
है बाज के इस स्वतन्त्र भारत में बादमी कौड़ियों से
सस्ता ॥ ” २

वही प्रकार नेताओं पर किये जाने वाले व्यंग्य अन्य

१- नीरज- दर्द दिया है पृ० ११६

२- “ “ पृ० ११५

गीतकारों में रामावतार त्यागी आदि में देसी जा सकती है।

आधुनिक युग की बदसती हुई राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव भी आधुनिक गीतकारों की गीत का विषय रहा है जैसे- देवराज दिनेश की प्रस्तुत गीत :

“ अब राज काज की भी परिभाषा सम्झावी
नेहरु चाचा क्यों सठे हैं यहबतलावी
पर उन्हें बताऊँ कैसे अपनी मजदूरी
यह कृष्ण सुदामा के जीवन की है दूरी ॥ ” १

इसी प्रकार आधुनिक नेताओं एवं राजनीतिक परिस्थितियों पर किये जाने वाले व्यंग्यों की अभिव्यक्ति श्री कान्त वर्मा के गीत में इस रूप में है :

मैंच पर खड़े होकर
कुछ बैबकूफ चीस रहे हैं
कवि से आशा करते हैं
सारा देश । ” २

अतः स्वतन्त्रता के बाद की राजनीतिक परिस्थितियों एवं चुनाव पर काफी गीत लिखे गये हैं। जैसे- राजकमल चौधरी (मुक्ति प्रसंग , नीरज (दर्द दिया है) आदि ।

१- देवराज दिनेश - भारत माँ की लोरी पृ० ७६

२- माया दर्पण पृ० १२०-२१

नवगीत में चित्रित महानगरीय प्रभाव

नवगीतकारों ने महानगरीय संक्रास और कुण्ठाओं का चित्रण गीतों में किया है। आधुनिक समाज की बदलती हुई सामाजिक व्यवस्था में जीने वाले आधुनिक मनुष्य का चित्रण इस रूप में हुआ है :

‘ झ वोदे हुए मुसौटों पर संशय
यह महज वीषवाहिका यह अभिनय
जीविका हुते यान्त्रिकी व्यस्ततारें
अपराध फलन या नैतिक हत्याएं
नारे सभा जलूस प्रदर्शन शोध
त्रास तनाव यह उत्पीड़क युग बोध ॥ ’ १

आधुनिक समाज पर यान्त्रिक जीवन का प्रभाव है। इसलिए आधुनिक युग का मनुष्य अपने जीवन का सुख और दुःख दोनों का अनुभव एक साथ कर रहा है उसकी अभिव्यक्ति भवानी प्रसाद मिश्र के गीतों में इस प्रकार से है :

‘ बड़ा अजीब जगत है
सुख से दुख की मिली भगत है
सुख जाता है कहीं तो दुख से कहकर
दुख भी वहीं पहुँच जाता थोड़ा रह कर । ’ २

१- चन्द्रशेन विराट - साप्ताहिक हिन्दुस्तान ४ जून १९६७

२- भवानी प्रसाद मिश्र - अन्तरात् - ४ पृ० ७४ ४ अक्टूबर १९७४

वाधुनिक समाज में प्राचीन युग की टूटती हुई नैतिक
एवं धार्मिक मान्यताओं का चित्र नवगीत में देखा जा सकता है :

सतही सामाजिकता के पंख भरे
इन चाय घरों का पात्र नहीं हूँ मैं
पर टूटे मूल्यों के कोलाहल में
यह सब है दर्शक पात्र नहीं हूँ मैं । " १

वाधुनिक युग का मानव रोजी रोटी के चक्कर में रहने
के कारण अपने समाज से कट गया है, इसकी अभिव्यक्ति नीलम सिंह के गीतों
में इस रूप में द्रष्टव्य है :

सिक्का है बीटा वीर बिलरा है बादमी ।
भूठ भ्रम बर्यो पारें सुनना है लाजमी
जब बया हथेली बया
चुप्पी बया बीली बया । " २

वाधुनिक समाज की परिस्थिति से उत्पन्न महानगरीय
बोध की अभिव्यक्ति श्रीरेन्द्र मिश्र के गीतों में हुई है :

राजनगर के बीराहे पर
भटकी हुई उदासी भरी
बुझते हुए केश की शामें
पीती हुई निकसी जाती है
रह जाती है मन में रेंठन
तन की रस्सी जल जाती है । " ३

१- श्रीरेन्द्र मिश्र- अविराम चल मधुवती पृ० ८५

२- नीलम सिंह - पाँच जोड़ बाधुरी पृ० १५४

३- श्रीरेन्द्र कुमार - धर्मयुग

श्रीरेन्द्र मिश्र: अविराम चल मधुवती पृ. ८६

जहाँ वाधुनिक गीतों में महानगरीय जीवन बोध की अभिव्यक्ति हुई है, वहीं वाधुनिक समाज के दोहरे जीवन में जीते हुए मनुष्य की जीवन अभिव्यक्ति दिनेश के गीतों में इस प्रकार हुई है :

भीतर की घृणा

बाहर जब जाती है

मुस्कान बन जाती है

विष देने का आयोजन करते हुए वे

सामने आकर

गुलाब का फूस मँट करती हैं। ** १

नवगीतकार अपनी परिस्थितियों एवं परिवेश से उत्पन्न समाज से अधिक प्रभावित होने के कारण से इन रचनाओं में वाधुनिक जीवन दर्शन स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। वाधुनिक समाज की विषमताओं से जहाँ अधिक मानव प्रभावित है वहीं अपनी दैनिक जीवन से दुःख होते जाते हैं। वाधुनिक सभ्यता का मनुष्य जीवन की द्वन्द्वात्मक स्थिति से गुजरता हुआ वाधुनिक मानव है। महानगरी सभ्यता के कारण आज के मनुष्य जीवन में कृष्ण, निराशा, अकेलापन आदि हैं। अतः नवगीतों में इनकी अभिव्यक्ति हुई है।

नवगीतों में अभिव्यक्ति वैयक्तिक चेतना

आधुनिक युग के ही बाद से गीत और प्रगीत

१- डा० राम गोपाल शर्मा दिनेश - कई मेरा गेय पृ० २६

काफी संस्था में लिखे गये। प्रगतिवादी युग में सामाजिक चेतना एवं मार्क्सवादी चेतना पर आधारित गीत लिखे गये। सन् १९६० के बाद गीतों की नयी परम्परा उभरने लगी जिसमें सम्भूनाथ सिंह, दीप, नीरज, डा० रवीन्द्र प्रमर, रमावतार अवस्थी आदि।

नवगीतकार अपनी व्यक्तिवादी चेतना को आधुनिक सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में अभिव्यक्त करते हैं। नवगीतकारों के गीत में परिस्थितियों तथा मनःस्थितियों की अभिव्यक्ति हुई है। नवगीतकारों ने छायावादी गीतकारों के समान अपनी कृष्णार्वा की अभिव्यक्ति आध्यात्मिक रूप में देकर मानवीय घरातल पर किया है। नवगीतकारों की दृष्टि में प्रेम कोई असामाजिक हेय अवस्थ प्रवृत्ति नहीं है। अतः उसके प्रणय भाव में गोपनीयता एवं सक्तिता की सूक्ष्मता के बजाय आन्तरिक सहजता की स्विकारा है। इसलिए नवगीतकारों के गीत में प्रेम की अभिव्यक्ति मिलती है :

“ वाँलों की शास देह का तना
ऊपर से महूँ का टफना
मेरे हाथों हल्दी सी लगकर
छूटीं मत प्रान । पास में रखकर
फरती है चाँद किरन फर फर फर ॥ ” १

नवगीतकारों के गीत में आध्यात्मिक प्रेम के स्थान पर भासित प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है :

१- देवेन्द्र कुमार- धर्मयुग १७ नवम्बर १९६३

“ वफा में उगती गीरे तन की भाँकी री
 मैं तो बड़ भागिन लगती थी की बाँकी री ,
 एक मधुर हवि मैं भी मन में बाँकी री ,
 रंग उड़े जाते वभिषार के मलिनियाँ
 एक हार गुँथ दे संवार के मलिनियाँ ॥ ” १

नवगीतों में जहाँ प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है वहीं पर प्राचीन मान्यताओं के बाधार पर होने वाले व्याह की अमान्य घोषित करके स्वतन्त्र प्रेम की महत्व दिया है :

भाँवर या पूजा की वेदी या व्याह में
 क्यों ली चुके अपनी अपनी हम क्या करें ? ” २

अतः नवगीतकार व्याह के लोसलेपन के प्रतिवाङ्मोश अभिव्यक्त करते हुए स्वच्छन्द प्रेम की अभिव्यक्ति इस प्रकार से की है :

बीजों के कोने टूटे
 बातों के स्वर डूब गए
 हम कुछ खाना अधिक मिले
 मिलते मिलते ऊब गए ॥ ” ३

इस प्रकार नवगीतों में प्रेम के साथ साथ गृहस्थ के बोध का भी चित्रण देखा जा सकता है :

-
- १- डा० रवीन्द्र प्रमर- रवीन्द्र प्रमर के गीत पृ० ७६
 २- वीम प्रभाकर : पाँच जोड़ बाँधुरी पृ० १३२
 ३- सत्यमश्याम सिंह - धर्मयुग २६ जून १९६५

दो हथेलियाँ मिल कर
 फँसी हुई धान कूटती होगी
 झुड़ियाँ पुरानी जो
 किस्मत सी रोज फूटती होगी
 काँड़े में फँसे दो पाँवों सी
 याद तुम्हारी जाती । १

नवगीतकार जहाँ प्रेम की अभिव्यक्ति करता है वहीं
 अपनी परिस्थितियों से बंधे होने के कारण अपनी को सीमा में बंधा हुआ
 पाता है, इसलिए वह स्पष्ट प्रेम के स्थान पर केवल अपनी प्रिया मान के
 दर्शन से प्रसन्न होना चाहता है :

तन के मन के वर्पण
 को प्रीति के दर्पण
 एक दाँव हारा तुम्हें
 एक ज़म बीत गया ।। २

नवगीतों में चित्रित निराशा, अस्थिरता, द्वन्द्व तथा
संशय की अभिव्यक्ति

आधुनिक समाज औद्योगिक सभ्यता और वैज्ञानिक प्रभाव
 से निर्मित है। इसलिए आधुनिक जीवन में एक और सांस्कृतिक एवं नैतिक
 मूल्यों के प्रति संकट का जन्म दे रही है तो दूसरी ओर वह जीवन के

१- नईम - धर्म युग १६ मई १९६८

२- डा० रवीन्द्र प्रमर - रवीन्द्र प्रमर के गीत पृ० २५

निष्पीघात्मक मूल्यों की प्रणय । इसलिये नगरीय परिस्थितियों ने मनुष्य के भीतर द्वन्द्व, संदिग्ध, निराशा और अनास्था को जन्म दिया है। नवगीतों में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। आधुनिक समाज में प्राचीन मूल्यों की विघटन की प्रक्रिया का चित्रण वीर सबसेना के गीतों में इस रूप में हुआ है :

बूढ़े वादशर्ी के

बसे हुए वाग्रय गृह

सड़कों पर घूम रही

निर्वसना वास्था ॥ * १

इसी प्रकार नीलम सिंह की रचना " पाँच जोड़ बाँसुरी " में चित्रित अनास्था और निराशा की अभिव्यक्ति इस रूप में हुई है :

लोलें तो कौन सी दिशा लोलि

इतने सारे सवाल एक साथ

किसकी छोड़ें किसका हो लें । * २

इसी प्रकार संशय की दोर से बंधा हुआ गीतकार अपने ही द्वन्द्व में किस प्रकार से उत्पन्न रहा है :

" रात जाति भूँदकर जगी है

एक एक ही लगन लगी है

- नयन बर्तू

- पवन बर्तू

- गगन बर्तू -- कि क्या कहें ? । ** ३

१- वीर सबसेना - दिसम्बर- जनवरी १९६७ लहर

२- नीलम सिंह - पाँच जोड़ बाँसुरी पृ० १५२

३- राजेन्द्र प्रसाद सिंह - कंकन - जुलाई ६६

नवगीतों में जहाँ वाधुनिक युग की परिस्थिति और परिवेश का चित्रण हुआ है, वहीं वाधुनिकता की टूटती हुई मानवीय चेतनाओं की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है :

“ बिसरा हुआ हूँ मैं
संस्कार पक्षों में
रिस रिस कर बहते घाव
ऊपर की यात्रा को भीतर हुँवाते हैं। ” १

इस प्रकार नवगीत अधिक यथार्थ की भूमि पर उतरी है। वहीं नवगीतों में वाधुनिक जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है।

नवगीतों में चित्रित अस्तित्ववादी भावना

द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्व में अस्तित्व बोध की भावना बहुत तेजी से बढ़ी। युद्ध के बाद मनुष्य को अपनी अस्तित्व ही संकट ग्रस्त प्रतीत होने लगा। इसलिए इसकी अभिव्यक्ति गीतकारों ने गीतों के माध्यम से करने लगे। जैसे- डा० शम्भुनाथ सिंह के गीतों में इस रूप में है :

“ जीवन का पुत न कहीं टूट जाये
यह बाँधी
जिसने अस्तित्व को ढिगाया है
वतिथि है
मत रौको
वायी है
स्वागत । ” २

१- डा० रामगोपाल शर्मा विनोद - जहाँ मेरा गेय पृ० ७४

२- डा० शम्भुनाथ सिंह - माध्यम (कथय) पृ० ३४

दूसरे गीतकार डा० रवीन्द्र प्रमर के गीतों में अस्तित्व बोध की अभिव्यक्ति इस प्रकार है :

वैसे ही वो स्नेह सिन्धु
मेरी जीवन धारा तुमसे ली जाय
मे निचोड़ दूँ बूँद बूँद अस्तित्व वहम् का
मेरा कण कण तुम्हें समर्पण ॥ १

नवगीतों में चित्रित अहं, पाणमगुस्ता और मृत्युबोध

व्यक्तिवादी दर्शन में अस्तित्ववाद का अपना महत्व है इसके अन्तर्गत ही अहं की अभिव्यक्ति हुई है। आधुनिक समाज में अहं की अभिव्यक्ति सामाजिक विषमताओं, स्व भौतिक परिवेश के कारण ही उत्पन्न हुई है। आधुनिक काल का कवि और गीतकार अपने अहं को स्पष्ट रूप में काव्य में चित्रित करते हैं। व्यक्तिवादी गीतकारों की रचनाओं में अहंवाद के कारण ही पराजयवादी, नियतिवादी पाणवादी और मृत्यु बोध की अभिव्यक्ति मिलती है- नवगीतकार डा० रामगोपाल शर्मा दिनेश

१- डा० रवीन्द्र प्रमर के गीत पृ० ६६

२- “ अज्ञेय में अहं बोध इसी कारण उग्र हो उठा था क्योंकि वह सोचते थे कि समाज व्यवस्था और परम्परा से टूटकर भी व्यक्ति अपने अस्तित्व का मली भाँति निवारण कर सकता है। ”

- शैल सिन्हा - प्रयोगवाद और अज्ञेय पृ० ५०

के गीतों में उन्हें की अभिव्यक्ति का रूप में देली जा सकती है :

‘ अभी तो उन्हें जीता है
नगर की भीड़ में
लोया नहीं है
और कन्धी पर किसी के
हार कर लोया नहीं है। ” १

इसी प्रकार से अन्य गीतकारों जैसे- बालस्वरूप राही,
वीरेन्द्र भिषा वादि में व्यक्तिवादी चेतना के अन्तर्गत ही नवगीतकारों की
रचनाओं में दाण भंगुरता और दाण के महत्व की स्वीकार किया गया
है। वाधुनिक युग की व्यस्त में मनुष्य अपनी जीवन के प्रत्येक दाण का भोग
करना चाहता है, इसलिए वह दाण के महत्व की स्वीकार करता है :

‘ मेरा वह
किन्तु वह इतना जिया
उस एक दाण में
वैद से विज्ञान तक के
सुख समर्पित हो गए सब
उस निराकृत के चरण में । ” २

अतः नवगीतकारों की रचनाओं में दाण के महत्व
की स्वीकार किया गया है। जैसे- नरेश सक्सेना की रचना में अभिव्यक्ति

१- उन्हें मेरा गेय पृ० १२

२- बाल स्वरूप राही- जो नितान्त मेरी है पृ० ६१

३-डा० रामगोपाल शर्मा दिनेश - उन्हें मेरा गेय पृ० १४

जाण बोध का महत्त्व इस रूप में है :

“ उबटे उबटे शब्द कि जिनके
 भूठे सच्चे बोध
 बीती बातें बिसरा देने
 के कच्चे अनुरोध
 तलबों के नीचे जैसे गीली काई चलती है
 वृत्त से नीचे उतरे हमारी परछाई चलती है। ” १

इसी प्रकार से आधुनिक गीतकारों की रचनाओं में
 मृत्युबोध को भी स्वीकार किया गया है। जैसे - बाल स्वरूप राही-

मृत्यु किसी जीवन का अन्तिम अन्त नहीं
 साथ देह के प्राण नहीं मर पाते हैं । ” २

इसी प्रकार नीरज का मत यह है कि प्रेम जीवन की
 गति है और जीवित रहने के लिए विश्राम की आवश्यकता है। जब एक का
 जाण मर के लिए सेज पर विश्राम करते हैं उसी का नाम है मृत्यु जिसे मैं
 (नीरज) यति कहते हैं :

“ जीवन बया माटी के तन में केवल गति भर देना
 और मृत्यु बया उस गति को ही जाण भर यति कर देना ।।३

१- नीरज सबसेना- उत्कर्ष - मार्च १९६५

२- जो नितान्त मेरी है पृ० ११

३- नीरज- प्राण गीत (दृष्टिकोण) पृ० ५५

वाज भी लोकप्रिय है। नयी कविता के बाद काव्य के क्षेत्र में बिसराव वा जाने के बाद भी नवगीत वाज भी लोकप्रिय है। वाधुनिक युग की सरस अभिव्यक्ति के लिए वाज भी नवगीत को माध्यम चुना जाता है। अतः नव-गीत वाधुनिक युग की सशक्त माध्यम होने के कारण वाज भी इसका विकास हो रहा है। वाज भी पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो कवि सम्मेलनों के माध्यम से गीतकार वाधुनिक युग की नवीनतम समस्याओं पर अपनी विचार प्रकट कर रहे हैं।

वाधुनिक युग में गीत ही ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा जनसाधारण को वाकर्णित किया जा सकता है, वाधुनिक युग की नवीन परिस्थितियाँ एवं नवीन चेतना का जागरण गीतों के माध्यम से किया जा सकता है। गीत जहाँ समाज को प्रभावित करता है, वहीं लोकगीतों के माध्यम से अपनी बात को जन साधारण तक पहुँचता है। अतः जनचिन्तितता, नवगीत, पर जनचिन्तितता का विशेष प्रभाव पड़ा है। नवगीतों में ताजगी और जन साधारण तक पहुँचने के लिए लोकगीतों का सहारा लेना पड़ा है। नव-गीतकारों ने लोक भाषा के स्थान पर लोक अनुभूति और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का सहारा लेकर अपने गीतों की रचना की। नई कविता और नवगीत दोनों ही जनचिन्तितता से प्रभावित हैं, लेकिन लोक धुनों की लोक-प्रियता ने नवगीत को अधिक महत्व दिया। जैसे प्रेम शंकर रघुवंशी का यह गीत :

“ नदिया में उतरा है चाँद
जन्हाइयों की जगिया सुली ॥ ” १

प्रेमशंकर रघुवंशी - अन्तराल (अंक ३) सितम्बर १९७४

नीरज के गीतों में वादमी की मौत अनिवार्य तत्त्व है।
लेकिन मनुष्य इस संसार में मजबूरी में जी रहा है :

वादमी है मौत से लाचार
जी रहा है इसलिए संसार । १

इस प्रकार नवगीतकारों ने मृत्यु को भी अपनी गीतों
का विषय बनाया है। अतः नवगीतों पर भी आधुनिक युगबोध और वैज्ञा-
निक सभ्यता से उत्पन्न अभाव, निराशावाँ, कृष्ठावाँ एवं आर्थिक विषम-
तावाँ आदि का चित्रण नवगीतों में हुआ है :

दे राशन के बूझ वालों की
अस्पताल में
टिकट ले रहे बीमारों को
और सो रहे फुट पार्थों के
उन बच्चों को । २

इसलिए नवगीत जहाँ आधुनिक समाज वैयक्तिक सम्बन्धों
और मानवीय चेतनाओं को अभिव्यक्ति करती है। नवगीत की भाषा सरल
और लयात्मक होने के कारण भी पाठकों को अधिक प्रभावित करती है।
नवगीत में लोक भाषा का प्रयोग होने के कारण जन साधारण को अपनी
और आकर्षित करती है।

नवगीत में इन सभी विशेषताओं के साथ साथ जन-
भावना को अभिव्यक्ति करने का सशक्त माध्यम होने के कारण नवगीत

१- नीरज- प्राण गीत (वादमी है मौत---) पृ० ४५

२- डा० रामगोपाल शर्मा दिनेश - कई घंटे गेय पृ० २३

इसी प्रकार शलभ जी राम सिंह का प्रस्तुत गीत
देखा जा सकता है :

“ काती से सन्तान लगी हो बीबी के हाथों में
थाली ।
कौन कहेगा घर है खाली । ” १

इसके अतिरिक्त रमेश रंज, रवीन्द्र प्रमर, ठाकुर प्रसाद
सिंह, हरीश भादानी, बालस्वरूप राही आदि ।

नवगीतकार के आलोचकों में डा० विजयेन्द्र स्नातक,
पं० विद्यानिवास मिश्र आदि नवगीत पर आलोचिता को मात्रकैशन मानते
हुए इसका विरोध किया है। बाल स्वरूप राही भी नवगीत में आलोचिता
के पदाधार नहीं है, “ बाज गीतों के नाम पर लोकगीतों के समकक्ष
नकली गीतों की रचना निरर्थक है, यदि लहरिया और बदरिया को फिर
से गीतों में स्थापित करना ही नवगीत है तो लहरिया और चुनरिया को
निष्कासित करने की क्या आवश्यकता थी । ” इन विरोधों के बाद भी
बाज भी लोक धुनों और आलोचिता पर आधारित नवगीत लिखे जा रहे हैं।

१- शलभश्रीराम सिंह- अन्तराल (वक्र २) अगस्त १९७४

२- हमराई कब बीराती है, सरसों कब फूलती है और धान के क्षेत्रों
में भूमि कब शस्य श्यामलता होती है, जिन्हें यह विदित नहीं है,
उन्हें गाँव में वास करने वाली भारत की आत्मा के गीत नहीं गाने
चाहिए । ”

- डा० विजयेन्द्र स्नातक- वातावन गीत वक्र अगस्त ६६ पृ० ५६

३- बालस्वरूप राही गीत (१) दिल्ली पृ० ४६

नवगीत की लोकप्रियता और वाधुनिक समाज की समस्याओं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रयुक्त माध्यम है। वाधुनिक काल में कविता के स्थान पर गीत का विकास तेजी से हो रहा है।

आज भी भारत के विभिन्न भाषाओं में गीतों का विकास हो रहा है। अतः नवगीत का पविष्य उज्ज्वल है, गीतों के माध्यम से गीतकार अपनी बात अधिक से अधिक लोगों तक कह सकता है। रेडियो और चल चित्रों के विकास हो जाने के बाद गीतों को भी अधिक महत्व प्राप्त हुआ है। इसलिए भी गीत वाधुनिक समाज का सजीव माध्यम है। आज भी गीतों के साथ साथ साहित्य में कविता सहज कविता, विचार कविता आदि विभिन्न नामों से भिन्न वाद चल रहे हैं, लेकिन गीतों का अपना अलग ही महत्व है। इस प्रकार वाधुनिक काल में कविता का विकास एक साथ ही विभिन्न ढंगों में हो रहा है, जिसे प्रतीत होता है। आज भी हिन्दी का काव्य विकासशील है।

उपसंहार

उपसंहार

वाधुनिक हिन्दी काव्य पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव पड़ा है। प्रत्येक युग का साहित्यकार नूतन समाज में रहता है, इसलिए वह सामाजिक घटनाओं से प्रेरणा लेकर साहित्य की रचना करता है।

१९ वीं शती के उत्तरार्ध में भारत में स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न किया जा रहा था। इसी समय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सफल शान्ति एवं द्वितीय महायुद्ध के प्रभाव ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। विश्व में एक ओर साम्राज्यवादी शक्तियाँ का जोर था, तो दूसरी ओर उनके विरोध में साम्यवादी शक्तियाँ का प्रभाव बढ़ रहा था। भारत में विदेशी शासन था, जिसका उद्देश्य भारतीय जनता का शोषण करना एवं अपनी शक्ति को येन केन प्रकारेण कायम रखा था। इसी समय भारतीय राजनीति पर गांधी जी द्वारा अधिष्ठात्मक रूप से विदेशी शासन का विरोध किये जाने का प्रभाव पड़ा। गांधी के नेतृत्व में अखिल भारतीय कांग्रेस की अफसस्ता ने भारतीय जनता को निराश किया।

सन् १९३६ के बाद देश में साम्यवादी चेतना का विकास होने लगा। पंडित जवाहर लाल नेहरू भी साम्यवादी चेतना से प्रभावित थे, जो कि फैयपुर के कांग्रेस अधिवेशन में इसका प्रभाव देखा जा सकता है। सन् १९३६ में प्रेमचन्द की व्यथना में प्रातिशील लेखक संघ का अधिवेशन लखनऊ में हुआ जिसमें प्रेमचन्द के अतिरिक्त सुमित्रानन्दन पन्त, डा० मुक्त राम वानन्द, सज्जाद जहीर आदि ने भाग लिया।

इस अधिष्ठान के बाद साहित्यिक प्रवृत्तियों में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। काव्य के क्षेत्र में सुप्रसिद्धानन्दन पन्त, गया प्रसाद शुक्ल, जेहन शर्मा उग्र, धुर्योक्त निपाठी निराशा आदि ने प्रातिशील कविता सिखी प्रारम्भ कर दिया, जिसके फलस्वरूप अन्य कवियों में डा० शिव मंगल सिंह सुमन, डा० राम विशास शर्मा और नागार्जुन आदि ने भी प्रातिशील काव्य लिखा।

प्रातिवादी आन्दोलन की मूल चेतना मार्क्स द्वारा प्रतिपादित दण्डात्मक भौतिकवाद पर आधारित है। इसलिए प्रातिवादी कवि समाज की मूल चेतना वर्ग व्यवस्था की स्वीकार करते हैं। इसलिए प्रातिवादी काव्य में समाज का अध्ययन वार्तिक दृष्टि से किया गया है। प्रातिवादी कवियों ने अपनी काव्य का विषय, शोषण, मजदूर, किसान और श्रमिकों जैसे समाज के उपेक्षित वर्गों को चुना है।

प्रातिवादी काव्य में वर्ग चेतना और वर्ग संघर्ष को भी महत्व दिया गया है। प्रातिवादी कवियों पर मार्क्सवाद के वर्ग संघर्ष का प्रभाव होने के कारण भारतीय समाज का विषय वर्ग चेतना एवं वर्ग संघर्ष के आधार पर प्रस्तुत किया है। प्रातिवादी युग में भी भारतीय समाज पर गांधीवादी सिद्धान्तों का प्रभाव रहा। भारतीय समाज में स्वतन्त्रता के लिए निरन्तर प्रयास होता रहा, इसका स्पष्ट प्रभाव काव्य पर देखा जा सकता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्त होने पर यूरोपियन समाज में कृष्ण, निराशा और संशय आदि का प्रभाव था। अतः इसकी अविव्यक्ति तत्कालीन यूरोपियन साहित्य में देती जा सकती है। इसी समय साहित्य के क्षेत्र में फ्रायड स्ट्रैट और युंग के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का

भी प्रभाव पड़ा। हिन्दी काव्य यूरोपियन साहित्य से प्रभावित होने के कारण ही प्रयोगवादी कवियों ने अपनी रचनाओं में कृष्ण निराशा संवास वादि की वाणी दी है।

हिन्दी का प्रयोगवादी युग प्रातिवादी युग के सामाजिक चेतना के विरोध में व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों को लेकर अवतरित हुआ है। अतः प्रयोगवादी कविता भारतीय समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत नहीं करती है, फिर भी प्रयोगवादी युग की प्रसृत घटनाओं का प्रभाव देखा जा सकता है। प्रयोगवादी युग में ही देश का विभाजन, तरणार्थी समस्या और गांधी हत्याकाण्ड जैसे तत्कालीन घटनाओं ने प्रयोगवादी कवियों को प्रभावित किया। अतः प्रयोगवादी काव्य में उनकी अभिव्यक्ति हुई है।

हिन्दी की नयी कविता स्वतन्त्रता के बाद भारतीय समाज में होनेवाली सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों की अभिव्यक्ति है। भारत की राजनीतिक स्वतन्त्रता के साथ ही देश में सामाजिक एवं वार्षिक परिवर्तन आया, जिसकी अभिव्यक्ति नई कविता में हुई है। द्वितीय युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सैनिक शक्तियों का प्रसार बढ़ा, इसका प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा। इसलिए हिन्दी कविता (हृत्स देश) वादि में देती जा सकती है।

नयी कविता में स्वतन्त्रता के बाद भारतीय समाज में होने वाली सामाजिक, वार्षिक एवं राजनीतिक घटनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। स्वतन्त्रता के बाद देश में चुनाव की महत्त्व दिया गया, जिसके फल-स्वरूप जनसाधारण का महत्त्व बढ़ गया। चुनाव जीतने एवं सत्ता प्राप्त करने के उद्देश्य से धन और जाति की महत्त्व दिया जाने लगा। नयी कविता में इनकी अभिव्यक्ति देती जा सकती है।

स्वतन्त्र भारत की वार्षिक स्थिति में प्रष्टाचार, बेरोजगारी और नेताओं द्वारा चुनाव में प्रयुक्त प्रष्ट तरीका का प्रयोग वादि की अभिव्यक्ति नयी कविता का विषय है। नई कविता में व्यंग्य के रूप में तत्कालीन समाज की राजनीतिक एवं वार्षिक स्थितियों का चित्रण हुआ है।

नवगीत का विकास नई कविता के बौद्धिक प्रभाव के कारण पाठकों से दूर हो जाने के कारण हुआ। नवगीत पुनः लोक जीवन से सम्पृक्त होने जाने के कारण इसका प्रचार और प्रसार बहुत तीव्र गति से हुआ। नवगीतकारों ने भी अपनी युग की प्रमुख घटनाओं की अभिव्यक्ति किया है। जैसे- काश्मीर पर पाकिस्तान युद्ध की अभिव्यक्ति, बाल कवि बेरागी, श्यामनन्दन पाण्डे वादि के गीतों में हुई है। राष्ट्रीय गीतकारों ने गांधी एवं गांधी हत्या की गीत का विषय चुना है। द्वितीय युद्ध के बाद के सामाजिक प्रभाव की गोपाबुद्धास नीरज और धर्मवीर भारती वादि के गीतों में देखा जा सकता है।

आज भी यथार्थवादी घटनाओं एवं सामाजिक घटनाओं की अभिव्यक्ति साहित्य में हुई है। जैसे- धूमिल की रचना संसद से सड़क तक, डा० शिव मंगल सिंह सुमन (मिट्टी की बारात), सीताधर जुगुही, जुगमिन्दर तायल वादि की रचनाओं में वाधुनिक समाज की यथार्थ घटनाओं एवं सामाजिक घटनाओं की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।

वक्तः यह कहा जा सकता है कि साहित्य और समाज का निकटतम सम्बन्ध होने के कारण ही समाज की प्रमुख घटनाओं की अभिव्यक्ति कवि अपनी लेखनी के माध्यम से करता है। इसलिए साहित्य की संज्ञा समाज होती है। समाज में होने वाले परिवर्तनों एवं घटनाओं की कवि अपनी रचना का विषय बनाकर जनता के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

वन्त में कहा जा सकता है कि काव्य ही समाज की अभिव्यक्ति है। साहित्य-सामाजिक चेतना के प्रभाव से साहित्यिक परिवर्तन आता है।

आज भी कृषिसमाज में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं की अभिव्यक्ति कर रही है। सामाजिक घटनाएँ ही कवि का विषय होती हैं जिस तेजी से समाज में परिवर्तन होगा, उसी गति से काव्य में परिवर्तन आयेगा। इस दृष्टि से साहित्य ही समाज का दर्पण है।

सहायक श्रेणी की सूची

चौथी श्रेणी

क्यावाल, केदारनाथ

..

..

कल नहीं रैन बीसते हैं
राकमस प्रकाशन, दिल्ली
युग की गंगा

राकमस प्रकाशन, दिल्ली

बी प्रस्तुत का

राकमस प्रकाशन, दिल्ली

१९५८

क्यावाल, भारतभूषण

सीमारे वात्म स्वीकृति

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

कस्क, उपेन्द्रनाथ

सकूँ पर डसे साये,

नीलाम प्रकाशन, कलकत्ताबाद,

प्रथम संस्करण, १९६०

कश्यप

वागिन के पार द्वार

भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी

१९६१

..

वरी बी कलण प्रामयी

भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी

प्रथम संस्करण, १९५६

..

हरी धास पर जण भर

प्राति प्रकाशन, दिल्ली

१९५६

अज्ञेय	हस्त्यसम्
..	हस्त्यसम् रावि हस्त ये
..	तीसरा सप्तक भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी तीसरा संस्करण १९६७
..	दूसरा सप्तक प्रगति प्रकाशन, दिल्ली द्वितीय संस्करण , १९५१
..	तारसप्तक भारतीय ज्ञानपीठ वाराणसी, १९६६
..	त्रिंशद्विंश
वैद्य, रामेश्वर शुक्ल	मधुलिता वन्दियन प्रेस, प्रयाग १९४२
वाचार्थ , नरेन्द्रदेव	राष्ट्रीयता वीर समाजवाद ज्ञानमण्डल प्रकाशन, काशी सं० २००६
शुक्ल , नारायण	चक्रवर्त राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९५६

गुप्त, शिवारामसरण

वाट्रा

साहित्य सदन, चिरगाव भागिरी

१९८४ वि०

गुप्त, मन्मथनाथ

राष्ट्रीय बाल्योत्सव का इतिहास

किताब मल्ल, झाडाबाद

प्रथम संस्करण

चतुर्वेदी, मास्तनाथ

वाधुनिक कवि - ६

बीरान, शिवदान सिंह तथा

गोपालकृष्ण कौल

काव्यधारा, पुस्तक पत्रिका,

वात्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली,

१९५५

फैत, हनु

बीसठ कविताएँ

ज्ञानलोकोदय ग्रंथमाला

प्रथम सं० १९६४

भासा, दुर्गाप्रसाद (डा०)

प्रगतिशील हिन्दी कविता,

ग्रन्थम, कानपुर

प्रथम संस्करण १९६७

वरुण, रामेश्वरनाथ लण्डेसवाल
(डा०)

वाधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम वीर
सौंदर्य

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

१९५८

दिनकर , रामधारी सिंह

नीतिकुसुम

उदयावत प्रकाशन, पटना

..

कुरुक्षेत्र

उदयावत प्रकाशन, पटना

..

कुरुक्षेत्र

उदयावत प्रकाशन, पटना

..

विप्लव

उदयावत प्रकाशन, पटना

..

हृत्कार

उदयावत प्रकाशन, पटना

दसवां संस्करण

दिनेश, रामणीपास शर्मा

वर्ष मेरा गेय

साहित्य विज्ञान प्रकाशन, उदयपुर

प्रथम संस्करण १९६६

दिनेश, देवराज

भारत माँ की लोरी,

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

द्विवेदी, सीतलाल

जयभारत जय

इंडियन प्रेस लि० स्टाटावाड

१९५९

दिवेदी, सोहनसाह

भैरवी

इण्डियन प्रेस लि०, अलाहाबाद

१९५१

दुष्यन्त कुमार

सूर्य का स्वागत

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

दुष्यन्त कुमार

बाबाजी के धीरे

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

देवराज

धरती वीर स्वर्ग

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

१९५४

देवराज

इतिहास वीर पुरुष

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,

काशी

पन्त, सुमित्रानन्दन

स्वर्णकिरण

भारती मण्डार, अलाहाबाद

प्रथम संस्करण २००४ वि०

..

ग्राम्या

सीकभारती अलाहाबाद

अष्टम संस्करण, १९६७

..

रक्तसिंहर

भारती मण्डार, अलाहाबाद

२००८ वि०

पन्ति, सुमित्रानन्दन

युगवाणी

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

१९६६

..

युगान्त

लोकभास्वी प्रकाशन, झांझाबाद

१९६८

..

कला और संस्कृति

किताब महल, झांझाबाद

प्रथम संस्करण १९६५

..

शिल्प और दर्शन

रामनारायण लाल बेनीमाधव

झांझाबाद

सं० १९६९

पर्वतीय, लीलाधर शर्मा

स्वतन्त्रता की पूर्ण सन्ध्या

वाणी प्रकाशन, झांझाबाद

२०१४

प्रेमचन्द

प्रेमाश्रय

सरस्वती प्रेस, वाराणसी

सं० १९२९

बच्चन, हरिवंशराय

धारा के कंधर उधर

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

तृतीय संस्करण, १९६६

बच्चन, हरिवंश राय

..

भट्ट, उदयशंकर

भास्ती, धर्मवीर

..

..

..

सादी के फूल

भास्तीस भण्डार, प्रयाग

प्रथम संस्करण १९३६

बुद्ध और नाचघर

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

प्रथम संस्करण १९५८

पूजापर

वात्पाराय एण्ड सन्स, दिल्ली

प्रथम संस्करण १९६३

कनु प्रिया

ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी

१९६५

ठण्डा लीला

भास्तीय ज्ञानपीठ, काशी

सन् १९७६

सात गीत वर्ण

भास्तीय ज्ञानपीठ, काशी

१९५६

बन्धा युग

किताब मकस, अलाहाबाद

१९७६

प्रमर, खीन्द्र (डा०)

सम्कालीन हिन्दी कविता

राजेश प्रकाशन, दिल्ली

१९७२

मदान, इन्द्रनाथ

वाधुनिक कविता का मूल्यांकन

हिन्दी भवन, लखनऊ

प्र० सं० १९६२

..

कविता कविता

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

१९६७

माधवी, प्रभाकर

अनुशासना

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी

१९५६

..

मेघ

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी

१९६७

मानव, विश्वम्भर (डा०)

सुमित्रानन्दन पन्त

माधुर, गिरिजाकुमार

शिता पेंस चम्कीले

साहित्य भवन प्रा० लि०, लखनऊ

प्रथम संस्करण, १९६९

..

धूम के धान

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

१९५५

प्रि. कृष्णबिहारी (डा०)

वाधुनिक सामाजिक आन्दोलन और
वाधुनिक साहित्य
दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७२

प्रि. शिवकुमार (डा०)

नया हिन्दी काव्य
अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर
१९६२

प्रि. श्यामसुन्दर (डा०)

वास्तववाद और द्वितीय समीप
हिन्दी साहित्य
विद्या प्रकाशन मैदिर, दिल्ली
१९७९

प्रि. रामवरुण

हिन्दी की लोकप्रिय हास्य कविताएँ
दिल्ली

प्रि. वीरेन्द्र

सैलानी पैसा
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी
प्र० सं० १९६३

..

वधिराम बत्त मधुबन्ती
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,
वाराणसी

..

सफ़ेद चिट्ठिया
राजकपल प्रकाशन, दिल्ली

मिहिरिन्द, जगन्नाथ प्रसाद

मुक्तिबोध

मेखता, नरेश

नगेन्द्र (डा०)

..

नवीन, वासुदेव शर्मा

नागार्जुन

..

..

धरती के बीस

वात्स्याराम एण्ड सन्स, दिल्ली

बाँद का मुँह टेढ़ा है

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी

१९७९

संशय की रात

हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई

१९६२

वास्तविक हिन्दी कविता की प्रमुख

प्रतियाँ

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

विचार और विवेक

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

१९५५

हम विद्यपायी काम के

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

१९६५

प्यासी पथरायी बहिन

मुनधारा

सत रंग फूलोवाली

यात्री प्रकाशन, कलकत्ता

१९५६

निराशा, भूयंकान्त बिपाठी

नये पौ

हिन्दुस्तानी स्कैडमी, अलाहाबाद

प्रथम संस्करण

१९४६

..

आफिका

लोकभारती, अलाहाबाद

द्वि० सं० २००५

..

कुरुमुत्ता

किताबमहल, अलाहाबाद

१९५५

..

गीतिका

भारती मण्डार, अलाहाबाद

८ वां संस्करण २०२३

..

परिपक्ष

गंगा ग्रंथागार, लखनऊ

१९५४

नेहरू, जवाहरलाल

मेरी कहानी

सस्ता साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

१९४८

नरेन्द्र देव(डा०)

प्रयोगवाद

कुसुमधन प्रकाशन, कानपुर

१९६४

रणवीर (डा०)

हिन्दी की प्रगतिशील कविता
हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली
१९७९

रघुवीर (डा०)

साहित्य का नया परिचय
भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी
१९६३

राहुल सांकृत्यायन

भागो नहीं दुनिया की बदल दी
किताब महल, स्लाहाबाद

राकेश , भगीरथ

चीन की चुनौती,
दिल्ली

रमिय राघव

वज्रय सप्पहर
सोशलिस्ट लिटरेचर पब्लिशिंग क०
बागरा -
१९४४

..

प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड
बागरा
१९५४

वर्मा, भगवतीचरण

मानव
विशाल भारत बुक डिप०, स्लाहाबाद
१९४८

वर्मा, धीरेन्द्र कुमार (डा०)

हिन्दी साहित्य कीर्ति, भाग १
ज्ञानमण्डल, काशी

वर्मा, सत्प्रीतान्त (डा०)

नयी कविता के नये प्रतिमान
भारतीय प्रेस प्रकाशन, स्लाहाबाद
२०१४

वर्मा, जोश्वर

हिन्दी काव्य में पाक्सवादी चेतना
ग्रंथम, कानपुर
प्रथम संस्करण १९७४

वार्धाय, सत्प्रीतान्त (डा०)

द्वितीय महायुद्ध के हिन्दी साहित्य
का इतिहास,
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
१९७३

विजयबन्धु

देवी
प्रगतिशील प्रकाशन, दिल्ली
१९६०

सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल

गर्म हवाएं
राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
१९६६

..

सिंह, कृष्णपाल (डा०)

काठ की घंटियाँ

हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना
पाण्डुलिपि प्रकाशन, दिल्ली
प्रथम संस्करण १९७६

सिंह, नामवर (डा०)

वाधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य
प्रवृत्तियाँ,
स्ताहाबाद,

१९६८

..

इतिहास और आलोचना
नया साहित्य प्रकाशन, स्ताहाबाद
१९६२

..

कविता के नये प्रतिमान
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
१९७४

सिंह, मेकुलता (डा०)

हिन्दी उपन्यास में मध्य वर्ग
नई दिल्ली

१९७९

सिंह, रामनाथ (डा०)

मूल्य और उपलब्धि
मीतीलाल बनासीदास, वाराणसी
१९६०

सिंह, रामेश्वर बहादुर

कुछ और कवितारें
दिल्ली

प्रथम संस्करण १९६९

सिन्हा, रीत

प्रयोगवाद और तथेय

सिन्हा, शान्ता

समानान्तर सुने
दिल्ली

१९५८

सीतारमय्या , बी० पट्टाभि(डा०) कश्मिर का इतिहास भाग २
सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
१९५८

सुमन, शिवमंगल सिंह पर कवि मरी नहीं
वात्पाराम एण्ड सन्स, दिल्ली
१९६७

.. प्रलय युग
वात्पाराम एण्ड सन्स, दिल्ली
१९६६

.. विश्वास बढ़ता ही गया
वात्पाराम एण्ड सन्स, दिल्ली
दि० सं० १९६७

सीमि , स्वयं प्रकाश उपाध्याय प्रातिवाद
लोकयुक्त पुस्तकालय सदन
रतनाम

सर्मा, रामविलास (डा०) रूप तरंग
विनोद पुस्तक मंदिर, कागरा
१९५६

सर्मा, विनयमीरन साहित्य नया और पुराना

सर्मा, हरिचरण (डा०)

नयी कविता का मूल्यांकन :
परम्परा और प्रगति की भूमिका
काशा प्रकाशन गृह, दिल्ली
१९७२

सर्मा, हरदत्त सात (डा०)

हिन्दी साहित्य का वृक्ष इतिहास
काशी नागरी प्रचारिणी सभा,
काशी, २०२७ वि०

श्रीकान्त

मायादर्पण
भारतीय ज्ञानपीठ काशी
प्र० संस्करण १९६७

शिवदी, रामप्रसाद (डा०)

प्रगतिवादी समीक्षा
कानपुर
१९६४

वीवी की सहायक पुस्तकें

वीवरस्ट्रीट एण्ड विन्डमिलर	कम्युनिज्म इन इण्डिया इंग्लिश वाफ कलेक्शन : मुद्रणकार बहमद नेशनल बुक एजेंसीज लि० कलकत्ता १९५६
कलिनच, दुर्गादास	इण्डिया : कर्ज टू नेहरू एण्ड वाफटर, सेंट जेम्स प्रेस, १९६६
बीफ्ला, प्रेम	द अनसर्टेन इण्डिया रशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई १९६८
दत्त, वार० पी०	इण्डिया टू डे पिलीप बीस फीणा कलकत्ता १९७०
नेहरू, जवाहरलाल	द डिस्कवरी वाफ इण्डिया दिस्ती १९६६
देसाई, ए० वार०	सोशल कैग्राउण्ड वाफ इण्डियन नेशन लिज्म, रशिया पब्लिशिंग हाउस, दिस्ती

पत्र- पत्रिकाएं

अन्तरास- ४

कैन

बालीचना - नामवर सिंह (सं०) , दिल्ली

उत्कर्ष

गीत

धर्मयुग- धर्मवीर भारती , बम्बई

लहर , प्रकाश जैन, जयपूर

वातायन

सरस्वती

साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिल्ली

हंस, अलाहाबाद